शिक्षक की कलम से
भाग–5

# सफर अणुव्रत संकल्पों का

(अणुव्रत कविता, कहानी, नाटक संकलन)

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
नई दिल्ली

# अनुक्रमणिका
## कविता


| क्रम संख्या | शीर्षक | लेखक/लेखिका का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | हिंसा से कौन महान हुआ ? | मनीष कुमार चतुर्वेदी | |
| 2. | एक कोशिश, एक उम्मीद | पूजा तिवारी | |
| 3. | होगी धरती स्वर्ग समान | बी. विजयलक्ष्मी | |
| 4. | अहिंसक समाज | ममता सिंह | |
| 5. | भारत हूं मैं | राजेन्द्र कुमार एस. गुप्ता | |
| 6. | बरामदे की धूप | रीमा जोशी | |
| 7. | नारी–युग | विद्या तिवारी | |
| 8. | धरती देवों की | स्मिता जोशी | |
| 9. | समझ सकें तो समझें | मनीषा बर्थवाल | |
| 10. | वक्त की मांग | संगीता | |
| 11. | तम को दूर भगाएं | तुलसी राम सैनी | |
| 12. | प्रश्नों का हल कैसे पाओगे ? | नलिनी सीताराम अय्यर | |
| 13. | बेटियां | सुधा सिंह चावड़ा | |
| 14. | नया सवेरा | दीपाली सिंह सोलंकी | |
| 15. | प्रेम का दीप जलाये जा | सुनील कुमार पाण्डेय | |
| 16. | अहिंसा का पावन पथ | सुनील शर्मा | |
| 17. | भगवन ! कुछ ऐसा हो | अरविंद कुमार शर्मा | |
| 18. | मन की बात | लव कुमार | |
| 19. | ...केवल्य जब साकार हो | पाण्डेय ऋषिकेश 'अनन्य' | |
| 20. | नारी–मन | मीनू शर्मा | |
| 21. | नवल आलोक तक | बिंदू कृष्णकांत पंचोली | |
| 22. | आत्म–संयम | प्रकृति दीक्षित | |
| 23. | सहमी–सहमी सी हंसी | दीपा जैन | |
| 24. | अणुव्रत है जीवन का सार | वंदना शर्मा | |
| 25. | एकता के गीत गाओ | आरती अरविन्द असावा | |
| 26. | अणुव्रती हैं हम | कुसुम शर्मा | |
| 27. | मिलें हाथ से हाथ | सुभाष कुमार | |
| 28. | कोमल अंकुर | कौशलेन्द्र गोस्वामी | |
| 29. | गीत गाते चलो | विक्रम प्रसाद गौड़ 'रसिक' | |
| 30. | फूल की दास्तान | गोकुल बी. क्षत्रिय | |
| 31. | अनमोल देन | विपिन शर्मा | |
| 32. | सबका हिन्दुस्तान है | सुनीता एस. उपाध्याय | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 33. | अंतस की यात्रा | रेनू त्रिवेदी | |

## कहानी

| क्रम संख्या | शीर्षक | लेखक/लेखिका का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | गोभी का फूल | कृष्णा बनर्जी | |
| 2. | नई सुबह | शकुंतला मित्तल | |
| 3. | निष्ठा | विनोद नायक | |
| 4. | संकुचित सोच | पूजा तिवारी | |
| 5. | हंसों का जोड़ा | ताम्रध्वज शर्मा | |
| 6. | सांध्य–वेला | वीना मेहरा | |
| 7. | आत्म–मंथन | शशिकला जैन | |
| 8. | रिश्तों की डोर | विजय लक्ष्मी जांगिड़ | |
| 9. | प्रयास | कविता कुशवाहा | |
| 10. | ख्वाब तेरे–मेरे | डॉ. भामा अग्रवाल | |
| 11. | तर्पण | डॉ. छाया चौरे | |
| 12. | संकल्प | प्रद्युम्न कुमार शर्मा | |
| 13. | मेरी सहेली | सरिता शर्मा | |
| 14. | सेवा | रीटा नायक | |
| 15. | मासूम देवदूत | राजकुमारी सिकरवार | |
| 16. | कुछ तो खास है | माया अंबुलकर | |

# नाटक

| क्रम संख्या | शीर्षक | लेखक/लेखिका का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | पुत्र–मोह | विनोद नायक | |
| 2. | दोषी कौन ? | रजनी कंसल | |
| 3. | सदाचार | अरुण कुमार वर्मा | |
| 4. | मजहब | रामेश्वर सिंह राजपुरोहित 'कनोडिया' | |
| 5. | जिम्मेदारी | मीनू शर्मा | |
| 6. | सांझ की धूप | डॉ. भामा अग्रवाल | |
| 7. | घरौंदा | ज्योति संजय बालापूरे | |
| 8. | वाल्मीकि | योगेश शर्मा | |
| 9. | हम साथ हैं तुम्हारे | मंजू बख्शी | |
| 10. | नरक का द्वार | कृष्णा बनर्जी | |
| 11. | इंसानियत | प्रमोद शेलर | |

अंतस की यात्रा

मैत्री, एकता और शांति
ये केवल शब्द नहीं
संवेदना है मानव के भीतर की,
इन्हीं मूल्यों पर ही टिका है
उसका संपूर्ण व्यक्तित्व और
अविरल आध्यात्मिक यात्रा का सुकून।
मैत्री का स्मरण होते ही
जेहन में कृष्ण और सुदामा
का चित्र उभर आता है,
प्रेम, श्रद्धा–विश्वास, आस्था
जैसे मधुर सम्बन्धों की पराकाष्ठा को
आज कौन निभा पाता है।

मैत्रीधरती की आकाश से,
धूप की छांव से,
सुबह की शाम से,
और प्रकृति की पुरुष से हो
तभी प्रेम और सामंजस्य के दीप जलते हैं
वरना एक–दूसरे के बिन सब अधूरे हैं।
मेरी मैत्री ऐसी हो
कृष्ण–सुदामा जैसी हो,
जो राजा और रंक का
भगवान और भक्त का
भेद मिटा दे।

एकता हमें जीवन का पाठ पढ़ाती है,
प्रत्येक प्राणी को वात्सल्यपूर्वक रहना सिखाती है।
प्रकृति के पांचों तत्व एक हैं
क्योंकि पांचों मिलकर ही जिन्दगी का नव
निर्माण करते हैं।
एकता की मिसाल मैं क्या दूं ?
जब मेरा वजूद ही परमात्मा और

प्रकृति की
एकता के आधार–स्तम्भ
पर टिका है।
वाचा–मनसा–कर्मणा जब एकता
मेरे विचारों में होगी
तो मेरे व्यक्तित्व में परिलक्षित होगी
और फिर परिवार, समाज, देश और दुनिया
को स्वयं ही एक सूत्र में बांध देगी।
शांति कोई शब्द नहीं
एक अहसास है मौन की गूंज का
जो हमारे अंतस को एक गहन
परमानन्द सुकून से भर दे
जहां कोई हलचल न हो,
विचारों की श्रृंखला पर पूर्ण विराम लग जाये
जहां मन की चचंलता और
मस्तिष्क की सक्रियता को विराम मिले।
शब्द शून्य हो जायें।

महात्मा बुद्ध जैसे परम योगी ने
अपने स्व की खोज में
अलौकिक आनन्द प्राप्त करते हुए
शान्ति–धाम का मार्ग प्रशस्त किया
और मानव जीवन को कष्ट–पीड़ा
और दुर्व्यसनों के दलदल से
निकाल दिया व अथाह शांति के महासागर
परमात्मा के चरण–कमलों में
विश्राम की अनुभूति कराई।

मेरे अतंस की यात्रा ही
आध्यात्मिकता है
जब मैंने ईश्वर को समझने का
प्रयास किया तो मैं हताश हो गया।
तब जाना वह तो समझ से परे है
फिर मैंने उसी ईश्वर को एक
बच्चे की मुस्कान में,
राजगीर की थकान में
मां की ममता और पिता के वात्सल में,
मित्र के स्नेह और प्रियतम के नेह में,
सूर्य की आभा में,
चांद की शीतलता में,

शीतल जल की मिठास में,
धरती के आंचल में,
गुरु के चरणों में देखा तो जाना
वह मेरे ही भीतर निवास करता है।

रेनू त्रिवेदी
टैगोर इंटरनेशनल स्कूल,
ईस्ट ऑफ कैलाश, दिल्ली

एक कोशिश, एक उम्मीद

आओ ! हाथ बढाएं रोकने को
जो गलत हो रहा है।
जगायं उसे नींद से,
जहां जमीर सो रहा है।
बड़ी मुश्किल और जतन से
यह आजाद देश मिला है हमें।
सजाएं–सवारें–निखारें जो मिला है हमें।
न बैर रखे न ईर्ष्या,
किसी से कोई दुश्मनी,
बस मित्रता हो, प्रेम हो
और अपने पन की रौशनी।

करे शुरुआत अपने आप से,
घर से और समाज से,
दिखा दें दुनिया को हम भी
कम नहीं किसी लिहाज से।
नहीं भूल सकते अपने देश के
वीरों के बलिदानों को,
दिखाना होगा सही रास्ता
भटके हुए नादानों को।
न भूल जाना इसे पढ़कर
कि यह बस एक रचना है,
यह एक कोशिश है, उम्मीद है,
मेरे सच्चे अहिंसक समाज की सरंचना है।

पूजा तिवारी

पीपल्स पब्लिक स्कूल,
भानपुर, भोपाल,
मध्य प्रदेश

## होगी धरती स्वर्ग समान

निर्माण करें हम
ऐसा समाज जो हिंसा से परे हो,
फिर–फिर मिले हमें बुद्ध देव की शांति भावना।
कभी न उतरें हम
नैतिकता के स्तर से,
हर पल दिखाएं, हम स्वयं को अपलंक
घटाते जाना है, भिन्नता को बीच से हमारे।
कोई धर्म ही नहीं होता,
हिंसावादियों का कभी।

फैली हुई है अशांति
देश के कोने–कोने में।
पढ़ने हैं,
हमें बहुत सारे नैतिकता के पाठ,
रखना है आचरण में हर पाठ के सार को।
रखकर भरोसा चलते रहें
हम आजीवन
जो मिलना है मिल जायेगा।
आने पर वक्त की सही घड़ी फूल खिल जायेंगे
नव–जीवन रूपी बगीचे के।
लड़ना है हमें अपनी ही कमजोरियों से,
हमें हर पल आध्यात्मिकता
का राहगीर बनना है।
हमें उस चलते पथ पर

प्रतिष्ठा कायम करनी है
नैतिकता की हरदम।

हमें नहीं देखनी है व्यक्ति की जाति
गोरा हो या काला हो।
हमें इससे क्या वास्ता,
हमें नहीं खड़ी करनी
संप्रदाय की दीवारें।
मानवता ही हम सबका एकमात्र परिचय है।
मैत्री जो हमें जोड़ती
ढेर सारे लोगों से।

नैतिकता को रखना है शिक्षा में एक अंग–सा,
बगैर नैतिकता के
मनुष्य का कोई मूल्य ही नहीं
सीखेगा जब इंसान प्यार की भावना,
होगी धरती स्वर्ग समान।

बी. विजयलक्ष्मी
श्री वेंकटेश्वरा बाल कुटीर
श्यामला नगर, गुंटूर,
आंध्र प्रदेश

अहिंसक समाज

"ऋजुता, उदारता और शुचिता,
समाज का हो प्रत्यक्ष दर्पण,
अन्तर्दृष्टि एवं आध्यात्मिकता से
परिपूर्ण हो हर घर आंगन।
दौर्बल्य, दारिद्रय और रुदन,
हिंसा का है जो मुख्य कारण।
वैराग्य की अखण्ड अलख जगायें,
बुराइयों का हो आत्म–समर्पण।
उठो, जागो हे वीर्यवान, तेजस्वी जन,
आशायें हैं बहुत, इस नवोदित पीढ़ी से,
जिनका एक सतत् प्रयास और आह्वान
अहिंसक समाज का कर सकता निर्माण।
पुनर्युवा उज्ज्वल भारत हो,
शांति, गौरव एवं वैभव से प्रदीप्त,
मगलमयी स्वर हो
पुनः प्रतिष्ठा हो उद्दीप्त।

ममता सिंह
श्री सनातन धर्म सरस्वती बालिका
इंटर कॉलेज,
118/267, कौशलपुरी, कानपुर
उत्तर प्रदेश

## भारत हूं मैं

निर्जन पथ पर, निरुद्देश्य,
एकाकी चला जा रहा था।
आखिर, मैंने पूछ ही लिया,
हो किन स्मृतियों में गुम,
हे पथिक, कौन हो तुम ?
ना जाने यह सूरत कुछ
जानी पहचानी लगती है।
अपरिचित हो, पर तुमसे कुछ
प्रीत पुरानी लगती है।
ठिठका, मुखरित हुआ
मन में कुछ अवसाद लिए
प्रत्युत्तर में टीस उठी
अनुत्तरित विषाद लिये।

स्वजनों के ही मध्य तिरस्कृत
बीता हुआ समय हूं।
खुद से हूं अनजान बटोही,
मैं क्या तुझको परिचय दूं।
राम, कृष्ण की जन्मस्थली,
बोली हूं मैं ऋषियों की।
पर, अब खंडहर ही ठौर मेरा
जर्जर, वृद्ध इमारत हूं मैं,
आर्यावर्त हूं,
भारत हूं मैं।

अपनों से ही जाति–धर्म के
कितने ही मैंने दंश सहे।
अडिग रहा पर सदियों से,
विषपान किया, विध्वंश सहे।
मैं मंदिर की पावन प्रतिध्वनि,
मस्जिद की इबारत हूं मैं,
आर्यावर्त हूं,
भारत हूं मैं।

मैं सुभाष की तरुणाई,
बापू का अपूर्ण स्वप्न हूं।
बंकिम का मैं वन्देमातरम्
टैगोर का जन–गण–मन हूं।
'मानस' में बसती तुलसी के
महावीर महाव्रत हूं मैं।
आर्यावर्त हूं,
भारत हूं मैं।

शांति–अहिंसा की परिपाटी,
निज शाख से ही टूटी है।
खो गयी है पहचान मेरी,
नैतिकता भी रूठी है।
अपनी इस विदीर्ण दशा पर,
अंतर्मन आहत हूं मैं।
आर्यावर्त हूं,
भारत हूं, मैं।

संकल्प करो क्या मेरा
खोया सम्मान दिला आगे ?
चहुं ओर शांति–संयम का
फिर से अलख जगाओगे ?
छल–हिंसा के दानव से,
हे पार्थ! पुनश्च विजित कर दो,
वसुधैव कुटुंबकम् का अणुव्रत ले,
फिर आज मुझे उपकृत कर दो।

राजेन्द्र कुमार एस. गुप्ता
आर.बी.टी. विद्यालय, डोम्बिवली (पूर्व)
जिला : ठाणे, महाराष्ट्र

बरामदे की धूप

एक दिन बरामदे में बैठे
सुन रही थी कुछ
प्रतिष्ठित लोगों के बोल
कुछ खास नहीं अपनी झूठी शान के
वे बजा रहे थे ढोल
ये छोटा है, वो है गरीब
पर उनका तो है अपना नसीब।

उस गरीब के ईमान को
वे पैसों से तोल रहे थे,
रिश्तों के तारों को कच्चे
धागों से जोड़ रहे थे।

मैंने देखा जो गंभीर मुद्रा लिए
शोक जता रहे हैं,
सभा के अंत में होंठ दबाए
खिल्ली उड़ा रहे हैं।
संवेदनहीनता की पराकाष्ठा
इन प्रतिष्ठित लोगों के
घरों से होती है,
वे समाज सेवा के परचम
लहराते हैं,
उनकी औरतें घर के कोने में
सिसक रही होती हैं।

21वीं सदी में भी इन्हें
जाति का अभिमान है,
वर्षों पिछड़ी सोच के बूते
चला रहे अपनी दुकान हैं।
गर वंश की प्रतिष्ठा
आगे लेकर जाना है,
कोख में पलने का हक
लड़का बनकर पाना है।

बरामदे की धूप जब
मेरे मुख तक आ गई,
प्रतिष्ठित लोगों की चर्चा
खत्म हुई।
मैं भी भीतर आ गई।
मन–मस्तिष्क का झंझावात
तब शुरू हुआ,
प्रतिष्ठा की कसौटी का
मापदंड आखिर कैसे तय हुआ ?

किन खोखले आदर्श
विचारों में जी रहे,

मानवता की अहमियत भुला
मौन बने होंठ सी रहे।
आत्म–मंथन, आत्म चिंतन
स्व–प्रेरणा की पुकार हो
लिंग भेद, जाति–भेद मिटा
इंसानियत की पहचान हो।

सद्भाव, समानता को बल मिले,
हिंसा मुक्त आदर समाज में
हर बेटी आगे बढ़े।
किताबों में नहीं इस सोच को
जो राष्ट्रहित में शामिल करे,
सही अर्थों में प्रतिष्ठित
होने का 'तमगा'
केवल उसे ही मिले।

रीमा जोशी
द स्वामीनारायण स्कूल,
245 पूर्व वर्धमान नगर, भंडारा रोड
नागपुर, महाराष्ट्र

नारी–युग

इक्कीसवीं सदी नारी युग है,

एक ओर नारी प्रत्येक क्षेत्र में
उन्नति के शिखरों को छू रही है,
दूसरी ओर किया जा रहा है
उसके साथ दुराचार,
यह कैसा नारी युग है ?

मां पाल–पोष कर जिस कन्या को बड़ा करती है,
सुसंस्कार देती है,
अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाती है,
वही कन्या किसी नरपिशाच की वासना
का शिकार बनती है,
दुराचार के बाद उसे बर्बरता से मृत्यु के
मुंह में धकेल दिया जाता है,
यह कैसा नारी युग है ?

दुराचार करने वाला भी तो
मां के ही गर्भ से
पैदा हुआ है।
मां! तुम क्यों नहीं बना पाई उसे सुसंस्कारी,
तुम बनाना तो उसे संस्कारवान ही चाहती थी,
देवमानव बनाना चाहती थी अपने पुत्र को,
किन्तु नरपिशाच बन गया वह।
वह नारी में मां, बहिन
पुत्री का रूप नहीं
देख सकता,
उसे नारी भोग्या प्रतीत होती है।
मां ! सम्भवतः तुम्हारे पालन–पोषण में ही
कहीं कमी रही है
या किसी दुरात्मा ने जन्म लिया
तुम्हारी कोख से।

जिस तरह कन्या–रत्न को तराशा तुमने,
उसी तरह पुत्ररत्न को भी तराशना था।
उसे हीरा बनाना था,
हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।
किन्तु तुम तो निश्चिंत हो गईं पुत्र को पाकर
और वह बन गया दानव।
जब माताएं जाग्रत होंगी,

पुत्र को सुपुत्र बनाने के लिए सकल्पित होंगी
तब बदलेगा हमारा समाज,
तब भारत–भूमि में पुनः देवमानव गढ़े जायेंगे,
यह धरा स्वर्ग कहलाएगी,
पुत्रियों की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा,
सत्य ही तब इक्कीसवीं सदी नारी सदी कहलाएगी।

विद्या तिवारी
कैम्पस स्कूल,
पंतनगर, उत्तराखण्ड

धरती देवों की

है देश मेरा भारत हर बात निराली है,
यह धरती है देवों की दिल जिसका सवाली है।

इस देश में बसते हैं कई जात–धर्म वाले,
मिलजुल के वो रहते हैं, सब देश के रखवाले।
हंसती हुई ईद यहां, खुशहाल दीवाली है....
यह धरती है देवों की दिल जिसका सवाली है।

हम सब से अमीर नहीं, पर इतना यकीं तो है,
दुख–सुख में सभी संग है, चाहे कोई भी मौसम है।
हम बांट के खाते हैं, चाहे रोटी आधी है...
यह धरती है देवों की दिल जिसका सवाली है।

हम खून–पसीने से सींचेंगे धरा अपनी,
नहीं साधन होंगे कम, नहीं होगी कोई कमी।
हम देंगे नई पहचान, यह कसम भी खा ली है...
यह धरती है देवों की दिल जिसका सवाली है।

स्मिता जोशी
टैगोर इन्टरनेशनल स्कूल,
मानसरोवर, जयपुर
राजस्थान

## समझ सकें तो समझें

बिखरा हुआ है लहू
घनघोर तन्हाई है,
मासूम चेहरों की हंसी
ये किसने चुराई है ?
बूढ़ी उम्मीद भरी आंखों को,
दरवाजे पर आस लगी निगाहों को,
ये कौन बेदम कर गया ?
कौन इनके सपनों को
बेदर्दी से रौंद गया ?
कहीं एक बम की साजिश
भरे बाजार को सुन्न कर गई
तो कभी साम्प्रदायिक हिंसा की ज्वाला
कितने सपनों को खाक कर गई।
जर–जमीन के पीछे,
भाइयों और पड़ोसी में होती लड़ाई,
सदा पीढ़िया हैं बरबाद करती आई।
बात उसकी हो या हमारी,
हिंसा करने वाला हो या
बर्दाश्त करने वाला
दोनों के बच्चे लाचारी और अभाव
का जीवन जीते हैं।

एक सामान्य जीने को
संघर्ष करते और रोते हैं।
समझ सकें तो समझें,
खूनी संघर्ष एक अंतहीन सिलसिला है

जिससे आज तक न कोई
फूला–फला है।
दया और दर्द के मायने
कहीं हम भूल न जाएं,
भाईचारा कहीं किताबों में
ही सिमट ना जाये।

छोड़ें रंजिश और हम साथ आयें
देश और समाज की तरक्की
का गीत साथ गुनगुनाएं।
आओ हिंसा से मुक्त
शांतिप्रिय गांधी के सपनों का
नया भारत बनाएं।

मनीषा बर्थवाल
आर्मी पब्लिक स्कूल
माल रोड, महू, मध्य प्रदेश

## वक्त की मांग

वक्त की मांग है ये जरूरत युवाओं की,
रहना है इस समाज में तो कद्र करें भावनाओं की।
क्यों भूल रहा मनुष्यों ऋषियों–मुनियों के आह्वाहन को,
पाये थे जो संस्कार पढ़कर वेद–पुराण को।

सोने की चिड़िया कहा जाता था इस देश को,
दूर–दूर तक फैलाता था जो मैत्री के संदेश को।
क्यों मैत्री–संदेश भूलकर वैर का भाव अपनाया,
अपने अपनों में बंट गये कहकर उन्हें पराया।

एक और एक ग्यारह होते मत भूलो इस पाठ को,
मिलकर गले आज फिर सारे खोल दो इस गांठ को।
तिनका–तिनका बिखर के खो गया ये सुंदर समाज,
एकता ही थी एक वक्त भारत मां का ताज।

करके दूर अंधेरे मन के प्रेम का प्रकाश फैलाएं,
कण–कण को करके पावन धरती को स्वर्ग बनाएं।
दूर करें फैली हिंसा को विश्वशांति फैलाएं,
करके सबके अधिकारों की रक्षा समानता को बढाएं।

मन को थोड़ा शांत करें भूल के हर आवेश,
इस भूमि की प्यास अब आध्यात्मिक परिवेश।
फिर करना होगा यहां वेदों–उपनिषदों का प्रचार,
अध्यात्म संग संस्कारों से परिपूर्ण हो आचार।

अच्छी हो आदतें संग नैतिक मूल्यों की धारा,
क्यों न इन इच्छाइयों से जग को जाए सुधारा।
आज का संघर्षमयी जीवन यर्थाथ से है दूर,
रचना करें सुंदर जग की नैतिक मूल्यों से भरपूर।

संगीता
सेंट विवेकानन्द मिलेनियम स्कूल,
एच.एम.टी. टाउनशिप, पिंजौर
हरियाणा

## तम को दूर भगाएं

आओ दीप जलाएं, आओ दीप जलाएं
दीप जला घर–घर खुशियों के दुख का तिमिर मिटाएं।
आओ दीप जलाएं।

कोई नहीं है यहां पराया, सब भारत मां की सन्तान,
भेद मिटाकर आपस के हम, सबको गले लगायें।
आओ दीप जलाएं।

दीप जलाएं संस्कारों का, सुन्दर स्वच्छ विचारों का,
जीवन की काली रातों से तम को दूर भगाएं।
आओ दीप जलाएं।

अनुशासित हो जीवन अपना, नीतिमय दिनचर्या,
सदाचार, संयम का सबको अमृतपान कराएं।
आओ दीप जलाएं।

दीप जलाएं नैतिकता का, सत्य, अहिंसा, मानवता का,
विश्व मैत्री के पथ पर हम मिलकर कदम बढ़ाएं।
आओ दीप जलाएं।

तुलसी राम सैनी
लेडी अनुसूइया सिंघानिया एजुकेशन सेन्टर
झालावाड़, राजस्थान

## प्रश्नों का हल कैसे पाओगे ?

नफरतों को एकत्र कर
असंतोष के ईंधन से
आक्रोश के चूल्हे में
भ्रष्टाचार, देशद्रोह पर
लालच मिलाकर,
अकर्मण्य स्वच्छंदता पर
अज्ञानता का तड़का लगाकर,
हिंसा की आग
जो जलाओगे,
तो अपने प्रश्नों का हल
कैसे पाओगे ?

हिंसा की प्रज्ज्वलित ज्वाला
कभी शांति नहीं देती।
रुक जाओ, थम जाओ,
हिंसा से कोई बात नहीं बनती।
बनती है,
शांति से, सुलझाने से,
त्रस्त को न्याय दिलाने से।

सही रास्ता सभी अपनाएं
सभी का जीवन सुखमय बनाएं।
अज्ञानता और अंधविश्वास
गरीबी, बेरोजगारी और भूख,
सक्षम व्यावसायिक बनकर हटाएं।

सच्ची, अच्छी और राष्ट्रप्रेमी
भ्रष्टाचार विहीन न्यायिक पारदर्शक
स्वच्छ राजनीति अपनाएं,
देश को प्रगतिपथ पर दौड़ाएं।

नलिनी सीताराम अय्यर
राजश्री विद्या मंदिर
बामल्ला, पोस्ट– उमल्ला
ता. जगडिया, जिला–भरूच
गुजरात

## बेटियां

बेटियां ये बेटियां, हमारी प्यारी बेटियां
कितना असत्य झलकता है,
कौन इन्हें इतना प्यारा समझता है,
समाज का कितना घिनौना रूप
सामने आया है,
जब एक मांस का टुकड़ा किसी
अस्पताल के पीछे पड़ा पाया है।

आधुनिक मशीनों का बढ़ रहा दुरुपयोग क्यों?
बेटे के जन्म पर बजती है थालियां क्यों
बेटी को पैदा होते ही पड़ती है गालियां क्यों ?

इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा,
कल्पना चावला को लोग
क्यों भूल जाते हैं,

क्यों नहीं बेटी के जन्म पर भी उत्सव मनाते हैं।
बेटा–बेटी के इस भेदभाव को मिटाना है,
बेटियां नहीं हैं किसी से कम
जन–जन तक
यह संदेश पहुंचाना है।
आज यही है हमारा संदेश
कन्या भ्रूण, हत्या पर लगे निषेध।

सुधा सिंह चावड़ा
सेसोमूं स्कूल, एन.एच–11, पश्चिम डूंगरगढ़
जिला : बीकानेर, राजस्थान

## नया सवेरा

बहुत हो चुकी आंख–मिचौली
चुनौतियों के सूरज से
बनना होगा सबल तुम्हें ही
चल कर अपने कदमों से।

मनु–पुत्रों को पता नहीं
वे किस ज्वाला से खेल रहे,
सिया को भूगर्भ में धकेल
स्वयं मार्ग प्रलय का खोल रहे।

जब हरी गयी तब राघव ने,
जब छली गयी तब केशव ने
आकर सम्मान बचाया था।

पर, इस कलयुग के बीहड़ में
कोई राघव, कोई केशव
न कोई पैगंबर आयेगा,
शिक्षित हो, सक्षम बनो तुम्हीं
तब ही जीवन मुस्कायेगा।

यह चिंगारी यूं ही नहीं
चमक दिखा बुझ जायेगी
यही दामिनी, दुर्गा शक्ति बन
नया सवेरा लायेगी।

दीपाली सिंह सोलंकी
बिरला स्कूल,
निकट आर.टी.ओ
साहयाद्री नगर, कल्याण (प.)
महाराष्ट्र

## प्रेम का दीप जलाये जा

मन से मन को मिला करके
बस, प्रेम का दीप जलाये जा,
बगिया में एक फूल खिलाकर
सुरभि–सुगंध फैलाये जा।
क्या लेकर आया है मानव
क्या लेकर के जायेगा।
तो दोस्ती का हाथ बढ़ाये जा,
मन से मन को मिला करके
प्रेम का दीप जलाये जा।

आया था जब इसी धरा पर
कुछ नहीं साथ में लाया है,
जाने को जब आन पड़ी तो
कुछ नहीं जेब में पाया है।
एक बार इस मातृभूमि का
अहसान चुकाए जा,
मन से मन को मिला करके
प्रेम का दीप जलाये जा।

ईर्ष्या, लोभ, लालच में पड़कर
अहंकार के भंवर में फंसकर
खुद को नहीं डुबाये जा,
बस, प्रेम का दीप जलाये जा।

माता–पिता सब भाई बान्धव
इष्ट, संत, गुरुजन चरणों में,
नित–तित शीश झुकाये जा,
मन से मन को मिला के बस
प्रेम का दीप जलाये जा।

सुनील कुमार पाण्डेय
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
बरारी, भागलपुर, बिहार

अहिंसा का पावन पथ

अहिंसा के इस पावन पथ पर,
तन–मन अर्पण हो सारा।
नित गतिमान रुके न क्षण भर,
बस यही हो दृढ़–संकल्प हमारा।

दिग–दिगंत में डग आस जगायें,
शांति की बयार फैलाएं।

विकल्पों के इस जग में
हम सब मिल निर्विकल्प बनायें।
अखिल विश्व कल्याण निमित्त सब,
जीवन में बस यही है उपक्रम हमारा।

प्रगति की इस डग पर हम
पग–पग ही हर कदम बढ़ाएं,
मन वच काया–शुद्धि का
पुण्य प्रशस्त पथ अपनाएं।
प्रतिक्रमण की सद्भावनाओं से
अतिक्रमण को धोते जाएं,
देह पंच परमेष्ठी भगवन्त स्वरूपा
यह अखिल ब्रह्माण्ड में है न्यारा।

तन पुनीत हो, मन पुनीत हो,
चारित्रिक उत्कर्ष सन्निहित हो
आत्मोकर्ष का भाव अमल हो,
देह भुवन को समुत्कर्ष बनाएं।
अज्ञ तम का नाश हो उर से,
जन–जन को कषाय से मुक्त बनाएं।
श्रद्धा की जगमग ज्योति से
अहिंसक आत्मस्वरूप हमारा।

सुनील शर्मा
लोकमान्य तिलक हाई स्कूल
पान दरीबा, उज्जैन, मध्य प्रदेश

भगवन ! कुछ ऐसा हो

भागम–भाग के इस कलयुग में,
मानव सहज–सरल हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

माता–पिता के श्री चरणों में,

नत–मस्तक जन–जन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

हिन्दू–मुस्लिम, सिख, ईसाई,
अक्सर प्रेम–मिलन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

साधु–संतों के सद्वचनों से,
पावन हर कण–कण हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

पूरे विश्व में अमन–चैन हो,
हर्षित हर जन–मन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

अणुव्रत का परचम फहरे,
अपना देश चमन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

द्वेषभाव को मन से त्यागें,
मन निर्मल–पावन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

विश्वगुरु पद भारत पाये,
संकल्प यही हर मन हो, भगवन कुछ ऐसा हो।

अरविंद कुमार शर्मा
केन्द्रीय विद्यालय, अम्बाझरी,
नागपुर, महाराष्ट्र

मन की बात

एकता है अनोखा मोती
इससे मिले सफलता की ज्योति।
आदिकाल से वर्तमान तक
रावण से निषाद राज तक
सबके मन की है यह बात
एकता से कर लो आत्मसात।

राजाओं का था फरमान
मेरी शक्ति–मेरी पहचान
मेरे पास एकता की पूंजी
यही मेरी सबल कुंजी
एक बनो सब मिलकर भाई
तभी मिलेगी एकता की मिठाई।

उल्टो पन्ने ग्रंथ वेदों के
राम के हो या रहीम के
विश्व ने इसका लोहा माना
विजय उत्सव इसमें है जाना
जब बूंदें हों या बालू के कण
मिलता जीवन इससे प्रत्येक क्षण।

प्रकृति ने दिया अनुपम उपहार
मिलकर करो सब विचार
जग में नहीं जीव और कोई
जिसके मस्तिष्क में एकता सोई
तेरा धन है तेरे पास
फिर उर है क्यों उदास।

आज ही कर लो इससे साक्षात्कार
होता रहेगा अक्सर चमत्कार
जगत की सोचो एक बार
हुआ कितनों का उद्धार
जिसने इसको अपनाया आज
सफल होगा कल उसका समाज।

देर न कर बन मत मूरत
तेरी सोच ही तेरी सूरत
कर ले इसका अब रसपान
निरंतर रहेगी यह विद्यमान
एकता के रहस्य को जान
अमृत कलश है इसे पहचान।

लव कुमार
क्रिसेंट पब्लिक स्कूल
जनवृत–छह, बोकारो स्टील सिटी
जिला : बोकारो, झारखण्ड

...केवल्य जब साकार हो

आदि तीर्थंकर ऋषभ से,
श्रृंखला जो चली रही।
रौशनी उसकी मुमुक्षु
श्रावकों को मिल रही।
अहिंसा और अपरिग्रह
अस्तेय के आधार से
मुक्त होते जीव सारे
संसार पारावार से।
हो सके तो पल दो पल
सब आत्मचिंतन यूं करें
अंतस–तिमिर में बांध जो दे
वो कर्म आखिर क्यों करें।
कैवल्य मिलता आत्म को
चरितार्थ सम्यक ज्ञान से,
जीव पाता मुक्ति तब
जब ढूंढता अभिमान से।
अनुशास्ताएं अणुव्रती हों
मार्ग ऐसा पा सकें।
अनुगूंज मुखरित हो सदा
और व्याप्त जिसका मौन हो।
यक्ष प्रश्न निरंतर
आखिर वो ऐसा कौन हो ?,
संसार में रहकर भी
नीरज पत्र सा अविकार हो।
होती प्रकाशित आत्मा
कैवल्य जब साकार हो।

पाण्डेय ऋषिकेश 'अनन्य'
अम्बुजा विद्यापीठ, पोस्ट : खान,
जिला : बलोदा बाजार,
भाटापाड़ा, छत्तीसगढ़

नारी–मन

मन मेरा मन
है एक खंडहर।
मैं यहां कैद नहीं,
भरपूर आजादी है मुझे।
चारों ओर खुला आकाश ।
यहां मुझे सुनाई देती है
नारी के विद्रोह की चीखें,
जो मेरी आत्मा से निकल
पुनः टकरा जाती हैं
टूटी दीवारों से मेरे मन की।
मेरी गूंजती चीत्कार
मुझ से पूछ रही है
क्या नारी होना पाप है,
क्या नारी जीवन अभिशाप है ?

मन... मेरा मन हो चला है एक रंगमंच।
यहां मां के रूप में
बहन के रूप में
बेटी के रूप में
मैं सफल अभिनेत्री हूं,
अपनी कला का नित्य प्रदर्शन करती हूं।
सामने लाती हूं विपरीत रूप
अपने बुझे मन का ।
यहां सबको दिखाई देती है मेरी उड़ानें,
यहां मिलता है
मेरी चीखों को गीतों का आयाम।
छटपटाहट से होता है
नृत्य का आभास
कुठां–घुटन विद्रोह से उठता है
हंसी का अट्टहास।

इस रंगमंच में मुझे मिल जाता है रंगीन संसार।
एक खूबसूरत मन में
बदल जाता है
मेरा मन।

सवालों से दूर
प्रश्नों से दूर
खो जाता है, खुश हो जाता है।
मन....मेरा मन,
मेरा नारी–मन।

मीनू शर्मा
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेज–4,
दिल्ली

## नवल आलोक तक

नन्हीं अधखुली आंखों से स्वप्न देख,
खुशियां सहेज मां के आंचल में
दस्तक दी थी मैंने धीमे से उस दिन...
अपनी मां की कोख में।

आज मुझे सहेजते हुए आनंद–विभोर थी मां
क्योंकि, आज वह सृष्टिकर्ता मां के रूप में
महसूस कर रही थी मातृत्व के एहसास को
अपने ही गर्भ में।

मैं तो अपनी आंखें बंद किये चुपचाप
अपनी अनिर्मित काया के पूर्ण आकार को
साकार रूप देने के लिए,
समझ रही थी
मां की छटपटाहट और हर प्रयास।

कभी सुबह, कभी शाम तो कभी रात में
वह मेरे अनिर्मित आकार को
दुलारती सहलाती व अपने स्नेहिल स्पर्श से
हर पल उसे स्पंदित करती।

उसके (माँ) कोमल हाथों का स्पर्श

स्मरण कराता हर पल
कि मुझे भी कर्तव्य निभाना है
अपनी मां के हाथों की मजबूत ताकत बनना है।

समय–चक्र घूमता रहा और मैं
मां की कोख में नये आकार के साथ
मां के अधरों की मुस्कान के साथ
ढाई माह की हो गई।

ढाई माह के दौरान मैं मां के साथ,
और मां मेरे साथ जुड़कर,
अपना हर एहसास मुझमें जीने लगी
और मैं उसकी कोख से जन्म लेने का
अधुरा स्वप्न देखने लगी।

आज मां और दादी डॉक्टर के पास जाने वाले थे,
पिता तो नहीं पर मैं मां के साथ थी,
डॉक्टर व दादी की हर बात को सुन–समझ रही थी,
मां के हृदय के स्पंदन से
उसके हर भाव को पढ़ रही थी।

तूफान कुछ यूं आया कि
दादी को पता चल ही गया,
कि मां की कोख में तो उनकी निर्भया पल रही है
यही जान, मां को झेलनी थी
मानसिक वेदना और प्रताड़ना,
करना था एक स्त्री को एक स्त्री से मुकाबला।

अचानक मां की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी,
'मुझे' खो देने के भय से,
वह सिसक–सिसक कर रोने लगी,
अपनी कोख पर होने वाले
अत्याचार के डर से भयभीत होने लगी।

मां तो अजन्मी निर्भया के
अस्तित्व को बचाना चाहती थी,
हर हाल में मुझे जिंदा रख,
अपनी कोख में पालना चाहती थी,

आपने मातृत्व व कर्तव्य परायणता
का साक्ष्य देना चाहती थी,
सृष्टि द्वारा निर्धारित, स्त्री की पूर्णता
को प्राप्त करना चाहती थी।

आज मां के भीतर
एक अद्भुत शक्ति का संचार था,
वह अपने मातृत्व की ताकत को
पहचान गई थी,
अपनी हिम्मत बटोरे और कोख संभाले,
आने वाले तूफान की दिशा बदलने को तत्पर थी।

आज मां 'मातृत्व की स्वतंत्रता' के सुख को
खोना नहीं चाहती थी,
हवाओं के विरुद्ध जाकर भी सक्षम प्रयासों से
अजन्मी निर्भया के अस्तित्व को बचाना चाहती थी।

साबित करना चाहती थी दुनिया को
कि बेटियां 'निर्भया' ही होती हैं
सृष्टि के निर्माण का आधार, हर घर की लक्ष्मी,
हर आंगन का सिंगार होती हैं।

मां के सक्षम प्रयासों और संघर्ष से
मनवा ही लिया लोहा, मां ने, मातृत्व की ताकत का,
तभी तो मैं 'सुरक्षित' निर्भया बढ़ रही हूं
मां की कोख में पूरे परिवार के बीच।

आज सभी को प्रतीक्षा है मेरे आने की
आज अंतिम दिन है  मेरा मां की कोख में,
मानसिक वेदना और विरोध के बाद भी,
मां तैयार है प्रसव–पीड़ा के लिए।

आज निश्चित ही मैं उनकी कोख से
बाहर आने वाली हूं,
मां की ताकत बनने वाली हूं,
मैं 'निर्भया' मां की हिम्मत बन
उसके मां बनने के सपने को
साकार करने वाली हूं।

अपनी साहसी मां के मातृत्व के प्रथम अनुभव को
सामाजिक कुरीतियों द्वारा कुचले जाने से बचाकर
अपनी नन्हीं उंगलियों से मां का हाथ थामे
उसके कदमों से कदम मिलाकर
चलने को आ गई हूं।

**बिंदू कृष्णकांत पंचोली**
आर्मी पब्लिक स्कूल, माल रोड़,
महू, मध्य प्रदेश

## आत्म–संयम

आत्मा का संयम रहे,
देह का तर्पण रहे,
नैतिकता सब में बहे।
भेद हो न भाव हो,
मनुष्य में सम्भाव हो।
जाति का ना रंग का,
रूप का ना धर्म का,
सद्संकल्पों का ही संचार हो।
सद्भाव सम् का भाव हो,
अणुव्रत ही सब का शास्त्र हो,
सूत्र एक स्वर से बहे,
सर्वत्र एक ही व्रत रहे।
सम्यक जीवन, सम्यक मानव,
सम्यक ही अनुशासन चले,
नम्रता की जीत हो,
आत्म–संयम से प्रीत हो।
हो न खंडित नैतिकता,

रहे अखंडित मानवता।

रक्त हो न पात हो,
शांति का साम्राज्य हो,
सवधर्म को पालें सभी
सक्त भाव त्यागें सभी।

प्रकृति दीक्षित
महाप्रज्ञ प्रेक्षा विश्व भारती
कोबा–पाटिया, गांधी नगर, गुजरात

सहमी–सहमी सी हंसी, ढूंढे खुद को
चहुं शोर में अपनी ही ध्वनि अंजानी सी
कौन हूं मैं, कौन है मेरा
असमंजस के कोलाहल में खुद को ही
पाऊं अन्जाना सा।

यह धरा हिलती सी है
उलटी–पलटी बंजर सी पड़ी
पानी की जगह लहु है सींचे
आंतक की काली उपज।
नई नाजुक नसलों में दिखे
आक्रोश और बारूद के धुएं।
खुद को ही मिटा दे
यह नासूर फिर भी न मिटे

टुकड़ों में बंटी धरती है सिसके
हर तरफ कराहती सी आह है निकले।

तड़प–तड़प हर नजर ऊपर देखे,
कब गिरे अमृत की धारा जो बहा दे
नफरत की दीवार,
रोप दे सिर्फ प्यार ही प्यार।
ज्ञान–प्रकाश की चकाचौंध
सौंधी–सौंधी हवा महके
धरती हंस दे बांह पसारे
चले आओ, कोई तो उठाओ
वह पहला कदम, जो मेरा कर्ज उतारे।

दीपा जैन
लवली पब्लिक स्कूल
प्रियदर्शिनी विहार, दिल्ली

## अणुव्रत है जीवन का सार

अणुव्रत है जीवन का सार, जीवनाधार।
जहां मानवता का स्वप्न पलता है हर आंख में,
जहां भेद न करता कोई जात और पात में।
जहां मनुष्यता का रंग ही सच्चा रंग है,
समता और मानवता ही जीवन के अंग हैं।

जहां धर्म व संप्रदाय न बने बड़े किसी देश से
जहां मानव बोले मानव से मानव की ही भाषा,
रंग जाए सभी देशभक्ति के रंग में
एक का एक से नाता हो भाई–भाई जैसा हो,
मैं सोचूं मेरे सपनों का भारत कैसा हो।

जहां पूर्वजों का आत्मसंयम जीवन का आधार हो,
मैत्री एकता, शांति जीवन–नौका की पतवार हो,
जहां एक के दुःख का आंसू चमके दूसरे की आंख में,
नैतिक मूल्यों की प्राण–प्रतिष्ठा करने वाले भावी कर्णधार हों।
फिर से बनायें भारत को विश्व गुरु,
आध्यात्मिक ज्ञान ही इसका आधार हो।

घर–घर में हो माता–पिता का आदर,
नैतिक मूल्यों की प्राण–प्रतिष्ठा,
अहिंसा परमोधर्म ही समाज–निर्माण का आधार हो।
मानव न बनें दानव, अहिंसा से उसे प्यार हो,
आओ रचें ऐसा समाज जहां प्रेम ही आधार हो।

बुद्ध की करुणा, महावीर के आदर्शों का
सम्पूर्ण विस्तार हो
अणु–अणु में मानव करे ईश का दर्शन
मानव मानव से करे प्यार।
यही बनें जीवन का सार,
अणुव्रत के लक्ष्य बनें जीवनाधार।
यह स्वप्न पले हर आंख में
यही सबका सुविचार हो।
विश्व गुरु के पद पर फिर विभूषित हो भारत,
शहीदों के रक्त का सम्मान हो।
पूर्वजों के ज्ञान का विस्तार कर
अणुव्रत के सार को ले बनें पथ–प्रदर्शक,
फिर कह सकें गर्व से
मेरे स्वप्नों का भारत कैसा हो ?
मेरा भारत ऐसा हो,
मेरा सपनों का भारत ऐसा हो।

वंदना शर्मा
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
तलवंडी, कोटा, राजस्थान

## एकता के गीत गाओ

एकता में अनेकता सबसे सुना है,
पर अपने जीवन में उसे कब चुना है ?
बरसों से कहा जाता है रहा,
एक है सूरज, एक है चंदा
और एक है धरा।
प्रकृति ने नहीं बांटा है हमको,
तो हम क्यों बांट रहे हैं सबको ?

क्यों लड़ते रहे हैं हम
धर्म, जाति के नाम पर,
नेता लोग कमा रहे हैं
इसी धंधे के नाम पर।

हमें पता है मनुष्यता ही
सबसे बड़ा धर्म है,
यही सर्वोपरि है, यही हमारा धर्म है।
जब हवा, धूप, धरा सबकी एक है,
जब भूख, प्यास सबकी एक है,
दिल में धड़कने वाली धड़कनों
की आवाज सबकी एक है।

वृक्षों से मिलने वाली छाया सबको एक है,
जब सूरज दादा, चंदा मामा एक है,
जब रूप सबका एक है,
तो हम क्यों जाति के नाम से अनेक हैं।

अरे! एक–एक मिल बनते ग्यारह,
दो–दो मिल बाइस,
तो भैया, ये न जोड़ है ना बाकी,
यह है अनुराग के राइस।
अगर हम साथ रहें मिलजुल कर
तो अच्छा हमारा कल होगा।
नहीं तो हमें कुचलने वालों का
आतंकवादियों का दल होगा।

अरे! इन नेताओं का काम है
हमें लड़वाना धर्म, रंग और जाति के नाम पर
और बजवाते फिर तालियां
एकता के नाम पर।
पहचानों इन जमाखोरों को, भ्रष्टाचारियों को।
खाते हैं ये तो दूध–मलाई,
मक्खन बड़े चाव से,
बच्चे भूखे मरते हैं सूखी रोटी के दाव से।

उठो अब, उठाओ अपने कंधों पर लोकतंत्र को,
खत्म कर डालो उन्हें

जो भोग रहे इस तंत्र को।
ये भूल गये हैं सुभाष, भगत की क्रांति को।
अब तुम को लाना है,
प्यार और अनुराग की आंधी को।
जागो, उठो! एक हो जाओ,
एकता के गीत गाओ,
अपने दम पर,
भारत को विश्वगुरु बनाओ।

आरती अरविन्द असावा
राजश्री विद्या मंदिर, बामल्ला
पो.ओ. उमल्ला, जिला–भरूच गुजरात

अणुव्रती हैं हम

जिंदगी की लहरों में आंसुओं का आशियाना है,
इस बेखबर दुनिया में अणुव्रत एक ठिकाना है।
मंजिले हैं दूर बहुत और रास्ते कठिन हैं,
पर चलना है दस्तूर, हमें सदा चलते जाना है।
है अणुव्रती हम, यह सारे जहां को बताना है।

कभी खुशी, कभी गम इनका तो आना– जाना है,
रुकना न कभी हारकर, यही तुलसी का तराना है।
जिंदगी की राहों पर कांटों की ही शैय्या है,
पर कांटों के बीच भी फूल हमें खिलाना है।
हैं अणुव्रती हम, यह सारे जहां को बताना है।

पत्थरों से चुन–चुनकर हीरे हमें ही लाने हैं,
और गहरे नीर में से मोती हमें ही पाने हैं।
ठहराव एक सामाजिक अभिशाप है,
इस जहां को सहज, सरल, समदर्शी हमें बनाना है।
हैं अणुव्रती हम, यह सारे जहां को बताना है।

वर्ण जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा है,
सबसे मिलकर जीना यही 'तुलसी' की परिभाषा है।
इस परिभाषा के शब्दों में जन–जन की अभिलाषा है,
तुलसी अणुव्रत सिंहनाद से सारे जग को जगाना है।
हैं अणुव्रत हम, यह सारे जहां को बताना है।

**कुसुम शर्मा**
टैगोर विद्या भवन सी.सै. स्कूल,
टैगोर लेन, अम्बाबाड़ी,
जयपुर, राजस्थान

मिलें हाथ से हाथ

भारत माता का उपवन जब ऐक्य–भाव से लहराये,
जाति, पंथ, वर्णों की रेखा तिल–तिल कर मिटती जाये।

महावीर गौतम की धरती भेदभाव से ऊपर है,
संस्कृतियों का अद्‌भुत संगम दुनिया में श्रेयस्कर है।
सत्यशील दृढ़ता की धारा द्वेष–कलुष हरती जाये.....
जाति, पंथ, वर्णों की रेखा तिल–तिल कर मिटती जाये।

मानवता के शंखनाद से स्वार्थजनित अज्ञान मिटे,
संयमशाली भारतीय हों सम्प्रदाय का दंश कटे।
मिले हाथ से हाथ हमारे, समरसता बढ़ती जाये.....
जाति, पंथ, वर्णों की रेखा तिल–तिल कर मिटती जाये।

भारत का उत्थान निहित है जन–जन में चेतना जगे,
सभ्य सुसंस्कृत नैतिक बल से द्वेष और पाखंड घटे।
नव प्रभात लाने की इच्छा जनमन में डटती जाये.....
जाति, पंथ, वर्णों की रेखा तिल–तिल कर मिटती जाये।

विश्वगुरु का परचम अपना विश्व–क्षितिज पर छा जाये,
कल्पित रामराज्य गांधी का भारत–भू पर आ जाये।
उपज बढ़े अध्यात्म–भाव की, दिव्य मूल्य गढ़ती जाये.....
जाति, पंथ, वर्णों की रेखा तिल–तिल कर मिटती जाए।

सुभाष कुमार
ओ.पी. जिन्दल स्कूल,
रायगढ़, छत्तीसगढ़

## कोमल अंकुर

दबा अवनी के आंचल में
सूक्ष्म सजीव बीज बनकर,
उठा समय की तहें तोड़ कर
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

अंधकार को चीरता
उर्ध्वगति को हुआ मुखर,
प्रखर ज्योति को पाने
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

बीज तहों को तोड़ कर,
कठोर धरा को फोड़ कर,
गाता नव जीवन के सुर,
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

नव पल्लव से हो सुसज्जित,
नव पुष्पों से आच्छादित,
चाह फलों की लिए उर,
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

झुकी टहनी फलों से लद कर,
नम्र भाव से नमित हो कर,
रस, फल बीज, जीवन देने
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

एक बीज से एक वृक्ष

एक वृक्ष से कई बीज,
वन सृष्टि की क्षमता लेकर
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

यह सूक्ष्म–सा बीज नहीं है,
नहीं यह नन्हा सा अंकुर,
है पूर्ण वृक्ष, सम्पूर्ण अरण्य,
यह नन्हा कोमल अंकुर।

एक बीज सम्पूर्ण अरण्य,
करना रक्षा यही समझ,
चाहे कितने भी क्यों ना
फूट पड़ा कोमल अंकुर।

कौशलेन्द्र गोस्वामी
राजकीय उ.मा. विद्यालय, शिशोदा
प.समिति खमनोर
जिला : राजसमंद, राजस्थान

## गीत गाते चलो

गीत गाते चलो गुनगुनाते चलो,
देश की एकता को बनाते चलो।

हो आपस में बन्धुत्व की भावना,
फले–फूले प्रिय भारत यही कामना।
मातृ ममता की गंगा यूं बहती रहे,
जन मानस के कल्मष को धोती रहे।
भारत माता की जयगाथा गाते चलो,
गीत गाते चलो, गुनगुनाते चलो।

जिन वीरों ने मुक्ति दिलाई हमें,
आओ नत मस्तक होवें उनके चरणों में।
मां के आंचल का जिनको सहारा मिला,
उन जवानों की यादों का गुल है खिला।
इन शहीदों की गरिमा बढ़ाते चलो,
गीत गाते चलो गुनगुनाते चलो।

जाति–पाति के भेदभाव को छोड़कर,
स्वार्थ लिप्सा की आंधी से मुंह मोड़कर।
करो धारण हृदय में उच्च प्रेम भाव को,
सब सहारा दो मिलकर राष्ट्र की नाव को।
गांधी, नेहरू को फिर से बुलाते चलो,
गीत गाते चलो, गुनगुनाते चलो।

हो पुष्पित, प्रफुल्लित प्यारी ऋतंभरा,

निज हरितिमा की छवि से मुस्काए वसुंधरा।
इस माटी की पूजा तन मन से करो,
देश भक्ति की शक्ति जन–जन में भरो।
खून–पसीने की धारा बहाते चलो,
गीत गाते चलो, गुनगुनाते चलो।

विक्रम प्रसाद गौड़ 'रसिक'
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय
नत्थूपुरा, बुराड़ी, दिल्ली

फूल की दास्तान
इक फूल खिला था माली के बाग में
देखा उसको सबने माली के बाग में
कुदरत ने बक्शी लीला उसको बाग में
सींचा अपने खूं से माली ने बाग में।

अब फूल ने बदला नाज अपने काम से
कोयल ने छेड़ा साज उसके नाम से
वह चमन हुआ सरताज उसके पैगाम से
गुल–गुलशन में हुआ जयनाद सुबहों–शाम से।

सामने एक दिन पौधा एक बबूल का आया
देख उसको फूल मंद मुस्काया
कैसी जिंदगी, कैसा यह सरमाया
आग–पानी से आकर यहां टकराया।

बोला बबूल का पौधा तुम जल्द मुरझाते हो
कैसा जीवन तेरा पल में जग से जाते हो
मैं तो जीता भरपूर सालों–साल
आता न इतनी जल्दी तुमसा मुझ को काल।

फूल अपने लहजे में आकर मुस्काया
बबूल के शब्दों से वो भला नहीं भरमाया
दिया ज्ञान जिंदगी के फरमानों का
जीना है मुझको केवल मेहमानों सा।

मैं नहीं जीता सालों साल

परंतु नहीं होता मेरा तुमसा हाल
थोड़े से सफर में खुश्बू अपनी बिखेरता हूं
जग को कुछ देकर आखिर मैं मरता हूं।

गोकुल बी, क्षत्रिय
आदित्य बिरला पब्लिक स्कूल
बिरलाधाम, खरच,
कोसंबा (आर.एस.) भरूच, गुजरात

## अनमोल देन

मर्यादा और संयम के बिन, मानव ढ़ोर समाना है,
नीति–नियम–अनुशासन के बिन, उन्नत कौन घराना है।

धरती अम्बर सागर, सरिता, चन्दा सूरज ग्रह सारे,
रहते हैं सीमा में तब ही, लागत जगत सुहाना है।

समय कीमती होता बड़ा है खोना व्यर्थ नहीं इसको,
काम सभी जो करे समय पर, कहते उसे सयाना है।

किसी काम में किसी तरह की करें नहीं हम कोताही,
सच्ची निष्ठा और लगन से, अपना फर्ज निभाना है।

अपने ज्ञान कला कौशल का, करें नहीं अभिमान कभी,
सीख सदा दूजे से लेकर, इनको और बढ़ाना है।

दुर्गम है जीवन की राहें, सोच–समझ कर चलें सदा,
एक कदम भी गलत चले तो पड़े  रोज पछताना है।

नकल दूसरों की करने में सीमा अपनी ना भूलें,
पूंजी है जो पास हमारे, उससे काम चलाना है।

जीवन पथ में हमें बहुत से, भले–बुरे जन मिलते हैं,
गुण–अवगुण सब जांच परखकर, कोई मीत बनाना है।

अनमोल देन नर–तन प्रभु की, बार–बार यह मिले नहीं,
हमको करके नेक कमाई, उसका कर्ज चुकाना है।

विपिन शर्मा
नवयुग स्कूल, मोती बाग
नई दिल्ली

## सबका हिन्दुस्तान है

करे राष्ट्र से घात, उसे मिलता जग में सत्कार नहीं,
मनुज नहीं वह पशु है कोरा, जिसे राष्ट्र से प्यार नहीं।
जाति, धर्म, भाषा से ऊपर भारत का स्थान है,
हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख–इसाई, सबका हिन्दुस्तान है
देवालय–मुस्जिद– गुरुद्वारे, घृणा न गिरजा सिखलाते,
सच पूछो तो देशवासियों ये आपस में लड़वाते ।
देश द्रोह करने वाले से बड़ा कोई गद्दार नहीं।
मनुज नहीं, वह पशु है कोरा, जिसे राष्ट्र से प्यार नहीं।

मातृ भूमि के लिए न जिसने, न्यौछावर निज प्राण किये,
ऐसा जीवन भार देश पर, चाहे वर्ष हजार जिए।
लेकिन जो मिट जाये देश पर, उसकी अमर कहानी है,
उस शहीद की चिर–समाधि पर, भाल टेकता प्राणी है।
ध्यान रहे मानव का जीवन, मिलता है हर बार नहीं।
मनुज नहीं वह पशु है कोरा, जिसे राष्ट्र से प्यार नहीं।।

चन्दन चरण–मातृ–वसुधा का जिसने भाल लगाया है,
जिसने प्राण–सुमन से निज मां का श्रृंगार सजाया है

भारत मां के वीर सपूतो, अपना शीश झुकाएं हम,
एक गगन है एक वतन है, आओ मिलकर गायें हम।
न कोई हिन्दू, न कोई मुस्लिम, यहां कोई सरदार नहीं,
मनुज नहीं वह पशु है कोरा, जिसे राष्ट्र से प्यार नहीं।

भारत राष्ट्र एक उपवन है क्यारी हर प्रदेश यहां,
धर्म अनेक जाति अगणित हैं, न्यारे–न्यारे वेश यहां।
किंतु एकता फिर भी मिलती ऐसा देश हमारा है,
भू मण्डल पर सबसे सुंदर भारत सबसे न्यारा है।
व्यस्त तिंरगा के सम्मुख हरीक निधियां स्वीकार नहीं।
मनुज नहीं वह पशु है कोरा, जिसे राष्ट्र से प्यार नहीं।

सुनीता एस. उपाध्याय
श्रीमती विमला देवी एल.एस. सोनी
हायर इग्लिश स्कूल, हिवरी ले आउट,
नागपुर, गुजरात

## हिंसा से कौन महान हुआ ?

हिंसा मनुष्य की प्रवृत्ति नहीं है
हिंसा से कब मनुष्य महान हुआ है ?
यदि ऐसा होता तो
रावण, कंस, हूण, कुषाण गौरी, अफगानी,
अब्दाली, नादिर शाह महान होते।
इसलिए भारत हिंसा मुक्त रहा है।
संसार को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा दिया है।
परन्तु ऐसा नहीं है
मनुष्य हिंसा से नहीं,
विध्वंस से नहीं,
असुरत्व से नहीं,
कपट से नहीं,
छल से नहीं,
बल्कि अहिंसा से सृजन से, देवत्व से
प्रेम से, परोपकार से, महान हुआ है।
यदि हिंसा, रुप, छल से,
कोई महान होता तो

सारे असुर महान होते
रावण, हिरण्यकश्यप, कंस
महान होते
और इन्हीं की यशगाथाएं
आज प्रचलित होतीं।
आज इन्हीं की रामायण
लिखी जाती,
महाभारत भी इन्हीं की
यशगाथा गाती।
परन्तु ऐसा नहीं है।

आज राम की नहीं,
कंस की जयजयकार होती।
आज रावण और कंस जश्न मनाते,
राम–कृष्ण पीछे छूट जाते।
आज बुद्ध और महावीर का
कौन नाम लेता ?
आज कौन प्रेम, अहिंसा के
मार्ग पर चलता ?
लोग परोपकार, दया, करुणा,
को भूल जाते।
लोग, छल–कपट हिंसा
को याद रखते,
परन्तु सत्य यही है कि मनुष्य
सत्य, प्रेम, अहिंसा से महान हुआ है।

कहते हैं– कलिंग युद्ध के
महाविनाश को देख दयार्द्र हुए थे अशोक,
जब देखने गये रणस्थल
तो पैर रखने को नहीं थी जगह
पैर लाशों पर पड़ते थे,
रक्त–रंजित थी सम्पूर्ण धरा
तब ऐसे विध्वंस को देख,
मानवता की हिंसा को देख,
राजा अशोक ने दृढ़ निश्चय किया
हिंसा को छोड़ने का,
कभी शस्त्र न उठाने का दृढ़ संकल्प किया।
मानवता के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हुए,
दया–करुणा का निर्झर झरने लगा,

राजा अशोक युद्ध त्याग
महान बने,
इसलिए कहा गया है
हिंसा से कब कोई महान हुआ है।

कहते हैं– बुद्ध और महावीर ने
पीड़ित जगत को देख
जगत को पीड़ा मुक्त करने हेतु
किया था गृहत्याग,
पत्नी, पुत्र को छोड़
जगत का कालकूट पीकर
अमृतत्व की तलाश में
निकले आत्म ज्ञान हेतु
और पाई ज्ञान–सिद्धि।
संसार को अहिंसक बना
छल, कपट, प्रपंच, चोरी, परिग्रह
से मुक्त कर दिया था दान, दया, करुणा का
इसलिए बिना हिंसा के
महान कहलाये वो।
संसार ने भी भगवान रूप में स्वीकारा
किया शीश नमन।
इसलिए कहा है
हिंसा से कब कौन महान हुआ है।

**मनीष कुमार चतुर्वेदी**
**लेडी, अनुसुइया सिंघानिया एजूकेंशन सेंटर,**
**झालावाड़, राजस्थान**

# गोभी का फूल

**तरुणा गद्‌गद हो गई थी। उस बच्चे के निश्छल प्यार और अपनेपन की भावना का अहसास कर आज तरुणा की सोई ममता जाग उठी। उसने जैसे साक्षात बाल–गोपाल के दर्शन कर लिये हों। आज तरुणा को मानवता के दर्शन हो गये। सारी कट्‌टरपंथी धारणाएं आज उसे बेमानी लगने लगी थीं। रहीम हो एक मुसलमान था किन्तु क्या प्रेम का कोई धर्म होता है।**

**तरुणा** जैसे यादों के जंगल में उलझती जा रही थी। रह–रह कर उसे वे दिन याद आ रहे थे जिन्हें उसने ह्रदय में सहेज रखा था जिन यादों पर वह वक्त की धूल जमने नहीं देना चाहती थी। तरुणा के लिए ये यादें उसकी जीवन भर की पूंजी थी।

एक छोटा सा गांव, नाम मनोहरपुर, हरे–भरे खेत। लहलहाती फसलें। गांव में कच्चे मकान ही थे जिन्हें गांव की औरतों ने खडिया मिट्‌टी की अल्पना से सजा रखा था। इस गांव की निराली बात यह थी।कि याहं हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों के लोग बड़े प्रेम से रहते थे। मन्दिर, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे की उन्हें जैसे आवश्यकता ही नहीं थी। वे मानवता और प्रकृति को ही अपना इष्ट मानते थे।

शहर से दूर, पगडंडियों से गुजरते हुए, शीतल जल से भरी नदी को लकड़ी की पुरानी नाव में बैठकर पार करते हुए जब कोई इस गांव में पहुंचता था तो अपनी सुध–बुध खो बैठता था। इतना मनोरम दृश्य कि नजर हटाने का दिल ना करे।

हरियाली से सराबोर धरती, कल–कल बहती नदी, भेड़–बकरी चराते ग्वालों की हांक, चिड़ियों की चहचहाहट और कभी–कभी  किसी ग्वाले द्वारा बजाई गई मुरली की मधुर धुन। यह सब कुछ किसी काल्पनिक लोक से कम नहीं था।

तरुणा एक शहर की लड़की थी। बड़े स्कूल, कॉलेज में पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों की लड़की जिसका विवाह एक कट्‌टर हिन्दू परिवार में हुआ था।

तरुणा वैसे तो आधुनिक विचारों से ओत–प्रोत थी किन्तु उसके भाग्य ने उसे डरी–सहमी, पुरातन पंथी बना दिया था। धर्म का डर, अनिष्ट की आशंका ना रहे इस हेतु परिवार पूजा–पाठ और धार्मिक कट्‌टरता को महत्व देता था।

कहते हैं हम जिससे डरते हैं हमें और अधिक डराती है। विवाह के पांच वर्ष बीतने पर भी तरुणा मां नहीं बन सकी थी। सास–ननद के ताने, पति का रूखा व्यवहार और अपने अधूरेपन के अहसास से उबरने के लिए तरुणा ने नौकरी करने का निश्चय किया। बहुत मुश्किल था सबको राजी करना परन्तु तरुणा ने दृढ़ता दिखाई। ना–ना करते हुए भी अन्त में सबको मानना पड़ा। तरुणा ने शिक्षक प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए शिक्षक–भर्ती परीक्षा दी। तरुणा चयनित हुई। उसे नियुक्त किया गया एक छोटे से गांव मनोहरपुरा में।

तरुणा जब मार्ग के दृश्यों को नजरों से निहारते हुए गावं पहुंची तो उसे अपने फैसले पर गर्व महसूस हुआ। गावं में विद्यालय के नाम पर एक मिट्टी से बनी झोपड़ी थी जिस पर फूस का छप्पर लगा था। पास में एक बड़ा सा नीम का पेड़ था। नीम के पेड़ के नीचे मिट्टी का चबूतरा था। रामदीन नाम था उस चपरासी का जो एकमात्र कर्मचारी था उस विद्यालय का।

रामदीन ने बताया, ''दीदी, आप इस कुटिया में रहेंगे और नीम के नीचे बच्चों की कक्षा लगेगी।''

'अच्छा ठीक है''। तरुणा ने कहा। थकान के कारण तरुणा आराम करना चाहती थी इसलिए उसने रामदीन से कहा, ''रामदीन तुम कल सुबह बच्चों को ले आना, अभी जाओ।'' रामदीन ने सिर हिलाया और चला गया।

सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से तरुणा की आंख खुल गईं। तरुणा जल्दी से तैयार होकर नीम के नीचे आ गई। रामदीन ने पहले ही जगह की साफ–सफाई कर दी थी और बच्चों को भी ले आया था।

बच्चों ने दीदी का अभिनन्दन बड़े जोश के साथ खड़े होकर किया। तरुणा मन्त्रमुग्ध खड़ी रह गई। ''दीदी..... दीदी''। किसी ने पीछे से आंचल पकड़ कर पुकारा।

तरुणा जैसे सपने से जाग उठी हो। उसने देखा एक छोटा सा बच्चा हाथ में फूल लेकर खड़ा था। ''दीदी ये आप के लिए है।'' बच्चे ने बड़े प्यार से तरुणा के हाथ में फूल दिया।

तरुणा कभी उस फूल को और कभी उस बच्चे को देख रही थी और समझने की कोशिश कर रही थी उस बच्चे की भावना को।

यह छोटा बच्चा वहां उपस्थित सभी बच्चों का दुलारा था, नाम था रहीम। अपने माता–पिता का आठवां बच्चा, शरारती किन्तु नेकदिल। रहीम को लगा कि दीदी को पहला उपहार इससे अच्छा क्या दे। यह फूल कोई मामूली फूल नहीं था। इसे रहीम ने अपने हाथों से सींचकर तैयार किया था। अम्मी ने दो महीने पहले रहीम को बताया कि गांव के विद्यालय में नई दीदी आने वाली है। दीदी रहीम को पढ़ा–लिखा कर बाबू बना देगी। रहीम के सपनों को तो जैसे पंख लग गये थे। रहीम ने तभी निश्चय कर लिया था कि वह अपने हाथों से सींच कर तैयार फूल दीदी को देगा।

आज रहीम बहुत खुश था। उसके लिए दीदी का आना तपते रेगिस्तान में वर्षा की बूंदों के गिरने के समान था।

''गोभी का फूल''। मीरा ने रहीम को डांटते हुए कहा ''रहीम तुम गुलाब क्यों नहीं लाए ?'' मीरा रहीम की बड़ी बहन थी। उसे लगा दीदी को गोभी का फूल पसन्द नहीं आया तभी तो दीदी चुप थी।

तरुणा ने उस उपहार के पीछे छिपी उस नन्हें से बच्चे की भावना को समझ लिया था। मीरा को यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि दीदी को गोभी का फूल पसन्द आया।

मीरा ने चहकते हुए दीदी को बताया कि कैसे रहीम ने इस फूल को अपने हाथों से सींचकर दीदी के लिए तैयार किया था। जिस समय रहीम के मन में यह भावना आई थी उस समय वह दीदी को जानता तक नहीं था कि किस धर्म को मानती है दीदी, क्या उसकी पसन्द–नापसन्द है। उसे तो सिर्फ इतना पता था कि जो दीदी आने वाली है वह उसे पढ़ना–लिखना सिखायेगी। उसके सपनों को पंख देने वाली एक जादू की परी थी दीदी।

ठीक ही तो है हमने ईश्वर को देखा नहीं किन्तु ईश्वर हमें उतने सुन्दर दिखते हैं जितना सुन्दर हमारा मन होता है। जितना पवित्र हमारा उद्देश्य होता है। उतनी पवित्रता हमें ईश्वर में दिखाई देती है।

तरुणा गद्‌गद् हो गई थी। उस बच्चे के निश्छल प्यार और अपनेपन की भावना का अहसास कर आज तरुणा की सोई ममता जाग उठी। उसने जैसे साक्षात् बाल गोपाल के दर्शन कर लिए हों। आज तरुणा को मानवता के दर्शन हो गये। ऐसी कट्टरपंथी धारणाएं आज उसे बेमानी लगने लगी थी। रहीम जो एक मुसलमान था किन्तु क्या प्रेम का कोई धर्म होता है। भावना की कोई जाति होती है। नहीं, प्रेम तो वह अमूल्य अनुभूति है जो किसी का भी हृदय परिवर्तित कर सकती है। रहीम ने तरुणा के जीवन को एक मकसद दे दिया था।

तरुणा ने निश्चय किया कि वह अब इसी गांव में रहकर इन नन्हें बच्चों को शिक्षा देगी। उन्हें अपने प्यार से सींचकर एक दिन बरगद की तर विशाल वृक्ष बना देगी जिसकी छाया में मानव सुख की नींद सो सके। फिर कोई धर्म, जाति, भाषा के नाम पर मानव को मानव का बैरी ना बना सके। धर्म को जिहाद का नाम देकर आंतक और खौफ फैलाकर लोगों को अलग–अलग न बांट सके।

तरुणा ने अपना जीवन उस गांव को समर्पित कर दिया। उसकी मेहनत रंग लाई। मनोहरपुरा तरुण प्रतिभाओं का उद्‌गम स्थल बन गया। इन प्रतिभाओं ने गांव का ही नहीं देश और मानव जाति का नाम रौशन कर दिया।

''दीदी ओ दीदी। क्या हुआ ? कहां खोई हैं आप ?'' किसी की मधुर वाणी ने जैसे तरुणा को यादों के झुरमुट से यथार्थ में ला दिया । यह कोई और नहीं रहीम था। डॉ. रहीम 'कैंसर विशेषज्ञ'। रहीम केवल शरीर ही नहीं मस्तिष्क और दिलों में पनप रहे कैंसर का भी उपचार करता था।

''दीदी ! ये लो आपका पसन्दीदा फूल– ''गोभी का फूल''। तरुणा और रहीम दोनों खिखिलाकर हंस पड़े।

कृष्णा बनर्जी
टैगोर विद्या भवन,
अम्बाबाड़ी, जयपुर, राजस्थान

# नई सुबह

मैं क्रोध और आवेश में हांफ रही थी। आलोक ने मुझे समझाने को आखिरी तर्क दिया, ''अच्छा, एक बात बताओ। सुखिया को उसकी मां की गोद से छीन अपनी गोद भरना तुम्हें ठीक लगता है क्या ? क्या यह मानवीयता है ? मैं आवेश में भी हंस दी।

हर रोज की तरह आलोक को ऑफिस के लिए विदा कर चाय का प्याला हाथ में ले तन को सहलाती गुनगुनी धूप में मैं बाहर के बगीचे में बैठी थी। अपनी बगिया में खिले सुंदर फूलों को निहारते हुए, लोहे के जालीदार गेट के बाहर खेलते बच्चों को देखने लगी। वहीं सुखिया मैली–कुचैली फ्रॉक पहने, नाक सुकड़ाती, अन्य सभी बच्चों से कट, सड़क पर कोयले की आड़ी–तिरछी रेखाओं से स्टापू बनाए तन्मयता से उछल–उछल कर खेल रही थी।

वह सदा ही मुझे अन्य बच्चों से दूरी बनाए दिखती थी। खेलते–खेलते थक कर वहीं निढाल हो बैठ गई। ..... फ्रॉक के अंदरूनी हिस्से में बनी जेब से कागज में लिपटी रोटी को निकाल उसे ऐसे देखा जैसे कोई मनपसंद मिठाई हो। अचानक उसकी नजर मुझसे मिल गई। एक क्षण को वह सहमी, फिर उठी खड़ी हुई ।

लोहे के गेट के पास कुछ दूरी बनाए हुए उसने मुझे पुकार कर कहा, ''अम्मा ! थोड़ा–सा अचार दे दो ना।'' मैंने स्वर को भरसक कठोर बनाकर कहा, '' क्यों खड़ी है ? भाग यहां से। एक तो शोर कर–कर के आराम नहीं करने देते और अब तेरी इतनी हिम्मत... ?

अभी मैंने बात पूरी भी नहीं की थी कि वह रूआंसी हो बोल उठी, '' हम पर काहे गुस्सा होती हो अम्मा! हम तो चुपचाप अकेले ही खेलते हैं।'' उसकी मासूमियत से कही बात ने दिल को छू लिया। मैं उठी और कहा, ''अच्छा ठहर, लाती हूं।''

अंदर जाकर दोने में मैंने उसे रात की आलू की सब्जी ला कर दी तो उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। जब मैं उसे सब्जी दे रही थी तो मैंने देखा कि उसने इस सावधानी से सब्जी ली कि उसका हाथ मेरी उंगलियों से छू न जाये। मैंने यूं ही जिज्ञासावश जानत–बूझते भी उससे पूछा, ''तेरा नाम क्या है। तू सब बच्चों से अलग क्यों खेलती है?''

मेरे पूछने पर भावहीन चेहरा लिए उसने तपाक से जवाब दिया, ''मेरा नाम सुखिया है। मैं अछूत हूं न, इसलिये अलग खेलती हूं।'' कुछ सोचते हुए अनायास मेरे मुंह से निकला, तो ..... ?'' मेरे इस उहापोह में उलझे 'तो' को न तो वह समझ सकी और न ही उसने इसका कोई उत्तर देना ही आवश्यक समझा। वह तो मुझसे मिली सब्जी में रोटी भिगो–भिगो खाने में मस्त हो गई। अब तो यह मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। उसे बिना मांगे अब मैं बासी सब्जी, रोटी, बिस्कुट आदि देने लगी। एक दिन मैंने उसे साबुन दिया और कहा, ''कितनी गंदी बनी रहती है तू, कल नहा कर आना।''

उसने हौले से सिर हिलाकर हामी भर दी। अगले दिन सुखिया को देख मैं हैरान रह गई। वह काली जरूर थी पर नहाने से उसके तीखे नैन–नक्श उजले से हो एक अलग ही आभा बिखेर रहे थे।

मैं उसे देखती ही रह गई। उसका आना, मुस्कुराना, बतियाना, मुझसे सब्जी मांगना सब मेरी ममता को पोषित कर उसमें नए रंग भर रहे थे। टकटकी लगा, उसे देखते–देखते अनायास ही मुझे वह सड़क दुर्घटना याद हो आई, जिसने मुझसे मेरी 5 साल की नन्हीं को ही मुझसे नहीं छीना था वरन् कभी मां न बन पाने का कलंक भी मेरे भाग्य में लिख दिया था।

कितनी अकेली, उदास और चिड़चिड़ी हो गई थी मैं। ऐसे में सुखिया का खेल देखते, उसे निहारते कब ममता का एक आत्यमीयता भरा पुल हम दोनों के मन की राह में बिछ गया, हमें पता ही नहीं चला। उसे खेलते और चहकते हुए देखना मेरी आदत सी बन गई थी। अब मैं सुखिया की चर्चा आलोक के सामने भी करने लगी थी। आलोक यह सोच कर खुश थे कि मैं अपने अकेलेपन से बाहर निकल रही हूं।

अचानक ही सुखिया की आवाज से तंद्रा टूटी, ''अच्छा अम्मा, आज कुछ नहीं दोगी क्या ? चलें।'' आज सुखिया को यों चहक कर बोलते देख मेरी ममता ने उसे अनजाने में गोद में उठा भींच लिया और कहा, ''अहा! आज तो बहुत प्यारी लग रही हो। आज तो तुम्हें मैं बहुत सारी चीजें दूंगी। चल, भीतर, चल।''

वह मेरे इस प्यार भरे व्यवहार पर सहम भी रही थी और अपनी तारीफ सुन इठला भी रही थी। पर भीतर मेरे घर में जाते हुए, सामान लेते हुए वह खुद को भाग्यवान समझ रही थी। मुझे हाथ हिलाते हुए उसने मुझसे विदा ली। अगले दिन रोज की तरह मैं सुखिया की प्रतीक्षा करने लगी पर सुखिया नहीं आई। दो–तीन दिन बीतने पर मुझसे रहा न गया।

मैंने आलोक को उसका पता लगाने को कहा। आलोक ने मुझे झिड़क दिया। गली में खेलती एक अछूत लड़की से तुम्हारा क्या रिश्ता.....? मैंने अपनी उफनती भावनाओं को रोकते हुए कहा, ''कोई नहीं, सिर्फ इंसानियत का।'' आलोक सब समझते थे, पर मेरे हठ के सामने उन्हें झुकना ही पड़ा। पूछते–पूछते मैं और आलोक बदबूदार गलियों से होते सुखिया के घर पहुंचे तो देखा, वह एक चारपाई पर लेटी हुई थी।

उसके पांव पर प्लास्टर बंधा था। दर्द से वह छटपटा रही थी। पास बैठी उसकी मां से पता चला कि मुझसे मिल जब वह लौट रही थी तो कार से टकरा कर पैर की हड्डी तुड़वा बैठी। मैं सुखिया के इलाज की तसल्ली दे, आलोक के साथ लौट आई। रास्ते में एक तूफान मेरे हृदय में हड़कम्प मचा रहा था। आलोक न जाने क्या–क्या कर रहे थे, पर मैंने आलोक की किसी बात को न तो सुना, न जवाब ही दिया।

मैं अपने मन में सुखिया को अपने पास.....बहुत पास लाने का निश्चय कर चुकी थी। घर पहुंच कर जब आलोक को मैंने अपना निर्णय सुनाया तो वह लगभग चीखते हुए बोला, ''दिमाग तो खराब नहीं हो गया तुम्हारा...? एक तो वह गंदी बस्ती में रहने वाली, फिर अछूत.....लोग क्या कहेंगे।'' पर मैंने आलोक को अपना निर्णय सुनाते हुए कहा, '' क्या कहेंगे आलोक ? वह तो जन्म से अछूत और गरीब है पर तू तुम्हारी सोच समाज की यह मानसिकता.....यह तुम्हें अछूत और घृणित नहीं लगती ? ''

मैं क्रोध और आवेश में हांफ रही थी। आलोक ने मुझे समझाने को आखिरी तर्क दिया, ''अच्छा, एक बात बताओ। सुखिया को उसकी मां की गोद से छीन अपनी गोद भरना तुम्हें ठीक लगता है क्या ? क्या यह

मानवीयता है ?'' मैं आवेश में भी हंस दी। ''आलोक मैं इतनी खुदगर्ज नहीं हूं कि अपनी गोद सजाने के लिए किसी और की गोद उजाड़ दूं। मैं तो अपनी ममता सुखिया पर वार कर उसे समाज में सही मुकाम देना चाहती हूं। वह जन्म से गरीब है। मैं उसका दायित्व लेना चाहती हूं आलोक। इतना तो मैं कर ही सकती हूं ना।''

मेरी तीखी हंसी में छिपा दर्द आलोक से छिपा न रहा। वे मुझसे सहमत हो गये। हमने उसकी मां से बात कर उसका इलाज करवाया। सुखिया दिन का बहुत सा समय मेरे साथ बिताती है। वह स्कूल जाती है। मैं खुद उसे पढ़ाती हूं। उसकी भाषा, चाल–ढ़ाल सब बदल चुकी है।

वह अम्मा कह मुझे मेरी ममता को तृप्त करने का सौभाग्य देती है। रात तक वह अपने घर, अपनी मां के पास लौट जाती है। उसने हम दोनों के जीवन में अपार खुशियां भर दी हैं।

सुखिया और उसकी मां सोचती हैं कि मैंने उन पर उपकार किया है पर मुझे लगता है कि सुखिया की मां ने सुखिया को मेरे जीवन में ला ममता का वो अनुपम उपहार मुझे दिया है, जो विधाता भी मुझे नहीं दे सकते थे। मुझे गर्व है कि समाज की संकीर्णताओं के अंधेरे को पार कर मैं सुखिया के जीवन में उजाला भर पाने में सफल रही। मेरा यह प्रयास हम सबके लिए नई सुबह की शुरुआत बन गया।

**शंकुतला मित्तल**
**लीलावती विद्या मंदिर,**
**शक्ति नगर, दिल्ली**

# निष्ठा

**निष्ठा ने तन, मन, धन लगाकर पांच वर्ष की श्रेया को पाला। उसकी पढ़ाई, खेलकूद, हर फरमाइश पर जान छिड़कती। श्रेया शहर की पहली नेत्रहीन डॉक्टर बनी तो पूरा शहर रवि और निष्ठा को जानने लगा। निष्ठा का हर कोई उदाहरण देता। श्रेया हर कार्यक्रम में कहती, " मैंने दो नहीं, चार आंखों से स्वप्न देखा था– मम्मी और पापा की।"**

प्रयाग की दादी चिल्लाती हुई निष्ठा के घर का दरवाजा खटखटने लगी। निष्ठा ने जैसे ही दरवाजा खोला तो चार बातें सुनाते हुए कहा, "कितने बार कहा है निष्ठा, प्रयाग को खाने को कुछ मत दिया कर, अब देख कैसे उल्टियां कर रहा है। अरे ! निःसंतान है तो मेरे पोते को खाएगी ?"

कॉलोनी में सन्नाटा, महिलाओं का जमावड़ा, एक महिला बोली, "सही तो है, बाल–बच्चे नहीं हैं तो दूसरों के बच्चों पर काहे नजर गड़ाये रहती है ?" दूसरी महिला बोली, "पापिन है इसलिए बाल–बच्चे नहीं हो रहे हैं।" तीसरी महिला ने कहा, " अरे मैं तो अपने बच्चों के ऊपर ऐसी चुडैल निःसंतान औरत की छाया भी न पड़ने दूं।"

तभी निष्ठा ने कहा, " दादीजी, ताजे दूध की बनी हुई आइसक्रीम थी। प्रयाग के साथ और बच्चों ने भी तो खाई थी, उन्हें तो उल्टी नहीं हुई।"

प्रयाग की दादी ने कहा, "अरी दूध की धुली, इतना ही खिलाने का शौक है तो अनाथालय से बच्चे गोद क्यों नहीं ले लेती ? दूसरों के बच्चों को डकार के ही दम लेगी। अभी तो जाती हूं, आने दे तेरे खसम को फिर बताती हूं।"

रवि ने समझाते हुए कहा, " तू क्यों सारा दिन कॉलोनी के बच्चों को खिलाने–पिलाने में बर्बाद करती है ? क्यों नहीं ट्यूशन क्लासेस शुरू करती ? खुद का भी ज्ञान बढ़े और विद्या दान से बड़ा दान नहीं।" निष्ठा तिलमिलाकर बोली, "मार डालो मुझे, जहर दे दो, मुझे जीने का कोई हक नहीं क्योंकि मैं निःसंतान हूं, मेरी छाया बच्चों पर पड़ेगी तो उन्हें भी दोष लगेगा, मैं पापिन हूं।" और फूट–फूट कर रोने लगी।

रवि, निष्ठा का रौद्र रूप देखकर कांप गया। उसे ऐसा लगा कि सच में निष्ठा खुदकुशी न कर बैठे। फिर मिठास भरे लहजे में कहा, "निष्ठा, मेरे कहने का मतलब तुम्हारा दिल दुखाना नहीं है।" रोते हुए निष्ठा ने कहा, "तो फिर चलो, इसी वक्त हम अनाथालय से बच्चा गोद लेंगे।"

निष्ठा के छलकते आंसुओं को पोंछते हुए रवि ने कहा, " ठीक है, तुम तैयार हो जाओ। हम आज ही इसी वक्त ही बच्चा गोद लेंगे।"

अनाथालय संचालिका ने कहा, "आज और इसी वक्त, जी सॉरी, कुछ जरूरी कागजी प्रक्रिया में एक–दो दिन का वक्त लगता है।" निष्ठा बोली, " नहीं, आज अभी चाहिए। आप जरूरी कागजी प्रक्रिया करते रहिएगा।"

संचालिका ने कहा, '' संच कहूं तो आज पांच बच्चों का गोदनामा हुआ है। तीन बच्चे और हैं जिन्हें देखकर कोई गोद नहीं लेता, अगर देखना चाहो तो देख लो।''

संचालिका ने हॉल में जागर आवाज दी–'तुलसी, कविता, श्रेया.....।' तीनों आवाज सुनकर एक साथ बोलीं–''बड़ी मां.....।''
तुलसी अपंग थी, कविता कुपोषण की शिकार और श्रेया नेत्रहीन। रवि असमंजस की स्थिति में था। गोल चंदा सा चेहरा, सांवले होठों पर मुस्कान लिए श्रेया ने पूछा–''बड़ी मां, हमारे पापा–मम्मी भी आ गये ? निष्ठा ने श्रेया को गोद में उठाते हुए दुलारते कहा–''हां मैं आपकी मम्मी हूं।'' लेकिन रवि ने कहा, ''नेत्रहीन ?'' निष्ठा ने कहा, '' मैं नेत्रहीन को जन्म देती तब .....''। रवि निरुत्तर रहा।

निष्ठा ने तन, मन, धन लगाकर पांच वर्ष की श्रेया को पाला। उसकी पढाई, खेलकूद, हर फरमाइश पर जान छिड़कती। श्रेया शहर की पहली नेत्रहीन डॉक्टर बनी तो पूरा शहर रवि और निष्ठा को जानने लगा। निष्ठा का हर कोई उदाहरण देता। श्रेया हर कार्यक्रम में कहती, '' मैंने दो नहीं, चार आंखों से स्वप्न देखा था– मम्मी और पापा की।''

निष्ठा ने श्रेया की फाइल में एक फॉर्म देखा तो निकाल कर रवि के पास आई और बोली, ''मैं इसे भरना चाहती हूं।'' रवि ने फॉर्म हाथ में लिया और देखा तो कहा, '' ठीक है सिग्नेचर कर दो, मैं भरकर जमा कर दूंगा।''

श्रेया ने अपनी फाइल में वहीं फॉर्म नहीं पाया तो बोली ''मम्मी! आपने मेरी फाइल से फॉर्म निकाला क्या ? बड़ी मां ने बुलवाया था। न जाने कहां गया ?'' निष्ठा ने कहा, '' नहीं, मैं तो तेरी फाइलें छूती भी नहीं।'' श्रेया ने कहा, ''अब, आज सीधे बड़ी मां को देते आऊंगी, बहुत दिनों से मांग रही हैं।''

रवि को आज अचानक कंपकपी उठी तो निष्ठा ने तीन–तीन रजाइयां ओढाईं लेकिन रवि की ठंडक जाने का नाम नही लेती। श्रेया को फोन कर बताया तो श्रेया फौरन आ गई। श्रेया ने पाया कि पापा पसीने से तरबतर हैं। श्रेया ने पूछा, पापा क्या हुआ है?'' रवि ने श्रेया के दानों हाथ पकड़ कर सीने से लगाते हुएकहा, ''बेटी तू आ गई।''

श्रेया ने कहा, '' हां पापा हां। श्रेया तुरंत समझ गई और निष्ठा से बोली, ''मम्मी, पापा को ये गोलियां खिलाइये पापा को हार्ट अटैक आया है। हमें जल्दी हॉस्पिटल जाना होगा।''

हॉस्पिटल पहुंचने पर डॉक्टरों ने जांच के बाद रवि को मृत घोषित कर दिया। श्रेया और निष्ठा का रो रो कर बुरा हाल था। जैसे ही श्रेया के डॉक्टर दोस्त को मालूम पड़ा तो वह दौड़ा चला आया और आते ही कहने लगा, ''अंकल को शीघ्र ऑपरेशन थियेटर ले चलो।''

रवि को तुरंत ऑपरेशन थियेटर ले जाया गया। श्रेया ने अपने दोस्त से कहा, ''ये क्या मजाक है ?.... दोस्त ने कहा, ''सॉरी श्रेया, अंकल शांत हो गये हैं लेकिन एक महीने पहले ही उन्होंने आंटी और उनका नेत्रदान का फॉर्म मुझे जमा करने को कहा था सो.....।

श्रेया उन आंखों से पापा को न देख सकी पर तस्वीर देख आंसू की झड़ी लग जाती है। निष्ठा को रवि पूर्णतः निष्ठावान बना गया और दुनिया जिसे निःसंतान कहती थी आज वही निष्ठा उनके लिए प्रेरणा बनी हुई है जो लोगों से कहती है–'नेत्रदान ही महादान है।''

**विनोद नायक**
**ज्ञान विकास उ.मा. विद्यालय,**
**नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र**

# संकुचित सोच

**राम प्रकाश जी बीच में टोकते हुए मुझे बोले, '' फर्क है आप में और उन लोगों में जो बिना सोचे–समझे जाति–रंग और भाषा को मानवता से ऊंचा दर्जा देते हैं। अपना घर तो खुद आप तोड़ रहे हैं। आपको पता है यह वृद्ध आश्रम उन वृद्धों से भरा है जो बड़े चाव से अपनी जाति की बहू अपने घर लाए और फिर उसी स्वजाति बहू ने उन्हें घर से निकाल दिया।**

'आनंद वृद्ध आश्रम' नाम पढ़ते ही मेरे चेहरे पर एक व्यंग्य भरी मुस्कान आ गई। क्या उम्र के इस पड़ाव पर अपनों से दूर भलाा किसी को इस जगह आनंद आ सकता है। अपना पहला कदम आगे बढ़ाते हुए मैंने ऑफिस की तरफ रुख किया जहां पहले से ही कोई विराजमान था।

आंखों में आंसू भरे अपनी व्यथा मिश्रा जी को, जो कि एक वृद्ध आश्रम के संचालक थे, सुनाते हुए कह रहे थे, ''मेरा नाम रामप्रकाश है। पिछले दिनों में हुए दंगों में मेरा पूरा परिवार खत्म हो गया। मेरी पत्नी, बेटा–बहू जिनकी एक वर्ष पूर्व ही शादी हुई थी, बेटी मुम्बई में ब्याही है और मुझे कैंसर है। अब इस उम्र और हालत में कहां बेटी के पास रहता, इसलिए शरण लेने आया हूं। धन तो पूरा बच्चों की पढ़ाई और शादी में खर्च हो गया। घर जाति के नाम पर हुए दंगों की बलि चढ़ गया।''

अचानक मिश्रा जी ने मेरी तरफ देखा और कहा, '' आइये पाण्डे जी, बाहर क्यों खड़े हो ? अंदर आइये।'' मैंने पलक झपकाई जैसे नींद टूटी हो। शायद में रामप्रकाश जी की व्यथा में लीन हो गया था। मिश्रा जी ने रामप्रकाश जी को ढांढस बंधाते हुए कहा, '' सब ठीक हो जायेगा। आप कमरा नं. 102 में जाकर आराम करिए, आपका सामान वहीं पहुंच चायेगा। अब मेरी बारी थी वजह बताने की कि मैं क्यूं सब कुछ छोड़कर इस आश्रम में रहने आया। मैंने नमस्ते कहते हुए कुर्सी सरकाई। मिश्रा जी ने कहा, '' आप ही हैं जिनसे मेरी फोन पर बात हुई थी। कहिए कैसे हैं आप ?''

मैंने कहा, '' सब ठीक हैं। बस मेरे आने की वजह शायद आपको विचित्र लगे और मैं रुक गया।'' शायद मिश्रा जी मेरे विचलित मन को भाप गये। उन्होंने कहा, ''आप आराम से यहां रहिए। हम फिर कभी बात करेंगे।'' कहते हुए मुझे बाहर ले गये और एक कमरे की तरफ इशारा करते हुए कहा, '' आप थोड़ा आराम करिए फिर सब यहां एकत्रित होंगे चाय के लिए तो मैं आपको सबसे मिलवाता हूं।''

थोड़ी देर में सबके साथ चाय पीते हुए परिचय हुआ। कितने खुश थे सब एक साथ मानों बरसों से साथ रह रहे हों। धीरे–धीरे मेरा भी सबसे परिचय हो गया और देखते–देखते कुछ दिन भी बीत गये।

एक दिन मैं बागवानी कर रहा था आश्रम में तभी रामप्रकाश जी मेरे पास आ खड़े हुए और मुस्कुराते हुए कहा, '' लगता है आपको बहुत शौक है बागवानी का। मैंने कहा, ''हां, एक बहुत बड़ा बगीचा जीवन में पीछे छोड़ आया हूं। वो तो वापस नहीं ला सकता, अब इसलिए इस बगीचे को सजाने की कोशिश कर रहा हूं।

रामप्रकाश जी वहीं मेरे पास आकर मेरी मदद करने लगे। '' लगता है कुछ खो दिया आपने मेरी तरह। क्या, आपका घर भी मेरी तरह दंगों की बलि चढ़ गया। ''अरे नहीं नहीं, मैंने हाथ धोते हुए कहा, ''जिन्होंने आपका घर जलाया उन्हीं में से एक मेरे आकर बस गया। बस इसलिए मैंने अपनी स्वेच्छा से घर छोड़ा।''

रामप्रकश जी एकटक मेरी तरफ देखते रहे। मैं कुछ समझा नहीं। उन्होंने कहा, '' मेरा इकलौता बेटा जिसे मैंने और मेरी पत्नी ने बड़ी मन्नतों से पाला, पढ़ाया–लिखाया। अभी कुछ साल पहले ही मेरी पत्नी का देहांत हो गया। मैंने सोचा मेरा बेटा मेरा सहारा बनेगा पर वो अपने साथ काम करने वाली एक मुसलमान लड़की को पत्नी बनाकर घर ले आया। अब आप ही बताइये, मैं कैसे उसके हाथ का खाना खाऊं जो एक मुसलमान है। बस मैंने घर छोड़ दिया। बेटे को बिन बताए यहां चला आया।''

रामप्रकाश जी अभी मेरी तरफ देख रहे थे। कुछ देर चुप रहने के बाद उन्होंने अपनी चुप्पी तोड़ी, ''बहुत हैरत है मुझे आपके विचारों पर। मेरा घर जिसने जलाया, न उन्हें पता था कि यह हिन्दू का घर है या मुसलमान का और ना मैंने देखा कि मेरा घर हिन्दू ने जलाया या मुसलमान ने। बस मेरा घर तबाह हुआ जाति के नाम पर। पर क्या आपकी बहू सेवा या सम्मान नहीं करती।''

''अरे नहीं नहीं, वो सब कर रही थी पर थी तो मुसलमान न! मैंने अपने बेटे को साफ कर दिया या इसे छोड़ो नहीं तो मैं घर में नहीं रहूंगा।''

रामप्रकाश जी बीच में टोकते हुए मुझे बोले, '' क्या फर्क है आप में और उन लोगों में जो बिना सोचे–समझे जाति, रंग और भाषा को मानवता से ऊंचा दर्जा देते हैं। अपना घर तो खुद आप तोड़ रहे हैं। आपको पता है यह वृद्ध आश्रम उन वृद्धों से भरा जो बड़े चाव से अपनी जाति की बहू अपने घर लाए और फिर उसी स्वजाति बहू ने उन्हें घर से निकाल दिया। क्या आपके बेटे की खुशी से बढ़कर ये जाति–भाषा या समाज है ?आपको इस उम्र में इस जाति–भेदभाव को बढावा न देते हुए अपनी सुशील बहू को स्वीकारते हुए एक मिसाल कायम करनी चाहिए।'' तभी बातचीत के बीच एक गांड़ी आकर रुकी और उसमें से मेरी बहू बाहर आई, मेरे पैर छूए और फिर रामप्रकाश जी के। होठों पर मुस्कुराहट, आंखों में आंसू लिए लिए बोली, ''पिताजी, मैंने आपको ढूंढ ही लिया। हमें माफ कर दीजिये और घर चलिए।''

रामप्रकाश जी मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए मुस्कुराए और मैं अपनी बहू के साथ घर की ओर चल दिया यह सोचते हुए कि इस आश्रम में भी हर रंग, जाति और समाज के लोग मिलजुलकर रहते हैं तो मैं उम्र के इस पड़ाव में कहां इस संकुचित सोच का शिकार हो गया।

**पूजा तिवारी**
**पीपल्स पब्लिक स्कूल**
**भानपुर, भोपाल, मध्य प्रदेश**

# हंसों का जोड़ा

**थोड़ी देर की चुप्पी के बाद उसने पूछ ही लिया, ''भाईसाहब! समय क्या हुआ है ?'' संबोधन कुछ अच्छा नहीं लगा परंतु जवाब दिया। साथ ही अपने प्रश्न को भी दोहरा दिया। जवाब में उसने कहा, ''अब मुझे किसी का इंतजार नहीं है।'' ''लगता है आप पति से झगड़ा करके आई हैं।'' ''हां संबंध तोड़कर आई हूं।'' मैंने उसके आसपास देखा, सामान नहीं था, फिर भी पूछ ही लिया, ''क्या घर छोड़कर आई हैं ?'' ''हां! सब कुछ छोड़कर ही आई हूं।''**

'पैदल घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है' इस उक्ति को मैंने केवल पढ़ा ही नहीं, महसूस भी किया है। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो जीने के लिए खाते हैं, मैं तो उनमें से हूं जो खाने के लिए जीते हैं और ऐसे लोगों लिए घूमना अनिवार्य हो जाता है, इसीलिए रोजाना भोजनोपरान्त रात को मैं सैर पर निकल जाता हूं।

घूमना अब मेरे लिए एक लत बन गई है। यदि न जाऊं तो भी तलब उठती है। अपनी इसी तलब की शांति के लिए एक रात जब मैं घूम रहा था तो पार्क की एक कोने वाली सीट पर लगभग 25–26 वर्ष की एक सुंदर महिला बैठी हुई थी।

मोबाइल में समय देखा तो 8:45 हो रहे थे। गर्मियों में यह समय बहुत अधिक नहीं होता। मैंने अपनी धुन में पार्क में पगडंडी पर चक्कर काटने लगा। जब थकान महसूस होने लगी तो अपनी रोज बैठने वाली बेंच की ओर पांव खुद ब खुद उठ गये। परंतु वहां तो अभी वही महिला बैठी हुई थी। मैं धीरे–धीरे उस ओर चलने लगा शायद अन्जान को देखकर वह अपने–आप उठकर चली जाए, परन्तु वह नहीं उठी और मैं भी बिना कुछ बोले अपनी पसंदीदा बेंच पर बैठ गया। इस पूरे घटनाक्रम में उस महिला ने एक बार भी मेरी ओर नहीं देखा।

यह तिरस्कार मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ और अब मैंने उससे पूछ ही लिया, ''आप किसी का इंतजार कर रही हैं ?'' उधर से अब भी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी।

मैं मन–ही–मन अपने धीरे बोलने की आदत पर झल्ला रहा था। उसी समय एक पक्षी की आवाज आई और उसने आवाज वाली दिशा में देखा, रात में पक्षी का बोलना बहुत अजीब लगा। मैंने उसी समय थोड़ी जोर से पूछा, ''किसी का इंतजार कर रही हैं ?'' उसने हौले से गर्दन घुमाकर मेरी ओर देखा और जिस नजर से देखा तो मुझे लगा कि यह नहीं देखती तो ही अच्छा था।

गुस्सा नहीं था उनमें, एक अजीब–सा सूनापन था। आंखें देख कर लगा कि अपनी होशियारी दिखाने के चक्कर में बेकार के झमेले में न पड़ जाऊं। शांत रहना ही ठीक था सो चुप रहा। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद उसने पूछ ही लिया, ''भाईसाहब! समय क्या हुआ है ?

संबोधन कुछ अच्छा नहीं लगा परंतु जवाब दिया। साथ ही अपने प्रश्न को भी दोहरा दिया। जवाब में उसने कहा, ''अब मुझे किसी का इंतजार नहीं है।'' ''लगता है आप पति से झगड़ा करके आई हैं।'' ''हां संबंध तोड़कर आई हूं।'' मैंने उसके आसपास देखा, सामान नहीं था, फिर भी पूछ ही लिया, ''क्या घर छोड़कर आई हैं ?'' ''हां! सब कुछ छोड़कर ही आई हूं।'' ''तो अब आप कहां जाओगी ?'' ''कही भी लेकिन घर में नहीं।''

अब मेरे सामने प्रश्न नैतिक दायित्व का था। एक अकेली लड़की को रात में इस नीम बेहोशी की हालत में छोड़ना मुझे कुछ ठीक नहीं लगा तो मामले की तह तक जाना ही मैंने उचित समझा।

''क्या आप सास–ससुर से परेशान हैं ? ''नहीं, वो तो दोनों ही नहीं हैं।'' ससुर हैं नहीं और सास गांव में रहती है।'' ''फिर पति से किस बात की नाराजगी है ?'' ''वो मेरी कोई बात नहीं मानते।''

''मुझे लगता है आपको पति कम और नौकर अधिक चाहिए।'' बात कड़वी थी सो मैं कड़वा सुनने को एकदम तैयार था। ''सारे मर्द एक जैसे होते हैं। जब हम सारा काम पति का करती हैं तो कुछ फर्ज तो पति का भी होता है।'' मैंने हां में हां मिलाई। बहस में मजा आने लगा था सो एक तीर और छोड़ा–''फर्ज और गुलामी में तो अंतर होता है।'' अबकी बार जवाब तेज आवाज में दिया गया।

''हां होता है ना फर्ज। केवल बीवी के लिए होता है और पति का नम्बर आता है तब वही फर्ज गुलामी बन जाता है।'' मुझे लगा कि वो मुझे ही अपना पति मानकर सारी भड़ास निकाल रही थी। इसलिए बहस को आगे न बढ़ाने में ही मैंने अपनी भलाई समझी और बात की दिशा बदलते हुए कहा, ''परंतु यह तो घर छोड़ने का कोई ठोस कारण नहीं है। ''रोज–रोज  की खिचखिच से तो अच्छा है कि हम रास्ते ही बदल लें।'' ''बिल्कुल सही कहा आपने।''

''परंतु व्यावहारिक नहीं है।'' मैंने कहा। ''क्यों नहीं है ?''  मैंने अपना रास्ता बदल ही लिया है न। तो फिर बताइये, अब आप कहां जाएंगी ? अपने पिता के यहां ?'' ''नहीं पिता नहीं है और माता जी तो खुद भैया के पास रहती हैं।'' ''तो आप भाई के पास ही जायेंगी?'' ''नहीं उनकी भी अपनी जिन्दगी है। बच्चे हैं, भाभी है। क्यों क्या कोई महिला अकेली नहीं रह सकती है क्या ?'' ''बिल्कुल रह सकती है, पर कितने दिन ?''मैंने पूछा। अबकी बार जवाब उसके आंसुओं ने दिया। मैंने समझाया–''तुम कमजोर नहीं हो। परंतु दिलेरी का मतलब अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना नहीं होता। क्या तुम्हारे पति ने तुम पर कभी हाथ उठाया है ?'' ''नहीं।''

''तो फिर केवल अंहकार की संतुष्टि के लिए अपना और अपने पति का जीवन बर्बाद करने का तुम्हें कोई हक नहीं है।''

हृदय का मैल तो आंसुओं से पहले ही धुल चुका था। अब वो उठ खड़ी हुई और बिना कुछ बोले चली गई। मुझे लगा कि आज यदि इसके घरवालों ने इसका पक्ष लिया होता तो एक और हंसती–खेलती गृहस्थी तलाक की भेंट चढ़ चुकी होती और दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गया होता। आकाश में देखा तो चांद बादलों की ओट से निकल आया था और मेरे कदम भी घर की ओर स्वतः ही चल पड़े थे।

**ताम्रध्वज शर्मा**
**टैगोर पब्लिक स्कूल**
**वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान**

# सांध्य–वेला

**गायित्री को ऑटो में बिठाकर घर की ओर चल दी। विचारों का द्वंद्व उसके मन में चल रहा था। आज विकास की अंधी दौड़ में जैसे सब भागे चले जा रहे हैं। वे हाथ, जिनका सहारा लेकर चलना सीखा, जब से लड़खड़ाए तब उन्हें ही बेबस, बेसहारा छोड़ दिया। पहले का समय जब आज की तरह जगमगाती रोशनियां नहीं थीं, तब लोगों के मन रोशनी से भरे हुए थे।**

टन टन टन, छुट्टी की घंटी बजते ही जैसे कुछ मिनटों के लिए माहौल चहल–पहल से भर उठा। बच्चे अपने–अपने अभिभावकों के साथ, कुछ साइकिलों से, बसों से, कुछ पैदल ही अपने–अपने घर चल दिये। कुछ देर मोटरगाड़ियों, स्कूटरों, आवाजों का शोर, फिर एकदम शांति। बच्चों के जाते ही शिक्षक–शिक्षिकाएं भी अपने–अपने साधनों से घर की ओर चल दिये।

आकाश में बादल छाये थे। मौसम में काफी उमस थी। पसीने से कपड़े भीग जाते थे। अध्यापिका गायित्री ने अध्यापिका शशि से पूछा, ''बहनजी, आप घर जा रही हैं, मुझे भी ले चलिये। आपकी तरफ कुछ काम है।''

''क्यों नहीं, आ जाओ, लेकिन तुम्हें वहां जाना कहां है ?'' शशि ने उसे कार में बैठने का इशारा करते हुए पूछा।

गायित्री की मुख–मुद्रा गंभीर थी। वह गाड़ी में अगली सीट पर शशि की बगल में बैठ गई। शशि को लगा उसे उत्तर देने में संकोच हो रहा है। फिर उसने कुछ नहीं पूछा।

कुछ देर चुप रहने के बाद गायित्री बोली, ''दीदी, मुझे आपके घर के पीछे वाली गली में जाना है वृद्धाश्रम में। मेरे एक ताऊजी हैं। ताई जी का देहांत हो चुका है। संतान कोई है नहीं। उन्होंने मुझे बेटी की तरह पाला। मेरे विवाह में अपनी सारी पूंजी लगा दी। ताई जी के देहांत के बाद मेरे माता–पिता, भाई–भाभी के साथ रहने लगे। आजकल की व्यस्त दिनचर्या में सब अपने–अपने काम में लगे रहते हैं। वे अकेले और अकेले पड़ते गये। एक निःसंतान और धनहीन व्यक्ति की भला किसे परवाह ? ऊपर से गजब की खुद्दारी। एक दिन खाने–पीने को लेकर भाभी से कहासुनी हो गई।

भाई ने भाभी का पक्ष लिया। मां–बाप कुछ न बोल सके। खुद्दार बुजुर्ग ने उसी दिन घर छोड़ दिया और वृद्धाश्रम में शरण ली। बेटी की ससुराल में रहना शायद उन्हें नागवार लगा होगा। मुझे जबसे पता चला हैं दिल बड़ा बेचैन है। पति ने कह दिया है देख आओ, लेकिन यहां लाने की जरूरत नहीं है।''

गायित्री की आंखों में दुख के साथ–साथ बेचैनी साफ झलक रही थी। शशि का घर आ चुका था लेकिन वहां न जाकर उसने गाड़ी अपने घर के पीछे वाली गली में मोड़ दी। कुछ आगे जाने पर एक पुरानी सी इमारत दिखाई दी। उस पर एक बोर्ड लगा था– बसेरा।

उसने गाड़ी एक तरफ खड़ी की। दोनों इमारत के अंदर गईं। दरवाजे के पास एक वृद्धा बैठी थी। सूती धोती पहने , सूखा मुंह, पथराई सी आंखें। उन्हें देखते ही खड़ी हो गई और दोनों हाथों जोड़कर नमस्ते की जैसे कि उनकी बहुत परिचित हो दोनों ने वैसे ही आदर से जवाब दिया। दोंनो दफ्तर की ओर बढ़ीं ताकि गायित्री के ताऊजी के बारे में जानकारी पा सकें।

आगे उन्हें और भी वद्ध तथा वृद्धाएं मिलीं। उन्होंने भी उन्हें उसी प्रकार नमस्ते की। शायद यहां का नियम था कि हर आने वाले का स्वागत इस प्रकार किया जाय। आश्रम के व्यवस्थापक एक संत थे। धनाढ्य परिवार के थे। विवाह नहीं किया था। मंदिरों में प्रवचन देते थे और यहा आश्रम चलाते थे। दफ्तर में ही मिल गये। उन्होंने नमस्कार करके बड़े सम्मान से बैठाया। बताने लगे, ''कुछ भले और सहृदय धनवानों के सहयोग से आश्रम चला रहा हूं। यहां के कुछ नियम हैं, जिनका पालन सभी को करना पड़ता है। इनकी दिनचर्या निश्चित है। जिन्होंने अपने बच्चों के सुख के लिए अपना सारा जीवन, सारी पूंजी, परिश्रम लगा दिया। जीवन का वसंत बीत जाने पर और पतझड़ आने पर वे अपनों के द्वारा ही त्याग दिये गये। एक सज्जन तो ऐसे हैं जिनके चार चार सिनेमा हॉल चलते थे। बूढ़े हो गये और लड़कों ने सारा काम संभाल। लिया पोते–पोतियों को उनकी रोक टोक सहन नहीं हुई। उन्हें त्याग दिया गया।''

इतने में एक पतली दुबली स्त्री उन सब के लिए चाय बनाकर ले आई। बहुत हंसमुख थी वह। ज्यादा बूढ़ी भी नहीं थी। व्यवस्थापक शर्मा जी ने कहा, '' ये पार्वती है। पहाड़ की रहने वाली है। पति मर गया। मायके में आ गई। स्वभाव से थोडी गुस्सैल है। भाई–भाभी का शासन सहन नहीं कर पाई। पिता अब रहे नहीं। मां बेबस थी। ये चुपचाप घर से निकल पड़ी। सीधे हरिद्वार पहुंची। वहां अपने हाथ–पांव बांधकर गंगा जी में कूद पड़ी। बचा लिया गया।तब से इस आश्रम में है। यहां का कामकाज संभालती है।''

फिर उससे बोले, '' क्यों पार्वती! अब तो नहीं कूदेगी गंगा में। जवाब में पार्वती खुक–खुक करके हंसने लगी। शशि सोच रही थी ''कैसे–कैसे हंसमुख लोग हैं ? शायद यही जीवन है।''

शर्मा जी ने चपरासी भेज गायित्री के ताऊजी को बुला भेजा। गायित्री के ताऊजी कोई 79–80 वर्ष के बुजुर्ग थे। मझोले कद के पतले–दुबले आदमी। सफेद कुर्ता–पाजामा पहने। गायित्री से विशेष प्रेम था उसे। गायित्री उनसे लिपटकर रोने लगी ''ताऊजी,'' मुझे बिलकुल पराया कर दिया। किसी ने कुछ भी नहीं बताया। अब मैं आपको यहां नहीं रहने दूंगी। आपको मेरे साथ चलना ही होगा।''

गायित्री ने सोच लिया था कि उसे अब अपने पति के खिलाफ जाकर अपनी अंतर्रात्मा सुननी ही होगी। वह आर्थिक रूप से सक्षम थी। पति का विरोध भी कुछ दिनों में क्षीण ही पड़ जायेगा।

ताऊजी बोले, ''बेटी, तुम्हारे, भाइ–भाभी मुझे बोझ समझते हैं। तुम्हारे माता–पिता की स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं है। चलते समय तेरा बहुत ध्यान आया था, लेकिन मैं नहीं चाहता मेरी वजह से तुम्हें ससुरालवालों की बात सुननी पड़े। यहां हर तरह से हमारी देखभाल की जाती है। बस अपनों से बिछड़ने का दुख है। तू मुझसे मिलने ऐसे ही आते रहना।''

गायित्री ने उन्हें बहुत मनाने की कोशिश की लेकिन वे टस से मस नहीं हुए। वे उन्हें आश्रम दिखाने ले गये। बड़े–बड़े हॉलनुमा कई कमरे थे। एक कुर्सी मेज। दो लोहे की खानेदार अलमारियां थीं। एक–एक खाना हरेक को मिला था। बाथरूम और टॉयलेट संयुक्त रूप से था। बीच में आंगन था, जिसमें पूजा–पाठ और प्रवचन होते थे। एक बड़ी सी रसोई थी।

वहां उस समय अन्य काम करने वालों के साथ एक सुसंस्कृत संपन्न महिला थी, जो खाना बनाने में उनकी मदद कर रही थी। कहने लगी, '' जीवन में आराम ही आराम है मगर चैन नहीं। पति व्यवसाय में व्यस्त हैं। बच्चे विदेश में हैं। समय कटता नहीं है। बेचैनी रहती है। जब मन होता है, यहां आ जाती हूं। इन लोगों के लिए कुछ करती हूं, तो अच्छा लगता है।

उसने दाल साफ की और कुकर में चढ़ाने लगी। काफी वक्त हो चला था। गायित्री ने अपने ताऊजी से विदा ली। जाते समय जो भी मिला उसी तरह अभिवादन करते हुए। परिचित होने का अहसास दिलाते हुए। शशि को लगा कि वे अनगिनत शून्य में ताकती आंखें बहुत दूर तक उसका पीछ करती रहीं।

गायित्री को ऑटो में बिठाकर घर की ओर चल दी। विचारों का द्वंद्व उसके मन में चल रहा था। आज विकास की अंधी दौड़ में जैसे सब भागे चले जा रहे हैं। वे हाथ, जिनका सहारा लेकर चलना सीखा, जब से लड़खडाए तब उन्हें ही बेबस, बेसहारा छोड़ दिया। पहले का समय जब आज की तरह जगमगाती रोशनियां नहीं थीं, तब लोगों के मन रोशनी से भरे हुए थे वे मानते थे–''*अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।*

आज प्रगति के इस दौर में चारों तरफ जगमगाती रोशनी है। तब अंधेरा कहां गया ? शायद सब सिमटकर मन में समा गया। महाप्राण निराला की पंक्तियां याद आईं–

*मैं अकेला*
*देखता हूं रही*
*मेरे दिवस की सांध्य–वेला*
*पके आधे (सारे) बाल मेरे*
*हुए निष्प्रभ गाल मेरे, चाल मेरी मंद होती जा रही है,*
*हट रहा मेला।*

अचानक उसने फैसला कर लिया कि सारी व्यस्तताओं के बीच समय निकालकर हफ्ते में एक दिन बसेरा जायेगी। साथ ही अपने हाथों से बनाकर लड्डू या कुछ और ले जायेगी। अपनेपन को तरसते लोगों के बीच लड्डुओं के साथ अपनापन भी बांटेगी। इस फैसले के साथ ही दिल के किसी कोने में सुकून महसूस कर रही थी। घर पहुंची सामान्य दिनचर्या समाप्त करके पलंग पर पड़ गई।

इधर कई रोज से रात में नींद नहीं आती थी। नींद की दो गोलियां पतिदेव ही उसे दिया करते थे। रोज की तरह नींद की गोलियां और पानी का गिलास लेकर उसके पति सिरहाने खड़े थे और शशि गहरी नींद सो रही थी।

**वीना मेहरा**
**कैंपस स्कूल, पंतनगर,**
**उत्तराखण्ड**

# आत्म–मंथन

**गुरुजी तो थे दया की मूर्ति। उनकी मृत देह में से उनकी आत्मा से आवाज आई, "बेटा, मैंने तो तुम्हें उसी समय माफ कर दिया था इसलिए बेटा, अब कभी मत रोना। पर बेटा मेरी एक बात अवश्य याद रखना चाहे गुरु से क्यों न पड़ जाये तुम्हें अपमानित होना, परन्तु अपने गुरु को कभी अपमानित मत करना।"**

एक दिन समाचार पत्र में आया ' क्रोध में अंधे होकर छात्र ने गुरु का किया सफाया।' एक शिक्षक पिता ने जब सुबह–सुबह यह पढ़ा तो घबराकर अपने बेटे को नींद से जगाते हुए बोला, "बेटा, जल्दी उठ। देख तो सही यह क्या हो गया ? 21 वीं सदी का दृश्य 20वीं सदी में ही सामने आ गया। देख बेटा, मेरी बात मान। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है शिक्षक बनने का सपना छोड़ दे।"

अपने पिताजी की बात सुनकर बेटा बोला, " पिताजी! मैं एक शिक्षक का बेटा हूं। शिक्षक बनकर ही दिखलाऊंगा और आप ही सोचिये ना पिता जी, यदि दुनिया के सभी पिता अपने पुत्र से यही कहेंगे तो यह दुनिया कैसे चल पायेगी तथा डॉक्टर, वकील इंजीनियर और कलेक्टर बनने के सपने देखने वालों को कौन सी पीढ़ी पढ़ाने आयेगी? "

धीरे–धीरे समय गुजरा। बेटे ने की मनमानी, आखिरकार वह बन ही गया शिक्षक, क्योंकि उसने मन में थी ठानी।

एक दिन हुआ यूं गुरु व शिष्य में कुछ कहासुनी हो गई, आपस मैं तनातनी हो गई। शिष्य ने गुरुजी को कक्षा से बाहर जाते ही बोला, " इन गुरुजी को तो मैं चौराहे पर देख लूंगा। आज के बाद इनको कक्षा में तो क्या इस दुनिया में भी नहीं पाओगे।

उसकी इस बात को सुनकर सभी छात्र डर गये। एक छात्र ने कहा, " हम सभी इसके मित्र हैं। इसे आज यदि हमने अपनी मित्रता का फर्ज नहीं निभाया तो हमारी मित्रता को लानत है।"

इस पर दूसरे मित्र ने कहा, " तो ठीक है, हम सभी मिलकर इसे देंगे अपनी दोस्ती का वास्ता, गुरुजी को बचाने का अब बस यही है एक रास्ता। अपने मित्रों की बात सुनकर एक मित्र बोला, "ये तो सब ठीक है किंतु 'क्रोध पाप का मूल है, इसे इस समय कुछ भी समझाना हमारी बहुत बड़ी भूल है। इसलिए हम सभी को धैर्य रखना होगा तथा शांति से काम लेना होगा।"

इधर जैसे ही उसका गुस्सा शांत हुआ, सबने उससे कहा, "अरे मूर्ख! तू क्या करने जा रहा है। इनसे अच्छे गुरुजी अपने विद्यालय में कहां है ? जरा सोच जैसे तूने कहा है, वैसा अगर तुझसे हो जायेगा, तो तू ही बता बेटा, अपना कोर्स पूरा कौन करवाने आयेगा ?"

उसने ठंडे दिमाग से सोचकर कहा, " बात तो तुम लोग ठीक कहते हो। खैर, कोई बात नहीं, जल्दी क्या है ? आज का काम कल हो जायेगा। अपना कोर्स तो पूरा हो जायेगा।"

धीरे–धीरे समय गुजरा। ठीक समय पर गुरुजी के द्वारा प्रेमपूर्वक कोर्स पूरा हुआ। गुरुजी को तो शिष्य की चाल का पता भी नहीं था। लेकिन गुरुजी की कर्तव्यनिष्ठा व निस्वार्थ प्रेम की भावना को देखकर वह शिष्य द्रवित हो उठा और सोचने लगा मैं कितना मूर्ख हूं। मैं जिस परिवार से हूं, उसमें तो चींटी को मारना पाप है और मैं किसे मारने जा रहा था, जिसका दर्जा माता–पिता और भगवान से भी ऊपर है। उनको मारने के बारे में तो सोचना भी महापाप है।

खैर जो भी हुआ अच्छा ही हुआ। मैं कल ही गुरुजी के पास जाऊंगा और उनके सामने अपनी बुरी नियत का पर्दाफाश करके अपनी गलती की माफी मांग कर प्रायश्चित करूंगा। परन्तु उसकी ये दिली तमन्ना दिल में ही रही गई।

इधर विद्यालय से घर जाते समय गुरुजी का अचानक हार्ट फेल होने से मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु पर विद्यालय में हाहाकर मच गया। उस छात्र ने सुना तो उसका हाल बेहाल हो गया। वह गुरुजी के घर आकर, गुरुजी के चरणों में गिरकर फूट–फूट कर रोने लगा।

बोला, ''गुरुजी! आपके मरने से तो मैं पापी बिना मौत मर गया। उठिये गुरुजी, उठिये। सिर्फ एक बार मुझ पापी के खातिर उठ जाइये और मुझ जैसे दुष्ट को माफी तो देते जाइये वरना मैं अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊंगा और आपकी चिता के साथ मैं भी जल जाऊंगा।''

गुरुजी तो थे दया की मूर्ति। उनकी मृत देह में से उनकी आत्मा से आवाज आई, ''बेटा, मैंने तो तुम्हें उसी समय माफ कर दिया था, इसलिए बेटा, अब कभी मत रोना। पर बेटा मेरी एक बात अवश्य याद रखना चाहे गुरु से क्यों न पड़ जाये तुम्हें अपमानित होना, परन्तु अपने गुरु को कभी अपमानित मत करना।''

यह सुनकर शिष्य ने कहा, ''गुरुजी आप बोल तो रहे हैं किन्तु आंख और मुंह नहीं खोल रहे हैं ? सिर्फ एक बार आंख खोलकर मेरी तरफ देखकर यह कह दीजिये, जाओ मैंने तुम्हे माफ किया तो मैं धन्य–धन्य हो जाऊंगा, कृत–कृत हो जाऊंगा, मरते दम तक आपके ही गुण गाऊंगा तथा अपने हर गुरु में आपकी ही छवि पाऊंगा।''

परन्तु असंभव बात भी क्या संभव हो सकती थी ? गुरुजी की अर्थी रोते हुए शिष्यों के कंधों पर जा रही थी। इधर मरघट पहुंचकर जैसे ही गुरुजी की चिता सजाकर उसमें अग्नि लगाई गई वैसे ही उस छात्र ने चिता में कूदने की हिम्मत जुटाई। किन्तु उसे ऐसा करते देख वहां उपस्थित लोगों ने उसे रोकते हुए कहा, ''बेटा जिस तरह हत्या करना पाप है, उसी तरह आत्महत्या करना भी बहुत बड़ा पाप है। इसलिए यदि तुम्हें प्रायश्चित ही करना है तो तुम गुरुजी की चिता के सामने आज उनसे यह वादा करो कि तुम भी आगे चलकर उनके जैसे शिक्षक बनोगे तथा उनके पदचिन्हों पर चलकर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करोगे। यही सच्चे अर्थों में उनके प्रति तुम्हारी श्रद्धांजलि होगी।''

सभी के द्वारा बार–बार समझाने पर छात्र ने अपना इरादा बदला तथा शिक्षक बनने का प्रण लेते हुए उसने कहा, ''मैं अपने गुरुजी की समाधि अवश्य बनावाऊंगा तथा आने वाले विद्यार्थियों को उसे दिखाकर गुरु का सम्मान करना अवश्य सिखाऊंगा।''

सम्पूर्ण दृश्य को देखकर बेटे को शिक्षक न बनने की सलाह देने वाले पिता ने अपने बेटे से कहा, ''बेटा! मैं उस समय स्वार्थी हो गया था लेकिन आज मैं तुम जैसे बेटे को पाकर धन्य हो गया हूं और अब मैं भी आने वाले विद्यार्थी जगत् के प्रति पूर्णतः आश्वस्त हो गया हूं।''

**शशिकला जैन**
**कालिदास मॉन्टेसरी सीनियर**
**सैकेन्डरी स्कूल, बम्बाखाना, उज्जैन**
**मध्य प्रदेश**

# रिश्तों की डोर

**चतुराई से अपनी  बात मनवाने में उसका कोई जवाब नहीं था। धुन की पक्की और कठोर मेहनत करने की वह बचपन से आदी रही है। वह कहती, ''मैं जरूर वकील बनती अगर मेरा बापू मुझे पढ़ाता। नहीं पढ़ पाने का उसे बहुत दुख था पर कभी–कभी वो अपनी जल्दी शादी करा दिये जाने का जरूर प्रतिकार करती थी।**

कई रिश्तों को परिभाषा में बांध पाना शायद मुश्किल होता है तभी तो भगवान कृष्ण की बालसंगिनी, राग–रंग की सहचरी राधा उनकी जीवन संगिनी नहीं बन पाई।

न जाने क्या बात रही होगी कि कृष्ण मथुरा गये और राधा का अस्तित्व भी विलीन हो गया। अपूर्व प्रेम का यह गुमनाम अंत राधा का आखिर क्या हुआ ? कोई नहीं जानता ? किंतु यह नाम प्रेम का प्रतीक बनकर आज भी इस धरा पर जीवित है।

इसी नाम व गुण को धारण कर हजारों वर्षों से नारी प्रेमिका रूप में उसी परिणिति को प्राप्त होती रही है।

प्रेम भले अनमोल हो लेकिन उसका मोल प्रेमिल हृदयों को अवश्य ही चुकाना पड़ता है। उसी प्रेम की जीवित मिसाल मेरी कहानी की पात्र 'राधा'।

वो रोनी–कलपती जब पहली बार मुझे मिली तो मेरे पैरों पर गिर कर सिर्फ इतना भर कह पाई, ''दीदी उसे बचा लो।''

स्निग्ध ज्योत्सना सी कांतिवाली कोमल किंतु कृशकाय देह अभावों में अपने आपको खड़ा रखने की जद्दोजहद करते तिनके की भांति तन और मन दोनों अपनी पीड़ा को ढापने का असफल प्रयत्न कर रहे थे।

चंचल मीन सी आंखें मानों यहां–वहां अपने प्राण रूपी जल को न पाकर तड़प रही हो। सारी कांति, शरीर की ऊर्जा तथा मन का साहस खींच कर आंखों की चंचलता बनाए रखने में लगा दी होगी।

मैं सोचती रही कोमल तन और द्रवित मन धारण करके भी नारी दुर्गा रूपणी कैसे बन पड़ती है। यह नारी को प्रकृति का वरदान है। पूरी मजबूती से अपनी आवाज को समेट कर बस इतना कह पाई–''मेरी मदद करो, मेरे गिरधर को बचा लो।''

''चल उठ, पहले अपने आप को संभाल''। मैंने उसे उठाकर कमरे में ला कुर्सी पर टेक दिया।
उसकी कहानी सुन एक बार फिर मन निरूत्तरित हो उठा कि हे ईश्वर स्त्री को इतना कोमल मन क्यों बनाया ? 'राधा', हां यही नाम बताया था उसने जब वो मुझे पहली बार मिली थी।

कुछ ही बरस पहले मैं यहां तबादल होकर आई थी। घर–परिवार से दूर अकेली तब मैंने छात्रावास में ही रहने का निर्णय किया था।

पन्द्रह दिन ही बीते, श्रावण की एक गर्जन भरी रात और घनघोर कालिमा से जूझती निशा के बाद भोर की एक नन्हीं सी किरण ने मेरा दरवाजा खटखटाया। सुबह–सवेरे दरवाजा खोलते ही देखा सीढियों पर गठरी सी रखी है। पास जाकर छुआ तो वह एक मानव देह थी। ठिठुरन और भूख के कारण गठियाई उस देह को बामुश्किल घर के अंदर लाया गया और शुरू हुआ बचाओ अभियान चाय पिलाना, कम्बल लपेटा गया। तब जाकर थोड़ी राहत मिली। मेरे हाथों का स्पर्श पाकर उसकी निर्विकार आंखों में जम चुके तुषारकण पिघल कर बहने लगे। कुछ संयत होने पर उसने बताया कि वह पास ही बस्ती में रहती है।

''इतनी रात को मेरे घर के बरामदे में क्या कर रही थी ?'' पूछने पर वह फफक–फफक कर रो पड़ी। मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ और मैंने अपने शब्दों का रुख मोड़ा और पूछा कि मैं कुछ पूछूंगी। तुम रोओ मत।

राधा ने सिसकियां भरते हुए उस राम का किस्सा बयान करते हुए कहा तो मैंने सारी विद्वता उसकी भाषाके को समझने में लगा दी लेकिन हिचकियों और आसुओं के बीच बस इतना समझ पाई कि उसे उसके ही पति ने मारपीट कर घर से निकाल दिया।

इतने पर भी ठीक था तो  वह रह लेती लेकिन किसी दूसरी औरत को घर में बैठा लेना तो उसके अस्तित्व को नकारना ही था। और उसने यह कहकर घर छोड़ दिया कि मैं देखूंगी यह मरी कितने दिन टिकती है तेरे घर में।

शरीर पर जगह–जगह मार के निशान थे। शायद ये निशान उसकी पीड़ा के चिर साथी थे जो उसे कई बरसों से पतिव्रत धर्म के उपहार स्वरूप मिले थे।

मैंने उससे अब उसके रहने के ठिकाने के बारे में पूछा तो उसका कोई जवाब न पाकर कुछ रुपये उसके हाथ में रख दिये। राधा उन रुपयों को वापस करते हुए बोली, ''दीदी, इन रुपयों के बजाय मुझे काम पर रख लो।'' उसकी खुद्दारी उसकी आंखों के रास्ते शब्दों से बयान हो रही थी, ''मैं आपकी सेवा पूरे मन से करूंगी और यहीं चबूतरे पर सो रहूंगी। आपका बहुत उपकार होगा।''

आवश्यकता तो मुझे भी थी। मैंने उसे घर की जिम्मेदारी सौंपी और पूरी तरह संस्था को समर्पित हो गई। उसके रहते मुझे अब समय पर खाना तो मिलता ही था, अपनी मीठी–मधुर बातों से वह मेरी थकान भी दूर कर देती थी।
एक दिन न जाने कहां से उसे एक बिल्ली का बच्चा मिल गया। उसे घर के बाहर छोड़कर मेरे पास आई, और पूछने लगी, ''घर में चूहे बहुत हो रहे हैं।''

मैं किसी काम में व्यस्त थी सो कह दिया, ''तो कुछ करो ना।''

''मैं एक बिल्ली लाई हूं।''फिर तुरंत उसे उठाकर गोद में ले आई और बोली, ''दीदी, इससे दोनों को फायदा है। ये बेचारी नन्हीं जान सड़क पर कुत्तों का खाना बन जाती सो इसको घर मिल जायेगा और हमारे घर को चूहों से निजात।''

चतुराई से अपनी बात मनवाने में उसका कोई जवाब नहीं था। धुन की पक्की और कठोर मेहनत करने की वह बचपन से आदी रही है। वह कहती, ''मैं जरूर वकील बनती अगर मेरा बापू मुझे पढ़ाता।'' नहीं पढ़ पाने का उसे बहुत दुख था पर कभी–कभी वो अपनी जल्दी शादी करा दिये जाने का जरूर प्रतिकार करती थी।

''दीदी! मैं अपनी बेटी को जरूर पढ़ाउंगी और उसे शादी करने के लिए बिल्कुल नहीं कहूंगी। वो जितना चाहे पढ़े।'' पूछने पर पता चला कि वह जिस बेटी की बात कर रही है वह अभी इस दुनिया में है ही नहीं। लेकिन सपनों के पंखों की उड़ान भला कौन रोक सकता है।

एक दिन शाम को मैं संस्था से लौटी तो राधा ने मुझे चाय के साथ ही एक खुशखबरी भी सुनाई कि वह पढ़ना चाहती है और पास के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र पर जाकर कुछ व्यावसायिक कौशल भी सीखने के बारे में उसने पता किया है।

मेरे हां कहते ही वह खुशी के मारे उछलने लगी। अभी उसे कुल दस दिन ही हुए थे कि एक दिन अचानक शाम के वक्त अपने उदास चेहरे की भंगिमा को छिपाते हुए मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

''क्या बात है, कुछ कहना है''। ''हां दीदी, वो बात ये है कि केन्द्र पर एक लड़की आती है, नाम उसका उर्मी है। उसका घर वहीं बस्ती में हैं जहां मैं रहती थी। उसी ने मुझे बताया कि मेरा मरद बहुत बीमार है।'' वह लगातार अपने पल्लू को उंगुलियों के बीच फिरा रही थी।

''हुआ क्या है ?'' मैंने डायरी पर चलते अपने हाथों को रोकते हुए कहा। मेरे इतना कहते ही वह मेरी कुर्सी के पास आंगन में बैठ गई और लड़खड़ाती सी आवाज में बोली, ''दीदी, वो अकेला भी है।''

''क्यों, उसकी दूसरी बीवी का क्या हुआ ?'' ''वो भला क्यूं बीमार आदमी की सेवा करने लगी, दूसरी जो ठहरी।''

''दीदी मैं उसे एक बार देख आती।'' इतना कह कर वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में कुछ क्षण चुप रही। मेरी ओर से कोई प्रतिक्रिया न पाकर बोली, दीदी मुझे पता है वो एक शराबी है। उसने मुझे धक्का मार कर घर से निकाल दिया पर नारी धर्म भी तो कोई चीज होता है। मैं उसकी धर्मपत्नी ठहरी, सात फेरों का बंधन ऐसे नहीं टूटता।''

''ठीक है, जब तुमने सोच ही लिया है तो जाओ।'' मेरे चेहरे की सलवटों की लिपि का ज्ञान कर तुरंत बोली, ''दीदी आपकी नाराजगी ठीक है पर जरा बताओ तो दुनिया क्या कहेगी कि हमने अपने मरद का बुरे बखत में साथ न दिया और क्या भगवान हमें माफ करेगा। पर उसका भी तो धर्म है कोई।''

मेरी बात को नकारते हुए राधा बोली, ''पर दीदी, उर्मी कहत रही कि अब वो बदल गया है। आदमी के शरीर में दम रहे तभी तक अभिमान रहे। अब तो रात–दिन राधा–राधा ही रटता है। हम बस एक बार अपनी आंखों से देखकर तसल्ली कर लें फिर लौट आयेंगी।''

मैंने उसे जाने को कह तो दिया पर मन ही मन सोचने लगी कितना फर्क है राधा और उसके पति में। सच में दिल से जुड़े रिश्तों की डोर की परिभाषा कोई शास्त्र नहीं कर सकता। दो ही दिन बीते थे कि वह रोती हुई मेरे पास आई, ''दीदी उसे बचा लो।''

जिस इंसान ने उसके तन–मन को छलनी कर दिया, राधा उसी के लिए मिन्नतें कर रही थी। यह है स्त्रीत्व। तभी तो विधाता ने उसकी कोख में नव–सृष्टि को पोषित करने की शक्ति दी है।

''चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूं।'' डॉक्टर को साथ लेकर जैसे ही हम उसके घर पहंचे तो पीली, सूखी और खाट से चिपकी उस देह को देखकर, जिसकी आंखों में पश्चाताप–की अग्नि पूर्ण शीतलता से दहक रही थी, मेरा मन कांप उठा।

शराब की लत ने उसके शरीर को तो बर्बाद कर ही दिया था, साथ ही राधा जैसी भोली, प्रेममयी स्त्री का जीवन भी तबाह कर दिया। इलाज और राधा की देखभाल के बाद उसका पति अब पूरी तरह ठीक है।

राधा आज भी रात–दिन मेहनत करके अपनी गृहस्थी को संवारने में जुटी है। सच, नारी जीवन तू वसुन्धरा सी, धन्य धन्य तू अंबरा–सी।

विजय लक्ष्मी जांगिड़
एम.पी. एस. इन्टरनेशनल
भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर
राजस्थान

# प्रयास

**अब वह दूसरों के झाड़ू–पोछा छोड़ मेरे ही घर के एक कमरे में जो वर्षों से बंद था, उस कमरे में लोगों के कपड़े सिलने लगी। मनुसख भी एक होंटल में वेटर का काम करने लगा। एक दिन मनसुख आया, "बोला मालकिन आज मैं अपने पैरों पर खड़ा हूं। मैंने सारे बुरे काम छोड़ नेकी का रास्ता अपनाया है। क्या अब सुखिया मेरे साथ चलने को तैयार है ?"**

आज मुझे बेटी के सलवार–कुर्ते सिलवाने जाता था। जैसे ही घर से निकली मेरे कदम सहसा सुखिया के घर की ओर मुड़े गये। मैंने उसका दरवाजा खटखटाया। सुन्दर सी लाल रंग की साड़ी पहने बाइस–तेइस वर्ष की स्त्री ने दरवाजा खोला मुझे देखते ही बोली, ''मालकिन आप! कोई काम था तो मुझे बुला लिया होता।''

''अरे इसी बहाने तुम्हारे घर आना हो गया सुखिया।'' सुखिया का पति खाने के लिए बैठा ही था, आज उसकी थाली में शाकाहार भोजन था। सुबह शराब का कुल्ला करने वाला उसका पति मनसुख, जिसकी आंखों में सदैव आक्रोश, क्रोध जैसी भावना थी, आज उस स्थान पर प्रेम और शान्ति की गहराई थी।

मुझे देख वह मेरे पैर छूने उठा, बोला, ''मालकिन आप यहां कैसे ? ''मैंने कहा, ''पहले तुम अपना खाना खाओ, मैं तो यहां आराम से बैठने आयी हूं।'' मनसुख ने एक कुर्सी पर मुझे बैठने का आग्रह किया और वह अपनी खाने की थाली के सामने बैठ गया। उसने भोजन की थाली को प्रणाम किया, आंखें बंद कर अपने ईश्वर को याद किया फिर अपना भोजन प्रारंभ किया।

उसका यह रूप देख मेरा हृदय गद्‌गद हो गया। इतने में सुखिया मेरे लिए चाय बना लाई। मुझे चाय देकर वह मनसुख को भोजन परोसने में लग गई, और मैं कुर्सी पर बैठे अतीत के उन क्षणों में खो गई जब यह अबोध सुखिया मेरे घर आई थी।

ससुराल से त्यागी हुई चार भाई–बहनों की बड़ी बहन जिसके पिता अपाहिज। इन दुखों के अलावा गरीबी और लाचारी ने उसे खेलने–कूदने के दिनों में ही झूठे बर्तन और झाड़ू सौगात में दे दी। मां बेचारी पांच लोगों की पेट की अग्नि को शान्त करने असक्षम थी। मां का सहारा बनने सुखिया काम की तलाश में एक दिन मेरे घर आ गई। उसके चेहरे की मासूमियत और बदन पर फटा कुर्ता और उस फटे कुर्ते को दुपट्टे से ढांपते देख मेरे हृदय के सोए हुए तार हिल गये। मैंने उसे अपने घर काम पर रख लिया। कुछ ही दिनों में मेरे ही आसपास के घर में भी उसे काम मिल गया। किसी के बर्तन, किसी के यहां सफा–सफाई तो किसी के यहां कपड़े धोने का भी सुखिया काम करने लगी।

कुछ समय ऐसे ही बीत गया। संपन्न घरों में काम करते–करते उस अबोध मन में भी सपन्नता का जादू चलने लगा। उसके सपने अब अपनी मालकिनों के घर जैसे होने लगे। उस तरुणिया सुखिया का दूल्हा भी उसकी जाति के लड़कों से अलग था और होता भी क्यों न, सुखिया स्वयं भुक्त–भोगी थी।

8–9 वर्ष की उम्र में ही उनकी जाति के अनुसार उसका विवाह हो गया था। साल बाद गौना हुआ। जब वह ससुराल गई तो वहां उसकी सास जो काम तो कराती थी पर खाना नहीं देती थी। पति, जिसकी उम्र कुछ

12–13 वर्ष की थी, पूरे दिन जुआ–पत्ता खेलता था, शराब उसका शौक था। घर आकर मार–पिटाई करना उसका रोज का काम हो गया।

इस सब ने सुखिया के हृदय में ससुराल नाम से घृणा भर दी। साल अन्दर ही वह अपनी मां के घर आ गई थी। अब तो उसे अपनी मालकिनों के घर ही अच्छे लगते थे। मेरे बच्चों के साथ उसका स्नेह था। राखी के पहले वह मुझसे बोली,'' मालकिन, मैं आपके बेटे को राखी बांधना चाहती हूं।''

पहले तो मैंने उसे समझाया राखी बांधना आसान है पर रिश्ता निभाना मुश्किल। पर सुखिया की जिद थी मैं राखी बांधना चाहती हूं। मैंने भी जाति बन्धनों को ताक पर रख इस प्रेम सूत्र को उसे बांधने की आज्ञा दे दी। मेरा बेटा पांच साल का बड़ी खुशी–खुशी राखी बंधवा रहा था। राखी बांध जब उसने मेरे बेटे की नजर उतारी (बलइया लेकर) उस क्षण मेरी भी आंखें भर आईं।

उस अहसास ने बताया की प्रेम का रिश्ता सदैव जाति, धर्म–सम्प्रदाय से ऊपर होता है। चार साल इसी तरह बीत गये। पर आज उसके मुंह पर काले नीले निशान थे। उसका ऊपर का होंठ सूजा था। एक आंख काले घेरे में धंसी थी। हाथों पर लम्बे–लम्बे काले निशान थे। मैंने पूछा, ''क्या हुआ ?'' पहले तो वह चुप रही, फिर बोली, '' गिर गई थी, उस कारण चोट लग गई है। पर मुझे समझते देर न लगी कि उसे किसी ने मारा है।

मैंने कहा, '' झूठ मत बोल, सब बता क्या बात है। ''सुखिया अपने दर्द को छुपा न सकी। रोते–रोते बोली, '' मालकिन, मां और पड़ोस की चाची–चाचा ने मारा है। मैं सन्न थी, सहसा निकला ''क्यों ?'' ''वो लोग मुझे उस शराबी–जुआरी पति के पास जाने को कह रहे हैं। मैंने मना किया तो....!'' अब उसकी जुबां बन्द हो गई। उसकी चोटें देख उसका दर्द मुझे महसूस हो रहा था। मैंने उसका हाथ थामा और चल दी।

सुखिया बोली, '' मालकिन कहां ?'' मैं उसे उसके घर ही ले जा रही थी जो मेरे घर के पीछे वाली गली में ही था। उसकी अम्मा मुझे देख बाहर आ गई। मैंने जाते ही पूछा, '' अम्मा ये सब क्या है ? क्यों तुमने इस मासूम पर इतना अत्याचार किया ? हिंसा तो पाप है अम्मा।'' अम्मा चुप खड़ी सुनती रही, फिर बोली, '' मारे न तो का करे मालकिन, छुकरिया से ससुराल जावें की बात करो तो हमेशा मना कर देवें। हमरी जात वाले थू–थू करत हैं। हम कब तक इ की देखभाल कर सकेगी, नोच खाएंगे हमरी जात वाले।''

''पर अम्मा, इसका पति तो शराबी–जुआरी है, और इसे मारता–पीटता भी था। कैसे जाये ये वहां ?'' ''अरे मलकिन हमारी जात की औरतों को तो इ सब सहना पड़ता है। हम सबके भाग्य काली स्याही से ईश्वर लिखी है।'' मेरी बातों से अम्मा कुछ समझना तो चाह रही थी पर समय समझने नहीं दे रहा था। मैंनें भी सोचा मैं सुखिया के पति से बात करूं। मैंने अम्मा से सुखिया के पति से मिलने की इच्छा रखी।

अम्मा बोली, ''ठीक है मलकिन हम उसे खबर कर देगी उकी (उसकी) इच्छा हुई तो आपसे मिलने आपके घर आ जावेंगा।'' मैं सुखिया को अपने साथ घर वापस ले आई। आज शाम मेरे घर में सत्संग था। गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर हम सभी सतसंगी गुरुध्यान में व्यतीत करते हैं।

दोपहर से चार बजे तक हमने सभी तैयारी कर ली थी। मेहमान आने लगे थे, गुरु की फोटो के सामने सभी ध्यान करने बैठते गये। मेरे सत्संगी मित्रों को परेशानी न हो, इसलिए मैं सबसे पीछे बैठी थी जिससे सभी आन–जाने वालों को ठीक से बैठा सकूं।

सुखिया आज बाहर नहीं आई। वह चोके में ही काम करती रही। तभी मेरी नजर एक 15–16 वर्ष के लड़के पर पड़ी जो मेरे ही घर की तरफ आ रहा था। मेरे घर पर भजन चल रहा था। भजन के पवित्र बोल उसके कानों में पड़े वो सहसा मेरे घर के दरवाजे के सामने रुक गया। मैंने उससे पूछा, ''कौन ?'' वह बहुत ही धीमी आवाज में बोला, ''मनसुख''।

मैंने उसे भीतर आने का इशारा किया पर वह अपराध–बोध सहता हुआ सहमा बाहर खड़ा रहा क्योंकि वह अभी भी शराब के नशे में था। पर गुरु का अलौकिक प्रताप जहां पड़ता है वहां चमत्कार जरूर होता है। असमंजस की स्थिति में मनसुख दहली से मेरे गुरु की फोटो देखता रहा। प्रवचन की शीतल वाणी उसके हृदय तक पहुंचने लगी और मनसुख ने अपनी जेब में रखी शराब की बोतल बाहर फेंक दी और एक दृढ़ता के साथ मेरे घर में प्रवेश किया और सत्संग का भागीदार बना।

थोड़ी देर बाद सत्संग समाप्त हुआ। सभी सत्संगी भाई प्रसाद ग्रहण कर जा चुके थे, बस मैं और मनसुख बाहर के कमरे में, सुखिया भीतर थी। मेरे बच्चे भी अपने कमरे में पढ़ने चले गये।

मैंने सुखिया को आवाज दी और मनसुख को बैठने के लिए कहा। गुरु की कृपा से मनसुख का हृदय सरस तो बना ही था। इस पर मैंने भी उससे कहा, ''देख मनसुख, ये सुखिया तेरी पत्नी है, इसके शरीर के ये निशान देख तुझे कोई दर्द महसूस नहीं होता। मानवता के नाते से ही सही क्या इसके इन घावों का दोषी तू नहीं है ? क्या ये तेरी आत्मा को नहीं झकझोरते।''

मनसुख चुपचाप बैठा रहा, तिरछी नजरों से सुखिया को देखता रहा। सुखिया रोती रही। सुखिया के आसुओं और गुरु के आशीर्वाद ने आज मनसुख के पत्थर हृदय को भी पिघला दिया। मनसुख के हृदय में दबा सुखिया के प्रेम का सूखा बीज अंकुरित हो गया।

अचानक से वह बोला, ''हम का करें मलकिन, ''रोते–रोते बोला, '' हम कोई लायक ना ही जो इसका पालन–पोषण कर सकें।'' मैंने मनसुख को समझाया, ''यदि तुम बुरी आदतें छोड़ दो तो मैं तुम्हारी मदद करूंगी।''मनसुख की आंखें चमक उठीं। मनसुख बोला, ''कैसी मदद ?''

मैंने दोनों से कहा, '' सबसे पहले तो तुम दोनों मुझसे रोज पढ़ने आओगे। सुखिया को तो मैं थोड़ा बहुत पहले से भी पढ़ाती थी। अब वो दोनों मुझसे पढ़ते थे। मेरे घर एक सिलाई मशीन थी। मैंने सुखिया को पहले अपने घर सिलाई करना सिखाया। फिर एक प्रशिक्षक सिलाई वाली से सिलाई सिखाई। एक साल में सुखिया सिलाई में पारंगत हो गई।

अब वह दूसरों के झाड़ू–पोछा छोड़ मेरे ही घर के एक कमरे में जो वर्षों से बंद था, उस कमरे में लोगों के कपड़े सिलने लगी। मनुसख भी एक होटल में वेटर का काम करने लगा। एक दिन मनसुख आया बोला,

''मालकिन आज मैं अपने पैरों पर खड़ा हूं। मैंने सारे बुरे काम छोड़ नेकी का रास्ता अपनाया है। क्या अब सुखिया मेरे साथ चलने को तैयार है ?''
मैंने सुखिया की तरफ देखा, सुखिया की आंखें झुकी थीं, होठों पर हल्की सी हंसी थी। मैंने मनसुख से कहा, '' जाकर सुखिया की अम्मा से कहो और ले जाओ अपनी सुखिया को।''

तभी आवाज आई, ''मालकिन...मालकिन ! अचानक मैं अतीत के उन क्षणों से बाहर आ गई। आज सुखिया के पास पांच सिलाई मशीनें हैं। इन मशीनों पर मोहल्ले की लड़कियां सिलाई सीखती हैं। सुखिया की सफलता में उसके पति का योगदान भी अवर्णनीय है।

एक संवेदनहीन मनुष्य को सही मार्गदर्शन प्राप्त हो तो वह भी संवेदनशील बन सकता है। प्रेम ही जाति भेद, सामाजिक क्रूरता, हिंसा, सबसे बड़ा है। प्रेम के सहारे ही मनुष्य समाज को एक नई दिशा दे सकता है। यही मेरा 'प्रयास' था अब आपकी बारी है।

**कविता कुशवाहा**
**महाप्रज्ञ विद्या निकेतन,**
**कोबा पाटिया, गांधीनगर, गुजरात**

# ख्वाब तेरे–मेरे

**उसे तो संजय को रास्ता बनाकर राजू दादा तक पहुंचना था। यह कार्य शांति से ही संभव था। मछली पकड़ने के लिए जाल तो बिछाना पड़ता है पर उसे तो मगर पकड़ना था। अतः उसने अपने घर जागरण का आयोजन किया तथा संजय को अपने सभी मित्रों को सपरिवार न्यौता देने को कहा।**

उद्योगपति कामता प्रसाद अपनी इकलौती बेटी काम्या के लिए एक से बढ़कर एक वर ढूंढ रहे थे मगर काम्या के सिंदूरी सपनों में तो संजय बसा था। स्कूल का वह अबोध लगाव युवा होते–होते प्यार में बदल गया पर उन्होंने संस्कारों और मर्यादा के कारण कभी उजागर नहीं किया।

एक दिन जब काम्या को देखने उसके पिता के मित्र का लड़का रोहन आया तो उसे लगा कि संजय से दूर जाना तो प्राण रहित जीवन जैसा होगा। अतः उसने संजय से मिलकर अपने दिल की बात उसके समक्ष रखी तो संजय ने भी अपनी वर्षों पुरानी साध उजागर कर दी। दोनों ने मंदिर में जाकर ईश्वर के समक्ष नतमस्तक होकर साथ जीने–मरने की कसम खाई और अपनी इच्छा घरवालों के सामने रखने का फैसला किया।

बड़े परिवार की जिम्मेदारी वाले कंपनी के छोटे से कर्मचारी से प्यार और विवाह की बात जब कामता प्रसाद ने काम्या के मुख से सुनी तो वो आग बबूला हो गया पर इकलौती बेटी की खुशी के लिए आखिरकार घुटने टेक दिये। उन्होंने धूमधाम से दोनों की शादी कर दी। काम्या अपने प्यार भरे सुनहरे भविष्य के सपने आंखों में सजाए संजय के घर आ गई।

पारिवारिक स्थितियां भिन्न होने पर भी काम्या ने बड़ी समझदारी से घर संभाला और संजय ने बढ़ी हुई जिम्मेदारियों संग संतुलन बनाने की पूरी कोशिश की। यद्यपि कामता प्रसाद उनको सहयोग दे सकते थे मगर स्वाभिमान के कारण दोनों को यह स्वीकार नहीं था। संजय ही अपनी कमाई बढ़ाने के उपक्रम करने लगा।

संजय को परेशान देखकर उसके मित्र राजेश ने उसकी परेशानी जाननी चाही तो घर की स्थिति और धन की आवश्यकता की बात खुलकर उसके सामने कही। राजेश ने उसे एक ऐसे आदमी से मिलाया जो अपना सामान इधर–उधर करवाने के लिए हमेशा नए आदमी की तलाश में रहता और अपने काम के अच्छे पैसे देता था।

संजय भी अतिरिक्त समय में उसका काम करता और पैसे पाकर खुश होता। अब उसे अपनी जिम्मेदारियां आसानी से पूरी होती लगने लगीं परंतु उसने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की वह किसके लिए तथा क्या सामान यहां– वहां पहुंचाता है ? इस काम में अधिक कमाई देखते हुए नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह इसी काम में लग गया।

शहर में निरंतर बढ़ती मारपीट व आगजनी की घटनाएं संजय का समय–असमय का आना–जाना, बदले हुए हाव–भाव, बढ़ी हुई कमाई आदि के कारण काम्या की चिंता बढ़ने लगी तो उसने संजय से पूछा। संजय ने प्रमोशन कहकर टाल दिया पर काम्या का संदेश खत्म नहीं हुआ। पति–पत्नी का रिश्ता विश्वास और आपसी समझ पर ही टिका होता है। बेशक हर पत्नी अपने पति पर बेहद भरोसा करती है पर शक करना भी उसका

अधिकार होता है और यह शक ही पति को सही रास्ते पर रखता है। केवल इसी के सहारे तो औरत पुरुष को सागर से गंगासागर बनाती है। उसके जोश और ताकत को मंगल के पथ पर लगाती है।

सच जानने के लिए एक दिन काम्या संजय की कंपनी पहुंची तो राजेश ने उसे संजय के नौकरी छोड़ने व नये काम के विषय में पूरी जानकारी दे दी। उसने काम्या से माफी भी मांगी तथा अपने दास्त के प्रति चिंता भी जाहिर की, क्योंकि आजकल संजय उसी के कारण असला–बारूद व हथियार के तस्कर राजू दादा के साथ काम कर रहा है जो बड़ा ही खतरनाक है।

काम्या सब जानकर घर लौट आई और संजय से ही बातचीत कर हल निकालने की कोशिश करने लगी लेकिन संजय घर की जरूरतों का वास्ता देकर इस काम को मजबूरी बताने लगा। काम्या ने खुद काम कराके हाथ बंटाने की बात कही तो संजय राजी नहीं हुआ। शहर में हो रही दुर्घटनाओं में अपने पति का हाथ जानकर उसका कलेजा मुंह को आ रहा था। फिर भी उसने किसी से भी इस बात का जिक्र नहीं किया।

रात को सभी काम निपटाने के बाद जब वह अपने कमरे में आई तो संजय से पूछा, ''क्या आपको पता है, जिस राह पर आप चल रहे हैं, उसकी मंजिल क्या है ?'' संजय का जवाब था, ''तुम्हारा काम घर देखना है, घर संभालो। पैसा कमाने के लिए 'रिस्क' तो लेना ही पड़ता है।''

काम्या ने समझाते हुए कहा, ''मेरे लिए आपका जीवन इस पैसे से अधिक कीमती है। यह रास्ता गलत है, इसे छोड़ दो।''

संजय फिर बोला, ''यह संभव नहीं है, काम्या! पूरा शहर राजू दादा से डरता है और आजकल तो मेरा भी शहर में दबदबा है।'' काम्या समझाने लगी, ''किसी को डराकर सम्मान नहीं, नफरत मिलती है। दिलों में मान पैदा करने के लिए हथियार या सजा नहीं, सेवा व त्याग की जरूरत होती है।''

संजय क्रोध में आकर कहने लगा, ''मुझे प्रवचन नहीं चाहिए। कंपनी से केवल दो वक्त की रोटी ही मिलती थी। बहनों की शादी, अजय की पढ़ाई, घर की देखभाल कहां यह सब होगा ? आज मेरे पास सब कुछ है और लोग सम्मान करते हैं सो अलग''।

काम्या ने कड़ा उत्तर दिया, '' बेशक आज तुम्हारे पास सब कुछ है मगर नहीं बदले तो धन ही रहेगा, काम्या नहीं।'' जब संजय किसी भी तरह नहीं माना तो काम्या ने चेतावनी दी, ''रात भर सोच लो, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा। मैं आपको मानवता पर कलंक नहीं बनने दूंगी। खून, आंसुओं, बद्दुआओं, तबाही, आह और दर्द भरी रोटियां मैं अपने परिवार को नहीं खिलाऊंगी। आपको लौटना ही होगा''।

रात बीत गई। सुबह उसने संजय से फिर बात की किंतु निराशा ही मिली तो काम्या ने स्वयं हल खोजने की कोशिश की। वह दिन भर इसी कशमकश में रही कि पुलिस के पास जाये या राजू दादा के पास ? उसे दोनों ही बातों में संजय पर खतरा नजर आया। पत्नी होने के नाते पति की रक्षा उसका कर्तव्य था पर सामाजिक दायित्व से भी मुंह नहीं मोड़ सकती थी।

संजय जब घर लौटा तो उसने काम्या का नया ही रूप देखा। वह पहले से भी अधिक प्यार भरा व्यवहार कर रही थी। संजय ने समझा कि वह उसके काम से सहमत है और वह उसे घुमाने ले गया। काम्या ने भी उसके काम के विषय में कोई बात नहीं की, क्योंकि उसे अपनी योजना को उजागर नहीं होने देना था।

वह संजय के काम में रूचि दिखाने लगी तथा वह भी उद्देश्य से अनभिज्ञ उसे सब कुछ बता देता। वह संजय की बढ़ी हुई कमाई को दुर्घटनाग्रस्त लोगों की सेवा और सहयोग में लगाने लगी। वह आगजनी, हिंसा की जरा भी जानकारी होने पर पुलिस को गुप्त रूप से सूचना देकर होने वाली दुर्घटना को नाकामयाब कर देती तथा समाज को भारी हानि से बचा लेती।

उसे तो संजय को रास्ता बनाकर राजू दादा तक पहुंचना था। यह कार्य शांति से ही संभव था। मछली पकड़ने के लिए जाल तो बिछाना पड़ता है पर उसे तो मगर पकड़ना था। अतः उसने अपने घर जागरण का आयोजन किया तथा संजय को अपने सभी मित्रों को सपरिवार न्यौता देने को कहा।

शाम को उसकी नजर मेहमानों की भीड़ में राजू दादा को ढूंढ़ रही थी। जैसी छवि उसने अपने मन में गढ़ रखी थी, वैसा कोई व्यक्ति उसे नहीं दिखाई दिया तो संजय से पूछा, '' क्या आपने अपने बॉस को नहीं बुलाया ?''

संजय ने प्रेम से कहा, ''मेरी जान! ऐसा हो सकता है क्या ? तुम कुछ कहो और मैं न करूं।''

भक्तों की भीड़ में आगे–आगे बैठे दंपति की ओर इशारा करके बताया कि वही सर हैं तथा साथ में मैडम भी। काम्या शीघ्र ही उनकी पत्नी के पास गई और उनसे मित्रता बढ़ाने की कोशिश में लग गई। यही एक सीढ़ी थी मंजिल तक पहुंचने की।

थोडे ही दिनों वह राजू दादा के घर तक पहुंच गई। अब वह ऐसी सुरंग बनाने में लग गई जो उन्हें जेल की सलाखों पीछे पहुंचा दे। धीरे–धीरे राजू दादा व उसकी पत्नी काम्या पर संजय से भी ज्यादा विश्वास करने लगे। यह उसके लिए वरदान साबित हुआ। वह उनके काम में शामिल होने का दिखावा करके चुपक चुपके सबूत बटोरने लगी। उसने उसके सभी अड्डों, साथियों का अता–पता लगाया। अब उसे अपनी रात की भोर दिखाई दी।

जैसे ही उसने राजू दादा के सभी राज जाने, वह सीधे पुलिस कमिश्नर से मिली और शहर में हो रही सभी दुर्घटनाओं का कच्चा चिट्ठा खोल दिया। उसने संजय को भी इस मुहिम का साथी बताया। दोनों सरकारी गवाह बन गये। सरकार ने प्रसन्न होकर संजय को सरकारी नौकरी प्रदान की और काम्या को भी सम्मानित किया।

इसी प्रकार समझदारी से काम्या ने अपने पति व समाज के प्रति दायित्व निभाते हुए भयमुक्त समाज की संरचना में भागीदारी निभाई।

**डॉ. भामा अग्रवाल**
**भिवानी पब्लिक स्कूल,**
**सैक्टर–14, भिवानी, हरियाणा**

# तर्पण

**पितृमोक्षा अमावस्या के दिन कुमार माता–पिता की फोटो के सामने माल्यार्पण करके बैठे कंडे की अग्नि देखकर कहने लगे, पांच किलोमीटर दूर से गाय के कंडे की व्यवस्था करके लाया हूं।' एक–एक आहूति मानो घी की नहीं अपितु माता–पिता के त्याग, स्नेह, धैर्य और सहनशीलता को स्वाहा करते जा रही थी।**

स्वार्थ के वशीभूत रहकर जीवन जीना मानव स्वभाव की सहज प्रकृति बनती जा रही है। कुमार भी इसी प्रकृति के वशीभूत थे। सब कुछ होते हुए भी मानसिक तनाव दीमक की तरह अस्तित्व को मिटाने में लगा था।

कुमार अपने नन्हें पुत्र कुंवर को मन की गहराइयों से स्नेह करते थे किन्तु कुंवर का जिद्दी स्वभाव कई बार कुमार को परेशान कर देता था। मन की शान्ति की तलाश में कुमार एक ज्योतिषी के पास गये और सलाह ली, तब पाया कि उन्हें पितृदोष है। घर और मन की शांति के लिए तर्पण की आवश्यकता है।

पितृ पक्ष में माता–पिता की तिथि पर तर्पण करने से हर तरह की शान्ति मिलेगी। कुमार स्वार्थ के वशीभूत थे ही स्वयं के सुख सौभाग्य की प्राप्ति के लिए माता–पिता को श्रृद्धांजलि देने का उन्होंने निश्चय किया।

कुमार सोचने लगे कि अब मुझे तर्पण के लिए एक दिन की छुट्टी लेनी होगी। अफसर से क्या कहूंगा कि इस हाइटेक युग में भी तर्पण और ब्राह्मण भोजन! क्या स्तर रह गया मेरा। इन्हीं विचारों के मंथन के साथ पूजन सामग्री जुटाने में वे लग गये।

पांच बाह्मणों के भोजन की व्यवस्था कैसी होगी ? इतने व्यस्ततम जीवन में ये निर्णय परिवार में कलह करने वाला होगा, यह तो उन्होंने निश्चय कर लिया था। किन्तु दिल पर पत्थर रखकर अपनी पत्नी काया को अपना यह निर्णय सुना ही डाला।

काया ब्राह्मण भोजन की बात सुनकर क्रोध के सैलाब पर काबू न पाकर कहने लगी, '' अरे! अब वे हैं कहां जो उनको खुश करने में लगे हुए हो ? मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है ये दिखावा। पांच लोगों का खाना मैं कैसे बनाऊंगी। खाना बनाने वाली कमलाबाई भी बीमार पड़ी है और फिर मुझे एक ही छुट्टी बची है वह भी मैंने मेरी किटी पार्टी के लिए बचाकर रखी है। मैं कोई हाउस वाइफ नहीं जो तुमने कहा और तैयार हो जाऊं। मोबाइल और कम्प्यूटर के युग में कढ़ाई और झारा शोभा नहीं देता। ये तर्पण का दिखावा तुम अपने तक ही सीमित रखो।''

कुमार बढ़ते सैलाब को रोकते हुए बोले, ''मैं जानता हूं काया जो इस संसार में है नहीं उसके पीछे क्यों भागना, पर मैं बड़े कष्टों से गुजर रहा हूं। मकान का लोन, कार का लोन, बॉस की जली–कटी बातें मेरे मन को अशान्त किये हुए है।

काया बोली, ''इससे तर्पण का क्या संबंध ?'' कुमार ने बात का स्पष्टीकरण दिया, ''मानसिक तनाव का कारण ज्योतिषी ने पितृदोष बताया है। बस उसी के समाधान के लिए हम लोगों को यह कष्ट उठाना होगा जिससे पितृदोष निवारण होगा।''

काया को समझते देर न लगी कि यह सब पित्रों के लिए नहीं, हमारे अपनी लिए ही है। तब काया ने पति की स्वीकृति में अपनी स्वीकृति दे तर्पण की भी स्वीकृति दे दी।

पितृमोक्षा अमावस्या के दिन कुमार माता–पिता की फोटो के सामने माल्यार्पण करके बैठे कंडे की अग्नि देखकर कहने लगे, ''पांच किलोमीटर दूर से गाय के कंडे की व्यवस्था करके लाया हूं।'' एक–एक आहूति मानो घी की नहीं अपितु माता–पिता के त्याग, स्नेह, धैर्य और सहनशीलता को स्वाहा करते जा रही थी।

पूजा की समाप्ति पर भोजन परोसते समय कुमार बोल उठे, '' आज 'ब्रेक फास्ट' तर नहीं किया। हाई टेक जमाने में भी भूखे रहकर ब्राह्मणों के पैरों पर झुककर स्वयं के मान को ठेस पहंचाना है। सारा दिन इसी तरह बीत गया। आराम कुर्सी में बैठे हुए कुमार अपने माता–पिता के निर्जीव होते हुए सजीव भावों वाले चित्रों को निहारने लगे।

तभी पिता की आत्मा तड़प कर बोल उठी, '' बेटा ! आज पांच किलोमीटर से तुम कंडा लाकर थक गये। मैं तुम्हें रोज दस किलोमीटर दूर स्कूल छोड़ने जाया करता था। पांच अतिथियों का आतिथ्य तुम्हें परेशान कर गया, तुम्हारे जन्मदिन पर पचास अतिथियों को अपने आंगन में हाथ धुलवाकर उनके आशीष से तुम्हे सींचा है। एक दिन की छुट्टी तुम्हें परेशान कर गई। तुम्हारी पच्चीस वर्ष तक की उम्र होत–होते मैंने केवल तुम्हारे लिए पच्चीसों छुट्टियां न्यौछावर कर दीं। जहां संस्कारों और परमपराओं की मर्यादा में बंधकर ब्राह्मणों के समक्ष झुकने में तुम्हारे सम्मान को ठेस पहुंच रही थी वहीं ये पिता तुम्हारी शरारतों के कारण न जाने कितनी बार कहां–कहां नहीं झुका है। बेटा, जीते जी तो कभी तुमसे एक लौटा जल की अपेक्षा नहीं की तो मरणोंपरांत जलांजलि की क्या अपेक्षा करूं। तुमने एक दिन 'ब्रेक फास्ट' नहीं किया तो तड़प उठे। तुम्हारी मां तो जीवन पर्यन्त तुम्हारे लिए तीज त्यौहारों पर निराहार व्रत रखती थी।''

तभी मां की वात्सल्य से भरी आत्मा तड़प कर बोल उठी, ''आज सुबह से मेरा कुमार भूखा है, उसे भूख बर्दाश्त नहीं होती। उसे कुछ खा लेने दो। आज वो बड़ा खुश होगा जब थाली में पिसी हरी मिर्च और लहसुन की चटनी देखेगा तो मेरे जाने के बाद आज ही तो उसे वह चटनी मिलेगी जो उसे पसंद थी।'' बोलते ही मां रुआंसी हो उठी। कुमार पर मानो घड़ों पानी पड़ गया था।

डॉ. छाया चौरे
बाल भवन स्कूल,
श्यामला हिल्स, भोपाल,
मध्य प्रदेश

# संकल्प

धीरे–धीरे मौहल्ले वाले मास्टर जी के कार्यों एवं विचारों की महानता को समझने लगे। मास्टरजी के कार्यों पर जो लोग हंसा करते थे वही अब उनके सामने नतमस्तक होने लगे। उनका पर्यावरण के प्रति लगाव पूरी कॉलोनी में चर्चा एवं प्रशंसा का विषय बन गया था। कोलाहल एवं धुएं से भरे वातावरण में हरे–भरे पौधों एवं रंग–बिरंगे पुष्पों से लदी विस्तृत वाटिका लोगों का बरबस मन मोह लेती थी।

सुबह की ताजी हवा में टहलते हुए मास्टर जी अपने हाथों से लगाए पेड़ पौधों को अपनी और मुस्कुराते देख फूले नहीं समा रहे थे। हवा के झौंके से पेड़ों की डालियों से गिरते फूल–पत्ते उनका स्वागत कर रहे थे। विभिन्न प्रकार के फूलों की महक सांसों को ही नही बल्कि उनकी आत्मा को भी तृप्त कर रही थी।

ओस में भीगी अधखिली कलियों को देखकर उनके मन की कली भी खिल उठी थी। हनुमान वाटिका में लगे पेड़ पौधों तथा फूलों पर मंडराती रंग–बिरंगी तितलियां, चहचहाते हुए पक्षी एवं उछलकूद करती गिलहरियां उनके मन को बार–बार मोह रहे थे।

इस सुहावनी सुबह को देखकर ही मास्टर जी अपने दिन की शुरुआत करते थे। पेड़–पौधों को पानी देकर मास्टर जी हरी दूब में टहलने लगे। थोड़ी देर सुस्ताने के लिए वह वाटिका में लगी बैंच पर ज्यों ही बैठे विचारों की श्रृंखला ने उन्हें घेर लिया। अतीत की बातें आज पुनः स्पष्टतर होने लगीं।

जब मास्टर जी अपने गांव से शहर व्याख्याता पद पर पदोन्नत होकर आये ही थे। गांव की उस हरीतिमा व लावण्यमयी प्रकृति को दौड़ते समय मास्टरजी का हृदय असीम वेदना से भर आया था। शहर का कोलाहल व धुएं से भरा वातावरण देखकर उनका मन अशान्त हो उठा। शुरू से ही शान्तिमय वातावरण में रहने के अभ्यस्त मास्टरजी को यह भीड़–भाड़ व शोरगुल का वातावरण रास नहीं आया।

यहां की धुएं एवं विषैली गैसों से भरी वायु में श्वास लेते हुए भी उनका दम घुटता था, किन्तु उनके पास कोई अन्य विकल्प भी नहीं था। सरकारी नौकरी व्यक्ति को कितना बेबस बना देती है। इस बात का अहसास उन्हें यहां आकर ही हुआ था। दिनभर तो विद्यालय में निकल जाता था किन्तु सुबह–सुबह व शाम को जब वह फुर्सत में होते और किसी शान्त वातावरण में बैठना चाहते तो उन्हें गांव की वह रमणीक व मनोहारी गोद बहुत याद आती।

टहलते हुए चिन्तन की प्रवृत्ति उनमें आरम्भ से ही थी। किन्तु यहां उनके चिन्तन का विषय एकमात्र यहां का प्रदूषित वातावरण ही रहता था। लाख सोचने पर भी उन्हें इस समस्या का कोई हल नहीं दिखाई देता था।

मास्टरजी का मकान सड़क के एकदम किनारे था जहां दिन–रात वाहनों का आना–जाना लगा रहता था। उन्हीं के दूसरी ओर खाली स्थान था जहां बेर की झाड़ियां लगी हुई थीं तथा सड़क के किनारे बसे लोग उस स्थान का प्रयोग प्रायः कचरा डालने में करते थे। एक दिन उन्होंने देखा कि वह बहुत बड़ा क्षेत्र जहां कचरा डाला जाता था वहां कुछ हिस्से की सफाई करके कुछ चलती–फिरती दुकानें खड़ी कर दी गई थीं। वह दुकाने अतिक्रमण के अन्तर्गत आती थीं। अतः कॉलोनी के लोगों ने उन दुकानों की शिकायत अतिक्रमण विभाग

से करके उन्हें वहां से हटवा तो दिया परन्तु वे लोग इस प्रकार के अतिक्रमण को हटाने का स्थायी हल नहीं खोज पाये थे। इस समस्या के समाधान में ही मास्टरजी ने अपनी समस्या का समाधान भी खोज लिया था।

अगले दिन सबने देखा मास्टर जी सामने वाले क्षेत्र का कचरा हटाने में जुटे हुए थे। आसपास के लोगों को उनके इस कृत्य पर आश्चर्य हो रहा था। कुछ लोग तो उन्हें यह कार्य करते देख मन ही मन हंस भी रहे थे किन्तु मास्टरजी उन लोगों के भावों एवं विचारों से बेखबर होकर अपने कार्य में जुटे रहे।

इस तरह कई दिनों तक मास्टर जी प्रतिदिन सुबह–सुबह यही काम करते। कुछ ही दिनों में सड़क के उस पार का वह विस्तृत खाली स्थान पूरी तरह साफ हो गया था। मास्टरजी ने उस क्षेत्र के आसपास कांटों की बाड़ लगा दी। प्रतिदिन सुबह–सुबह विद्यालय जाने से पूर्व मास्टरजी वहां कुछ गड्ढे खोदते। अब यह क्षेत्र उनके कर्मस्थली बन चुका था। गांव छोड़ते समय उनके मन में प्रकृति के प्रति असीम लगाव के कारण जो भाव उठ रहे थे उन भावों ने शहर में आकर संकल्प का रूप लिया था। यह क्षेत्र उस संकल्फी की क्रियान्विति का प्रतीक बन चुका था।

इन गड्ढों में मास्टरजी ने कई नन्हें–नन्हें पौधों के साथ ही गांव से लाए बीजों को भी रोपा। प्रतिदिन पानी देना अब उनकी दिनचर्या में सम्मलित हो गया था। पौधों की सुरक्षा के लिए स्वयं बबूल के कांटे दूर–दूर से काट कर लाते थे।

धीरे–धीरे मोहल्ले वाले मास्टर जी के कार्यों एवं विचारों की महानता को समझने लगे। मास्टरजी के कार्यों पर जो लोग हंसा करते थे वही अब उनके सामने नतमस्तक होने लगे। उनका पर्यावरण के प्रति लगाव पूरी कॉलोनी में चर्चा एवं प्रशंसा का विषय बन गया था। कोलाहल एवं धुएं से भरे वातावरण में हरे–भरे पौधों एवं रंग–बिरंगे पुष्पों से लदी विस्तृत वाटिका लोगों का बरबस मन मोह लेती थी।

कुछ ही वर्षों में वाटिका ने एक सुन्दर वाटिका का रूप ले लिया था। पूरी कॉलोनी के व्यक्ति मास्टरजी को विशेष सम्मान देने लगे थे। कॉलोनी के विकास कार्यों में अब मास्टर जी की सलाह ली जाने लगी। इस वाटिका में पूरे मोहल्ले का आर्थिक सहयोग लेकर हनुमान जी की एक प्रतिमा स्थापित की गई, तब से इसका नाम हनुमान वाटिका हो गया। पूरी कॉलोनी के लोगों को मास्टर जी अपने–अपने घर के सामने एक एक वृक्ष लगाने की सलाह देते थे। कॉलोनी वालों ने उनकी इस सलाह का पालन भी किया। कुछ ही दिनों में पूरी कॉलोनी सघन वृक्षों से आच्छादित हो गई थी। पिछले ही वर्ष पर्यावरण की दृष्टि से इस कॉलोनी को शहर की सर्वश्रेष्ठ कॉलोनी घोषित किया गया था।

'' मास्टारजी बहुत–बहुत बधाई हो।'' अचानक आई इस आवाज ने मास्टरजी की विचार–श्रृंखला को भंग किया। मास्टर जी ने पीछे मुड़कर देखा तो पड़ोस वाले यादव साहब थे। ''क्यों भाई, सुबह–सुबह यह बधाई आखिर किस बात की दे रहे हो ?'' मास्टर जी मुस्कुरा कर बोले, ''आपने आज का अखबार नहीं पढ़ा शायद!'' यादव साहब बोले। ''भाई आप तो जानते हो मेरे दिन की शुरुआत अखबार से नहीं इस वाटिका में अपने इन हरे दोस्तों को देखने से होती है। जब तक यहां आकर इन्हें हंसते–मुस्कराते नहीं देख लेता तब तक तेा ऐसा लगता ही नहीं कि सुबह भी हुई है।''

मास्टर जी की बात सुनकर यादव साहब हंस पड़े थे।

''परन्तु मुझे भी तो बताओ अखबार में ऐसी कौन सी खबर छप गई जिसे पढ़कर आप मुझे बधाई दे रहे हो।'' मास्टर जी की बात सुनकर यादव साहब बोले, '' मास्टर जी जैसा कि प्रतिवर्ष 'पर्यावरण दिवस' पर राज्य के चुने हुए लोगों को पर्यावरण के प्रति उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया जाता है, आप को जानकर प्रसन्नता होगी कि इस बार आप को भी इस सम्मान हेतु चुना गया है।''

यह सुनकर मास्टरजी को लगा यह सम्मान उनको नहीं बल्कि उन हरे–भरे पेड़–पौधों रूपी दोस्तों को मिला है जो हमारा जीवन हैं।

**प्रद्युम्न कुमार शर्मा**
**डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवंडी, कोटा**
**राजस्थान**

# मेरी सहेली

**अपना दर्द भूल कर इस नई दिलचस्प घटना को जानने का मन हुआ। मां को आंखों के इशारे से पास बुलाया तो पाया कि मां के गाल आंसुओं से भीगे हैं। मां, ये क्या हो गया कि उच्च श्रेणी कि पण्डिताइन हमारी दादी और तुम उस नीच जाति को सीने से लगाए कैसे बैठी हो ?**

आज अपने बच्चों को गली–मोहल्ले में खेलते देखा तो अपना मन पुरानी गलियों में घूम गया कि किस तरह का अनूठा, सतरंगी बचपन था हमारा। सभी भाई–बहन एक–दूसरे के साथ हंसी–ठिठोली करते, मस्ती मारते रहते थे।

हमारे घर के ठीक सामने वाले घर में कुछ चहल–पहल सी थी उस दिन। अपने से छोटे भाई को जासूसी करने भेजा तो मालूम हुआ कि मोहल्ले में नये पड़ोसी आए हैं जिनके घर पर हमारी उम्र के बच्चे भी हैं।

मन खुशी से झूम उठा कि चलो अब तो मस्ती का नया अड्डा भी मिलेगा। तभी दादी अपनी माला फेरते–फेरते हमारे कमरे में आई और लगी बोलने, ''अब तो बस धर्म भ्रष्ट होकर ही रहेगा। शुद्ध ब्राह्मणों के घर के आगे मलेच्छ जो आ गये हैं। सुबह उठते ही अब राम नाम के बजाये इनका चेहरा देखने को मिलेगा, सारा दिन बेकार जायेगा।''

दादी की ये बातें हमारे लिए नई नहीं थीं। दादी तरह–तरह के तरीकों से कभी झाड़ूवाली तो कभी कूड़ेवाली की परछाई से भी स्वयं को बचाती रहती थी।

खैर, हम तो हम थे। दादी की इन बातों पर केवल हंसी–ठिठोली करते खिसक लेते थे। पर असली शामत तो मां की आती थी जिसे दादी के तानों का ताज पहनना पड़ता कि 'रमा तेरे बच्चे गुल खिलायेंगे जरूर।'

बेचारी मां चुपचाप पल्लू में सिमटी घर का सारा काम करती रहती व दिन भर दादी की टकबक सुनती रहती। मां हमें कम टोकती थी पर कभी–कभी बड़े प्यार से हमें समझाती कि दादी की बातों को मानना भी चाहिए। मां को भी जाति–पाति से भले मन में परहेज न रहा हो पर उन्हें भी विरासत में यह सब मिला था। तो मां के पास कोई चारा न था।

पिताजी तो सीधे–सादे थे। सारा दिन दुकान पर बीत जाता। उन्हें हमसे कोई लेना–देना न था। बस सुबह हम उन्हें देखते और रात जब हम सो चुके होते तो वे दुकान बढ़ा कर घर पहुंचते।

खैर, इन सब के चलते–चलते हमने पूरी तैयारी कर ली थी उन सामने वालों के साथ दोस्ती करने की। सुबह स्कूल के लिए निकली तो देखा मेरे ही जितनी एक लड़की सामने वाले घर से निकली और हम एक ही रास्ते पर बढ़ने लगे, चुपचाप कनखियों से एक दूसरे की ओर देखा और फिर अनदेखा कर अपनी राह पर चलने लगे।

चलते–चलते स्कूल आ गया। प्रवेश करने पर मालूम चला कि कक्षा में कोई नई छात्रा आई है नफीसा। सभी उसे घेरे खड़े थे। मैं भी उसे देखने आगे बढ़ी तो पाया कि यह तो वहीं सामने वाली लड़की है। चलो दोस्ती का हाथ बढ़ाया जाये पर तभी मन के कोने में दादी मां की आवाज गूंजी मलेच्छ। पर नफीसा को देखकर कहीं भी ऐसा न लगा कि वो उच्च कोटि की ब्राह्मण परिवार की मित्र बनने लायक नहीं। खैर, दादी की सोच को दरकिनार कर हम सहेलियां बन गये और खूब पक्की भी।

अब तो स्कूल जाना बड़ी ही सुहाना लगने लगा। हम दोनों में पढ़ाई की होड़ लगी रहती। धीरे–धीरे स्कूल में हमें 'हंसों का जोड़ा' कहा जाने लगा। बात उड़ते उड़ते घर तक भी पहुंच गई। अब दादी की बारी थी। वह मां को छोटी जाति, बड़ी जाति का भेद समझा कर मुझे रोकने को कहने लगी। मां ने समझाया भी तो मां को मैंने यह कह कर चुप करवा दिया कि देखो न, आप ही हममें अंतर बताओ कि उसकी मेरी कद–काठी, रंग एक से हैं तो फिर हम मित्र क्यों नहीं रह सकते ? ये छोटी जाति क्या है ?

अब तो दादी भी पीछे न थी। जब–जब उन्हें पता चलता कि मैंने नफीसा को छुआ है वो मुझे बिना नहाये घर में बैठने–उठने न देती। मां भी उनकी आज्ञा का पालन करती। सर्दी हो या गर्मी यदि मेरी जिद्द है कि मैं नफीसा के साथ खेलूंगी तो घर पर पहले मुझे नहाना पड़ेगा तब ही कोई और बात होगी। मां को भी कुछ समझाना बेकार लगता। जैसे दादी और मां दोनों एक ही हो गईं थीं।

स्कूल में जब नफीसा दौड़ते–दौड़ते गिर गई और उसके घुटने से हल्का–हल्का रक्त बहने लगा था तो पाया कि अरे! उसके और मेरे खून का रंग भी एक सा है फिर मां और दादी क्यों उसे हमसे भिन्न मानती हैं। क्यों वो हमारे घर नहीं आ सकती ? क्यों स्कूल के अलावा हम कहीं खुलकर मिल नहीं सकते। पर हम दोनों का प्यार बहनों सा बढ़ता रहा।

एक दिन हम दोनों हाथों में हाथ डाले घर लौट रहे थे तभी दादी ने देख लिया और हद तो तब हुई घर लौटने पर जब दादी चिमटे को गर्म कर मेरा हाथ दागने चली थी कि मेरी इतनी हिम्मत मैंने उसका हाथ पकड़ा था।

दादी के जाति–पाति रंग–भेद समझ से परे थे। पर अब धीरे–धीरे दादी का डर बाल मन पर अपनी छाप छोड़ने लगा था। फिर भी दिल समझ न पाता कि हमने और उनमें क्या फर्क है जबकि वो भी हमारी तरह मनुष्य ही है फिर क्या अंतर है ?

मन कभी–कभी उदास रहता, धीरे धीरे नफीसा से कटने लगी थी। पर वो न जाने मन की गहराईयों में कहां गहरे तक उतरी थी कि चाह कर भी उससे मित्रता न छोड़ पाती। इसी उहापोह में आधी छुट्टी के वक्त न जाने किसकी अड़ंगी लगी कि मैं गिर पड़ी और रक्त बहने लगा, फिर कुछ न मालूम हुआ। धीरे–धीरे बेहोश हो गई थी।

जब आंखें खुलीं तो सिर पर बड़ी सी पट्टी बंधी थी और दर्द के मारे बुरा हाल था। तभी नजर घुमाई तो दंग रह गई कि मां और दादी नफीसा को गले लगाये साथ वाले पलंग पर बैठे हैं।

अपना दर्द भूल कर इस नई दिलचस्प घटना को जानने का मन हुआ। मां को आंखों के इशारे से पास बुलाया तो पाया कि मां के गाल आंसुओं से भीगे हैं। मां, ये क्या हो गया कि उच्च श्रेणी की पण्डिताइन हमारी दादी और तुम उस नीच जाति को सीने से लगाए कैसे बैठी हो ?

तब रहस्य का पर्दा उठा कि मेरे सिर पर चोट लगने के कारण काफी रक्त बह गया है। मुझे रक्त की आवश्यकता थी। मैंने मां से सवाल किया तो फिर मां हमारी ऊंची जाति वालों ने ही रक्त दिया होगा न। मां ने रोते–रोते सिर हिलाया कि नहीं, तुम्हारी सहेली के अलावा किसी का रक्त तुमसे मेल न हो पाया और जान बचाने के लिए नफीसा ही खुशी–खुशी आगे आई। उसी ने अपना खून दिया है तुम्हें। इतने में दादी व नफीसा भी मेरी ओर आईं। दादी के चेहरे पर शर्म झलक रही थी।

शायद आज वो इतना पुराना अंतर लांघ आई थी। तभी भाई ने चुटकी ली, ''दादी मां, अब तो दीदी को सारा दिन पानी में ही रहना पड़ेगा क्योंकि अब तो नफीसा का खून उसके शरीर में है।''

दादी ने प्यार से चुटकी काटी और बोली, ''मैं इतनी बड़ी होकर भी नादान थी। तुम बच्चों ने रंग रूप, जाति–पाति व संप्रदाय का भेद मिटाकर मुझे नया रास्ता दिखाया है। आज अगर नफीसा न होती तो हमारी खुशबू भी न होती। आज से ये भी तुम्हारी तरह मेरी प्रिय है और बेहिचक घर आ–जा सकती है और हां, इसे छूकर अब तुम्हें नहाना भी नहीं पड़ेगा।'' सभी खुश थे सबकी आंखों में खुशी के आंसू थे।

आज भी नफीसा और मैं बहनों से बढ़ कर हैं। हमारे ससुराल भले ही उत्तर–दक्षिण में हैं फिर भी हमारे दिल एक हैं। छुट्टियों में मां के घर आज भी हम मिलकर रौनक लगाते हैं।

**सरिता शर्मा**
**एम.एम पब्लिक स्कूल,**
**वसुधा एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली**

# सेवा

**सुबह आठ बजे के लगभग पांचों बेटे–बहू और चारों बेटी–दामाद आ गये। आरती और हरि से तरह–तरह के प्रश्न किये फिर पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा दी। किसी ने अखबार, टी.वी में सूचना देने को कहा तो शीघ्रता से यह भी किया।**

सुख की अनुभूति जो औलाद के जन्म से होती है वह अनुभूति विशम्भर दयाल को नौ बेटों–बेटियों से मिली। खुशी–खुशी पढ़ाया और शादी–ब्याह किया। विशम्भर दयाल और उनकी धर्मपत्नी की मेहनत, संस्कार और पुण्य से आज पांच बेटे और चार बेटियां अच्छे ओहदे पर हैं।

कहते हैं–एक समय परछाई भी साथ छोड़ देती है। वही हुआ, धर्मपत्नी ने कर्त्तव्य का निर्वाह कर विशम्भर दयाल का साथ छोड़ परमात्मा में विलीन हो गई। बेटे–बेटियां अपनी–अपनी नौकरियों के कारण अलग–अलग शहरों में बस गये।

बड़े से बंगले में आरती और हरि के साथ बेहद खुश थे विशम्भर दयाल। अक्सर कहते थे–थोड़ी सी जिंदगी में थोड़ा प्यार ही जरूरी है। आज सुबह से पंलग पर लेटते, फिर उठते, मन में न जाने कौन सी उथल–पुथल हो रही थी। फिर बैठे–बैठे आरती बेटा, चाय बनाना।

आरती ने गुस्से भरे लहजे में कहा, ''क्या है बाबूजी ? सुबह से आपकी ये पांचवीं चाय है, कितनी चाय पियोगे ? अब मैं नहीं बनाउंगी। बाबूजी ने अपना स्नेह लुटाते हुए कहा, ''बेटा तू चाय बोहुत ही अच्छी बनाती है और हां, सच इस चाय के बाद नहीं कहूंगा। क्या एक और बार अपने बाबूजी को चाय नहीं पिलायेगी ?'' बाबूजी ने सहज–सरल प्रेम भाव में कहा।

आरती नौ साल से बाबूजी की सेवा कर रही थी। बाबूजी पर गुस्सा भला कर लेती पर काम की मनाही कभी नहीं की। मुस्कुराते हुए कहा, ''ठीक है बाबूजी, इसके बाद न कहना।''

बाबूजी ने कहा, ''ठीक है बेटी। और हां, हरि कहां गया ?''आरती ने कहा, ''बाबूजी, पेड़–पौधों में पानी डाल रहा होगा।'' फिर अचानक आरती को याद आया तो हड़बड़ाकर बोली, ''नहीं–नहीं बाबूजी, वो तो गैस सिलेण्डर लेने गया है। आजकल सिलेण्डर की भी कितनी मारामारी हो गई है, सिलेण्डर आसानी से मिलते ही नहीं हैं। दो दिनों से लकड़ी के चूल्हे पर खाना बना रही हूं।'' आरती बड़बड़ाते हुए किचन में चली गई।

बाबूजी ने लकड़ी की अलमारी से फाइल निकाली और देखने लगे, फिर एक कागज पर कुछ लिखने लगे, तभी आरती चाय बनाकर ले आई और बोली, ''बाबूजी चाय।''
बाबूजी ने लिखते हुए कहा, '' बेटा रख दो।'' आरती चाय रखकर जाने लगी तो बाबूजी ने हाथ पकड़ लिया।

आरती ने कहा, ''क्या हुआ बाबूजी ?'' बाबूजी ने फाइल से फोटो निकालते हुए कहा, ''बेटा ये कमला की फोटो है, बस रंग में ही फर्क है, बिल्कुल तेरी जैसी है।'' आरती बाबूजी के व्यवहार से अचरज में थी फिर भी मुस्कुराते हुए कहा, ''आप भी क्या बाबूजी ? मुझ गरीब से..... और इतने दिनों से यह फोटो कहां थी ?''

बाबूजी की आंखें गीली हो गईं, रुआंसे गले से कहा, ''बेटा, कभी सामने रखने की हिम्मत ही नहीं हुई।'' इतने में सिलेण्ड लेकर हरि आ गया। हांपते हुए बोला, बाबूजी, आखिरी सिलेण्डर था। यदि जरा भी लेट हो जाता तो गया था। फिर पूरे एक सप्ताह बाद मिलता। आरती ने कहा, '' क्या है हरि, आज ही सिलेण्डर आये और आज ही बंट गये।'' हरि ने समझाते हुए कहा, ''बाबूजी, अब सब लोग गैस सिलेण्डर का इस्तेमाल करने लगे हैं। लकड़ी चूल्हे की बात गई, रही कसर तो बड़ी–बड़ी होटलों में काला बाजारी हो जाती है।

आरती ने कहा, ''लो! बाबूजी हरि के प्रवचन शुरू हो गये। आप तो चाय पी लीजिए नही तो ठण्डी हो जायेगी। बाबूजी को अचानक याद आया और कहा, ''अरे हां! मैं तो भूल ही गया था। बेटा हरि को चाय दो।'' हरि ने कहा, '' नहीं बाबूजी आप लीजिए, मैं बाद में ले लूंगा।''

आरती ने कहा, '' हां बाबूजी आप तो लीजिए। मैं हरि को बाद में बनाकर दे दूंगी। बाबूजी बोले, ''नहीं–नहीं हरि काम करके लौटा है, पहले उसे चाय दो। मुझे बाद में ला कर देना।''

बाबूजी ने चाय हरि के हाथों में पकड़ा दी। हरि चाय पीने लगा और आरती ने कहा, '' बाबूजी, मैं आपके लिए अभी चाय लाई।'' कहते हुए किचन में चली गई। बाबूजी अधूरी लिखाई को पूरी करने में लग गये। हरि चाय पीकर अपने काम में और आरती चाय देकर किचन के काम में व्यस्त हो गई।

तकरीबन दोपहर के ग्यारह बजे होंगे। बाबूजी ने कमला की फोटो फ्रेम दीवार पर टांगकर आरती और हरि को बिना आहट आये घर से निकल गये। आरती और हरि ने जब बाबूजी शाम छह बजे तक नहीं लौटे तो फ्रिक से आस–पड़ोस, बाजार, पार्क सब जगह ढूंढ डाला लेकिन बाबूजी का पता नहीं चला।

हरि ने बेटे–बेटियों को फोन कर बताया। बड़े बेटे ने कहा–वहीं होंगे, नौ–दस बजे तक आ जायेंगे।'' हरि ने कहा। ''मालिक, बाबूजी का नियम रहा है कि आठ बजे के बाद घर के बाहर कदम नहीं रखते, आज पहली बार''...बडे बेटे ने कहा, '' थोड़ा इंतजार करो, आ जायेंगे।''

रात के बारह बज गये थे। आरती और हरि की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। न जाने कितने सवाल दिमाग में उठते और फिर हताशा। आरती ने हरि से कहा, '' बाबूजी आज सुबह से ही बेतुकी बातें कर रहे थे। मालूम नहीं, कहां होंगे ? कैसे होंगे ?'' हरि ने कहा, '' हे भगवान! सकुशल बाबूजी को घर लौटा दो। हमारी लाज रख लो।'' आरती और हरि की जान सूख रही थी। आंखों नींद नहीं, पूरी रात जागकर बिता दी।

सुबह आठ बजे के लगभग पांचों बेटे–बहू और चारों बेटी–दामाद आ गये। आरती और हरि से तरह–तरह के प्रश्न किये फिर पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा दी। किसी ने अखबार, टी.वी में सूचना देने को कहा तो शीघ्रता से यह भी किया।

बेटे–बेटी घर के हिस्सा करने की योजना बनाने लगे। बड़े बेटे ने कहा, '' कौन रहेगा यहां, बेच देते हैं। बराबर–बराबर रुपये बांट लेंगे।'' बेटियां भी तैयार हो गईं। छोटे बेटे ने कहा, '' किराये पर दे देते हैं, कम से कम बाबूजी की याद दिलाता रहेगा। तभी बाबूजी के पलंग के तकिये के नीचे दादाजी की चिट्ठी पोती

उठाकर चिल्लाते हुए बोली, ''पापा–पापा.....दादाजी की चिट्ठी, दादाजी की चिट्ठी।'' बड़े बेटे ने कहा, ''दिखा–दिखा।''

बड़े बेटे ने चिट्ठी खोली, लिखा था–''मैंने अपना घर अपने बड़े बेटे और बेटी के नाम कर दिया है। ऑरिजनल कागज वकील रमाशंकर के पास हैं, डुप्लीकेट कागज आप के बिस्तर के नीचे रखी फाइल में देख सकते हैं।'' अन्त में लिखा था ''कृपया आपसे आग्रह है मुझे ढूंढने की कोशिश मत करना क्योंकि मैं अपना जीवन अब भगवान को देना चाहता हूं। आपका.....।

तभी पुलिस की गाड़ी आ गई। पुलिस ने केप निकालते हुए कहा, ''दादाजी मंदिर में मिले लेकिन कल रात की ठण्डी से पुजारी जी भी नहीं बचा सके, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे।'' परिवार स्तब्ध रह गया। पुलिस अपने कर्तव्य का पालन कर चली गई। बेटे और बेटियां वकील से मिलने चले गये। आरती और हरि ने काफी समय तक इंतजार किया लेकिन बेटा–बेटी शाम चार बजे तक नहीं लौटे तो आस–पड़ोस के लोगों ने कहा, ''सूर्य ढलने पर अंतिम संस्कार नहीं होगा।'' हरि और आरती ने कुछ देर सोचा फिर साहस कर अंतिम संस्कार पूर्ण किया। वकील साहब ने अंतिम सेवा के बाद फाइल आरती और हरि के हाथों में सौप दी।

**रीटा नायक**
**ज्ञान विकास माध्यमिक विद्यालय**
**नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र**

# मासूम देवदूत

**सारा गांव उसे कृतज्ञता से देख रहा था। आज हर मां की आंखों में उसके लिए आंसू थे। हर होंठ उसे आशीर्वचन बोल रहे थे और हर पिता के हाथ उसकी आत्मा की शांति के लिए जुड़े थे। हर एक उसके अंतिम दर्शन करने के लिए लालायित था तथा हर दिल में यह संकल्प था कि अब कभी भी गांव में कोई भी नशे का सेवन नहीं करेगा।**

आज के परिवेश को देखते हुये मनुष्य मात्र आत्मसंयम की प्रेरणा से प्रेरित होकर ही अपना जीवन संयत नहीं कर सकता है अपितु उसे आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु भी अपने दायित्वों का वहन कैसे किया जाये, उस ओर भी अध्ययन की आवश्यकता है। उन मानवीय मूल्यों द्वारा वह समाज में आदर्श स्थापित कर सकता है तथा मैत्री, एकता, सहिष्णुता व शांति का संदेश दे सकता है।

समाज में भटकाव, दुराचार का दानव अपने कदमों को अंगद के पैर की तरह जमाये हुए है। उसे बुद्ध की तरह आत्मसंयत होकर दुर्भावना पर सद्भावना की अमिट छाप छोड़नी है। जिस प्रकार सुरेश व पराग ने अल्प आयु में ही इस मशाल को प्रज्ज्वलित किया। आज पूरा गांव निरंतर उस मशाल की रौशनी में अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है।

पराग का आज अंतिम पर्चा था। जैसा उसने सोचा था वैसा उसका पर्चा गया। फिर भी उस रात बहुत बेचैन था। परेशान सा इधर–उधर घूम रहा था। सुबह परीक्षा की तैयारी करनी थी, सो उसने अपने आपको बहुत संयत कर रखा था। मां रोज की तरह तड़के उठकर घर के कामों में व्यस्त हो जाती है।

पिताजी की नींद न खराब हो इसलिए चक्की से गेहूं पीसते समय भरी गर्मी में वह दरवाजे अंदर से बंद कर लेती है। चाहे पसीने में तरबतर हो जाये। कुएं से पानी खींचते हुए भी हमेशा यह ध्यान रखती है बर्तनों की खनखनाहट से पिताजी की नींद न टूट जाये। वह गुमसुम–सा सब देखता रहता था। करता भी क्या, अभी मात्र दस वर्ष का बालक ही तो था।

परंतु आज उसे एक महत्वपूर्ण कदम उठाना था। वह जानता है मां उसकी अनुमति उसे हरगिज नहीं देगी। फिर भी इस काम के लिए उसे पहला कदम बढ़ाना ही था जहां नशे के लिए लोग अपने ही घर में इस जहर को उगाते थे। गांव के हर घर में गांजे के पेड़ हुआ करते थे। घर पहुंचकर गांव के मर्द शाम उसका सेवन करते थे। चौपाल पर उनकी अच्छी खासी महफिल जमती थी। अगर उनकी इच्छा के विरुद्ध या मनमाफिक कोई काम नहीं होता तो अपनी पत्नियों को बुरी तरह पीटते और कभी–कभी बच्चे भी उनके लपेटे में आ जाते थे।

पराग बचपन से ही यह देखता आ रहा था। उसका कोमल मन बहुत आहत होता था। वह हमेशा सोचता रहता था कि ऐसा वह क्या करे जिससे मां की परेशानी दूर हो जाये। मां को रोजाना किसी न किसी बात पर डांट खाते या पिटते देखता रहता था। और जब कभी पिताजी प्रसन्नचित होकर मां से बतियाते तो दादी जाने कहां से शिकायतों का पिटारा ले आती और उस दिन की कसर भी पूरी करवा देती ।

बचपन में नासमझी में उसे ये सब अच्छा लगता था। क्योंकि जब वह किसी चीज की जिद करता और वह जिद दादी पूरी करवा देती तो उसे दादी से बड़ा अपना हितैषी और मां से बड़ा दुश्मन कोई नजर ही नहीं आता था।

परंतु जैसे जैसे वह किशोरावस्था की ओर जा रहा था वैसे–वैसे उसे मां की दयनीय अवस्था देखकर यह सब अच्छा नहीं जगता था। उसने मन ही मन संकल्प कर लिया कि वह जीवन में कभी नशा नहीं करेगा। कैसे भी करके वह अपनी मां को इन सब परिस्थितियों से आजाद करायेगा। पर कैसे! यही प्रश्न दानव की तरह मुंह बाये खड़ा था। उसने संकल्प तो ले लिया कि वह कभी नशा नहीं करेगा और पढ़–लिखकर शहर जाकर अपनी मां को आजाद करायेगा परंतु इन सब में अभी बहुत वक्त था। वह ऐसा अभी क्या करे जिससे मां इन सब मुसीबतों से मुक्त हो जाये और स्वछन्द गगन में सांस ले सके।

उसे याद आया स्वामी विवेकानंद जी की शार्दशती की जंयती पर उसके शिक्षक ने कहा था कि स्वामी जी कहते हैं छोटे से छोटा प्रयत्न भी सफलता की पहली सीढ़ी बन सकता है। 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' अर्थात् धर्म का थोड़ा भी कार्य करने पर परिणाम बहुत बड़ा होता है। केवल व्यर्थ की बातों में शक्तिक्षय न करके इस दुर्दशा का निवारण करने के लिए कोई यथार्थ कर्तव्य पथ निश्चित करें। महज लोगों की भर्त्सना न करते हुए, वरन् उनकी सहायता का कोई उपाय सोचें।

पराग ने सोचा जब स्वामी जी देश की प्रगति के लिए भ्रमण करके देशवासियों में जागृति ला सकते हैं तो मेरे सभी मित्रों की माताएं लगभग एक सी वेदना से गुजर रही हैं तो हम सब एकमत होकर क्यों नहीं इन सब परिस्थितियों को बदल सकते हैं।

वह नन्हा बालक क्षीतिज को छूने की कल्पना कर रहा था परंतु पक्के इरादे, दृढ संकल्प और अथाह आत्म विश्वास से कोई कार्य किया जाये तो पर्वत को भी वर्षा का जल काटकर पतली सी नाली व अंत में एक विशाल नदी का रूप ले लेता है।

आज पराग ऐसा ही कुछ करने जा रहा था। सर्वप्रथम वह अपने मित्र श्याम के घर गया। वह भी उसी की दुःख भरी कश्ती में सवार था और श्याम पराग से बड़ा था, अतः वह अपनी मां पर जुल्म होते देखकर पिता का यदा कदा सामना भी कर लेता है। दोनों एक जैसी समस्या से जूझ रहे थे। एक जैसी समस्या से पीडित होने के साथ–साथ पड़ोसी भी थे, इसलिये दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी।

अपनी मां के लिए वह भी बहुत कुछ करना चाहता था। जब पराग ने उसे अपनी योजना बताई तो वह मारे खुशी के उछल पड़ा। उसने पराग को प्रशंसा भरी नजरों से देखा और कहा, ''जब वानर सेना लंका पर जाने के लिए इतने बड़े समुद्र पर सेतु बना सकती है तो हमारे छोटे से गांव को तो मुक्त करा ही सकती है। इन

सबके लिए हम सबको एकजुट होना जरूरी है। इसके लिए अपने सभी मित्रों को तैयार करना होगा। हमें अपनी योजना एक निश्चित समय, निश्चित दिन पूर्ण करनी होगी।''

गांव में एक लड़का था सुरेश। उसके माता–पिता दोनों ही एक हादसे में गुजर गये थे। वह चाचा–चाची के पास रहता था। वह सभी का काम दौड़–दौड़ कर उत्साहपूर्वक करता था। उसे गांव में सभी पसंद करते थे। कक्षा में भी सभी विद्यार्थियों का चहेता था। सभी की मदद के लिए तत्पर रहता था, क्या बड़े क्या छोटे, सभी उसका बहुत सम्मान करते थे। इसलिए सबसे पहले पराग और श्याम सुरेश के पास गये और अपनी योजना बताई।

सुरेश ने शांतचित्त होकर उनकी पूरी योजना सुनी और सहायता करने का वादा भी किया। किन्तु वह जानता था यह कार्य इतना आसान नहीं है। वट वृक्ष की तरह दसकी जड़ें हर घर में फैली हुई थी। उसे जड़ से उखाड़ना रेगिस्तान में फूल खिलाने जैसा था।
जब पराग ने उसे चिन्तामग्न देखा तो कहा, ''तुम्हें ज्ञान देना सूर्य के प्रकाश में दीपक जलाने जैसा है। परंतु तुम्हें ज्ञान होगा कि स्वामी जी ने शक्तिशाली विदेशियों को अपने ज्ञान व युक्ति से परास्त कर दिया था। उन्होंने अपने संदेश में कहा था 'हमारे लोहे के पुट्ठे और फौलाद के स्नायु हैं। हम लोग बहुत रो चुके अब और रोने की आवश्यकता नहीं। हमें ऐसे प्रयत्न्यों की आवश्यकता है जिससे हम मुनष्य बन सकें। हमें ऐसी सर्वांग सम्पन्न शिक्षा चाहिए जो हममें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सबल बनाये। जो सोच हमें निर्बल करें, कायर बनाये अपनी माता–बहिन की रक्षा न कर सके उसे जहर की भांति त्याग दें।

इतना सुनते ही सुरेश के ज्ञान–चक्षु खुल गये। जो थोड़ी बहुत निराशा थी वह भी कपूर की भांति उड़ गई और वह दृढ कदमों से खड़ा हो गया। तीनों के चहरों पर आशा की आभा दमक रही थी, अधरों पर जीत की मुस्कान थी। पराग ने उसके वजूद को हिलाकर रख दिया था। उसने इतना उत्तम कार्य करने के लिए पराग की भूरि–भूरि प्रशंसा की। तीनों अपनी योजना को कार्यान्वित करने निकल पड़े।

तीनों प्रसन्नचित व अटूट आत्मविश्वास से भरे हुए थे। उन्होंने अपने सभी मित्रों को एकत्र किया और अपनी योजना बताई। प्रारम्भ किया उसने सर्वप्रथम एक प्रश्न पूछ कर, कौन–कौन अपनी मां को कितना प्यार करता है और उनके लिए क्या क्या कर सकता है। किसी ने कहा, '' मैं मां के लिए कुएं से पानी लाता हूं। किसी ने कहा मां बीमार रहती है तो मैं उनके हाथ–पैर दबाता हूं।' किसी ने कहा जब पिताजी उन्हें मारते हैं तो मैं हल्दी–चूना लगाता हूं।

अधिकांश मित्रों के मिलते–जुलते जवाब थे। इतना सुनने पर उसने कहा, ''कभी सोचा है मां की इस दुर्दशा का जिम्मेदारी कौन है।'' एक मित्र ने कहा, ''मां खुद है। वो कभी स्वयं पिताजी का विरोध ही नहीं करती है''।

दूसरा मित्र दुःखी मन से कहता है, ''बेचारी विरोध क्या करें और मार ज्यादा पड़ती है। सभी एक स्वर में बोले, ''हमारी इस दुर्दशा का दोषी नशा, शराब व गांजा है जिसने हमारा बचपन छीन लिया। हमारे परिवार की खुशियां इस नशे के होम में स्वाहा हो गई। हमें मन मसोस कर जीने पर मजबूर किया।''

सब एक–एक करके अपने मन की व्यथा कहने लगे। ''अगर हमारे पिता नशा न करते होते तो हम भी अच्छे कपड़े पहनते, हमारी भी समय पर स्कूल की फीस भरी जाती। और बच्चों की तरह हम भी अपने परिवार के साथ मेला देखने जाते। इस नशे की वजह से हमारी सारी हसरतें मन की मन में रह गईं''। वे सब एक–दूसरे को निराशा भरी नजरों से देखने लगे। ''अगर आप सब लोग मेरा साथ दो तो हमने एक योजना बनाई है, जिसकी सहायता से अपने परिवार को खुशहाल बना सकते हैं। बोलो सब मेरा साथ दोगे।''

सबने एक स्वर में हामी भर दी। अब सुरेश ने अपनी योजना बताना आरंभ किया। उसने कहा, ''हम सब को निडर होकर इस समस्या का समाधान करना होगा। सर्वप्रथम हम जो करेंगे वो अपनी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करेंगे।''

इस प्रकार सुरेश ने भूमिका बांधकर अपने मित्रों को पूरी तरह अपने शब्दों से प्रेरित कर दिया। उसके मित्रों की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी की योजना क्या है। जब सुरेश ने देखा अब लोहा पूर्ण रूप से गर्म हो गया है और वह जो चाहे जिस सांचे में ढालकर उसका स्वरूप ढाल सकता है। वह कुछ क्षण थक गया। वह उस प्रवाह को भी देखना चाहता था जिसका वेग हवा के रुख को बदल सकता है। उसे रुकता देख सब विकल हो गये और व्याकुल होकर बोले, '' अब बोलो भी या फिर यूं ही लम्बी–चौड़ी डींगें मार रहे हो।''

सुरेश ने तेजी से कहा, '' अब वह दिन आ गया है, जब हमें अपने परिवार व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को करना है। उन्हें भी आज हम बाल शक्ति का परिचय करायेंगे। आज रात हम सब एकजुट होकर अपने–अपने घरों से इस नशे के जहर को उखाड़ फेकेंगे। सभी नशीली वस्तुएं मध्य रात्रि में इकट्ठ कर होली जलायेंगे। यह काम इतनी होशियारी से करना है कि कानों कान किसी को खबर न हो''।

सब हक्के–बक्के होकर एक–दूसरे का मुंह देखने लगे। कुछ तो पिता की मार के डर से भीतर ही भीतर कांप उठे। सबके चेहरे देखे तो वह तुरंत समझ गया यह सब पीछे कदम हटाने वाले हैं।

वह शीघ्रता से बोला, '' इसमें कौन सी बड़ी बात है। हमारी मां हमारे लिए इतना कष्ट झेलती हैं तो क्या हम उनके लिए इतना सा भी प्रयास नहीं कर सकते हैं,। '' इतने में राजू ने डरते–डरते कहा, ''नहीं नहीं, मुझे याद है एक बार मां रात में चूल्हा जलाने के लिए लकड़ी काट रही थी और गलती से नशे वाला पेड़ भी कट गया था तो सुबह पिता जी ने उन्हें जलती लकड़ी से ही मारा था। लगभग एक महीना लग गया था उनके हाथ को ठीक होने में।''

इस प्रकार सब फिर अपनी–अपनी आप बीती बताने लगे। तीनों नें उनकी हिम्मत बढ़ाई और कहा, '' दोस्तो! बार–बार हमारे परिवार यह कष्ट न उठाये, इसलिए हमें ये कदम उठाना होगा।'' बार–बार समझाने पर सबने निर्णय लिया कि इस काम को आज ही करेंगे। उसी समय सुरेश के चाचा की लड़की उसे ढूंढती–ढूंढती वहां आ पहुंची और उसने सब बातें सुन लीं।

वह दौड़कर घर जाकर सबको बताती तब तक सुरेश ने उसे समझा–बुझा कर चुप दिया। परंतु रात में जैसे ही सब बच्चों ने काम को अंजाम दिया वैसे ही चौपाल पर बैठ अपने पिता को उसने उन सब की योजना बता दी। चौपाल पर बैठा पुरुष उस वक्त ना किसी का पिता, और ही किसी का पति, वह नशे में डुबा नशेडी था जिसकी सोचने–समझने की शक्ति लुप्त हो चुकी थी।

क्रोध ने उनकी रही सही बुद्धि भी छीन ली थी। हाथों में जो आया वह उन मासूम देवदूतों को मारने दौड़ पड़ा। नशा तो विनाश का कारण है ही और उस पर क्रोध को दानव सवार हो जाये तो निश्चय ही सर्वनाश को अकारण ही दावत मिल जाती है परंतु जब तक क्रोध का भूत उतारता है तो सदा जीवन भर न खत्म होने वाला पछतावा छोड़ जाता है।

ऐसा ही हुआ जब उन मासूमों ने अपनी तरफ उन सब को आते देखा तो दोगुने वेग से टीले की ओर भागे। आनन–फानन में उन्होंने उन पेड़ों में व वस्तुओं में आग लगा दी परंतु उस शीघ्रता में आसपास फैला सूखा चारा न देख पाये। देखते–देखते सूखा भूसा धू धू कर जल उठा। सभी को आग की लपटों में निगलते को तैयार था। बाल–सुलभ मन है जब भी किसी मुसीबत में होता है तो मां को ही पुकारता है।

यह खबर पूरे गांव में आग की तरह फैल गई। गांव की सभी महिलाएं अपने बच्चों की सलामती के लिए अपने पतियों पर टूट पड़ीं। कहते हैं ना जब ममता आहत होती है तो कृष्ण के समान चक्रवर्ती को भी नहीं बख्शती है। एक औरत सब कुछ सहन कर सकती है परंतु एक मां अपने बच्चे के लिए मौत से भी लड़ जाती है। आज उनका खोया हुआ आत्मविश्वास व दबा हुआ आत्म सम्मान जाग उठा था।

जब बच्चों ने देखा की उनकी मां रणचण्डी बनकर उनकी सहायता के लिए आ गई है, आज वे सब एक निरीह पशु की तरह मार नहीं खा रही है अपितु अपने हक के लिए जंग लड़ रही है तो सभी बच्चो को संबल मिला और उनमें दोगुने साहस का संचार हुआ। विवेकशून्य होती हुई उनकी बुद्धि को बल मिला। वे सब बहुत खुश थे क्योंकि आज सही मायने में उनकी मां जीना सीख गई थी।

सुरेश के कहने पर अन्य साथियों ने बिना वक्त गंवाये पेड़ों से शाखायें तोड़ना प्रारंभ कर दिया और एक जगह एकत्रित करने लगे। गीली शाखाओं में आच तुरंत नहीं लगती है। उसने उनका एक सेतु बनाया और सबको तीनों मिलकर एक–एक करके निकालने लगे। इस प्रकार सुरेश व पराग की सूझबूझ से सभी बच्चों को सुरक्षित निकाल दिया गया। परंतु इस भीषण अग्नि में गीली लकड़ी भी कुछ समय बाद जल उठी। अब अंत में पराग और सुरेश ही बचे थे परंतु वहां से निकलना दो लोगों के लिए संभव नहीं था।

सुरेश ने पराग की ओर प्यार भरी नजर डाली और पूरी आत्मीयता से दोस्त के गले मिला और बोला, '' दोस्त! हमारा साथ यहीं तक था। अब तू शीघ्रता से मेरे उपर चढ़कर उस पार निकल जाओ।'' पराग व्याकुल हो उठा। वह भरे गले से बोला, ''नहीं मित्र, यह मेरी योजना थी, इसे समाप्त भी मैं ही करूंगा। अगर बलिदान ही योजना का अंत है तो वह मैं ही दूंगा।'' सुरेश ने कहा, '' मित्र ! मेरे आगे पीछे रोने वाला नहीं परंतु समाज को तुम जैसे कर्मठ और साहसी युवकों की आवश्यकता है। प्रसन्नता है कि आज तुम्हारी योजना गांव में एक क्रांति लेकर आई है। उम्मीद है इस तरह समाज के हित के लिए आगे भी तुम अग्रसर रहोगे।'' इतना कहकर उसने ऊपर देखा और बोला, '' देखो ऊपर मेरी मां भी मेरा आलिंगन करने के लिए बाहें फैलाये मेरा इंतजार कर रही है अब मैं भी उन्हें गर्व से कह सकूंगा मैंने भी अपने गांव को एक बुराई से आजाद कर दिया है। अलविदा दोस्त''। जब तक पराग कुछ समझ पाता तब तक सुरेश ने उसे पूरी ताकर से उठा लिया तथा उन जलती हुई लकडियों पर दौड़ते हुए उसे उस पार फेंक दिया।

सारा गांव उसे कृतज्ञता से देख रहा था। आज हर मां की आंखों में उसके लिए आंसू थे। हर होंठ उसे आशीर्वचन बोल रहे थे और हर पिता के हाथ  उसकी आत्मा की शांति के लिए जुड़े थे। हर एक उसके अंतिम दर्शन करने के लिए लालायित था तथा हर दिल में यह संकल्प था कि अब कभी भी गांव में कोई भी नशे का सेवन नहीं करेगा।

हर साल इस दिन सुरेश की पुण्य तिथि पर हजारों दीपमालाएं उसे श्रृद्धांजलि हेतु प्रज्ज्वलित होती हैं।

**राजकुमारी सिकरवार**
**लोकमान्य तिलक हाई स्कूल**
**पानदरीबा, उज्जैन, मध्य प्रदेश**

# कुछ तो खास है

ममता के आसपास रहने वाले लोग उससे कहते कि वह हिमालय पर जाकर रहे क्योंकि उसके विचार वर्तमान समाज के लायक नहीं, बहुत ज्यादा साधुवृत्ति वाले हैं। एक दिन रीना उससे कहती है, ''क्या साड़ी पहनी है! चूड़ी तो उसे बिल्कुल मैच नहीं करती– तुम्हारी हेयर स्टाइल तो पुराने जमाने वाली है।'' तब मैं उससे कहती ''क्या चूड़ी और महंगी साड़ी बच्चों को अधिक सक्षम बनाने में सहायक है तो उस दिन तुम्हारी बात पर विचार करूंगी।''

साधारण मनुष्य की तरह जहांगीराबाद की शिक्षिका ममता में भलाइयां और बुराइयां दोनों ही विद्यमान थीं। भलाई यह थी कि समाज में अपने विद्यार्थियों के माध्यम से मैत्री, एकता, शांति, आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों की स्थापना करना चाहती थी। बुराई यह थी कि सर्वथा निर्लोभी और निःस्वार्थी थी। भलाई ने मातहतों को निडर और आलसी बना दिया था। बुराई के कारण लोग उनका नाम आगे करके चैन की बंसी बजाते थे।

मैत्री के लिए उन्होंने क्या कुछ नहीं किया। एक घटना मुझे याद है। उनकी किसी सहेली का शहर में तबादला हुआ था। सहेली ने आराम से उनके परिवार के साथ समय बिताया। परिवार वालों ने उनके लिए हॉस्टल का प्रबंध किया, नाश्ता, खाना, सामान पैसा दिया, आना–जाना सब चलता रहा। सहेली ने कभी ध्यान नहीं दिया कि हर समय किसी को परेशान नहीं करना चाहिए, रात–बेरात कभी भी किसी भी ट्रेन से आती, जाते समय उसे पहुंचाना पड़ता था....और एक दिन मां ने पूछा, '' ममता बहुत दिनों से सपना नहीं आई ? वह फोन भी नहीं उठा रही है क्या बात है ? तब कहीं पता चला उनका तबादला होकर चार महीने हो गये हैं। धन्यवाद तो दूर, गद्दी, पैसे बर्तन लौटाने की बात भी याद नहीं रही उसे।

मैत्री की दूसरी घटना ने ममता को झकझोर दिया। हुआ यह कि उसकी सहेली के पति उच्च अधिकारी थे। अपने पद के कारण उन्होंने बहुत पैसा कमाया, शान–शौकत से रहते बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाई। बहुत बड़ा बंगला बनवाया, बढ़िया कार और हवाई जहाज की यात्रा, जिंदगी में इससे अधिक क्या चाहिए। लेकिन 'सब दिन होत न एक समाना।

कभी न कभी तो पाप का घड़ा भरता ही है। उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। जब जांच शुरू हुई तो सहेली की नींद और चैन हराम हो गये। दिन–रात आंसू बहाती। ममता तो ममता थी, उसने उसको बहुत धीरज बंधाया। बहुत समझाया तब कहीं सामान्य हुई। कभी–कभी फिर कोई जांच होती तो 'आत्महत्या' का विचार करके ममता को अपना हाल सुनाती।

एक दिन उसने कहा कि आज पुलिस उसके घर आने वाली है, अब मैं क्या करूंगी। भोली ममता को क्या मालूम कि सरकारी जांच में भावना नहीं तथ्य होते हैं, तभी तो उसने सहेली को अपने घर रहने आने का निमंत्रण दे डाला, लेकिन अपरिहार्य कारणों से जब उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ा तो सारा दोष ममता के मत्थे मार कर वह आराम से अपने दिन काट रही है।

ऐसी अनेक घटनाएं ममता के खाते में हैं फिर भी उसने अपनी ओर से कभी मैत्री का दामन खाली नहीं किया। अनवरत रूप से प्रयत्नशील ही रही। एकता और शांति तो ममता के जीवन रूपी सिक्के का दूसरा पहलू है।

कभी एकता न टूटे इसके लिए तो वह कितना सहन करती है यह तो कोई नहीं जान सका है। पारिवारिक एकता के लिए भी उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। परिवार में प्रायः सभी उच्च शिक्षित एवं धनवान लोग हैं तुलनात्मक रूप से ममता के। ममता मन से अमीर है। भौतिक साधनों ने उसे कभी आकर्षित नहीं किया जो आज के समाज में आवश्यक है। इसलिए लोगों ने काम के समय तो उसे 'परम दैवम् का दर्जा दिया, किंतु काम निकलते ही मील का पत्थर बना दिया। किसी का झगड़ा हो, स्वास्थ्य संबंधी तकलीफ, किसी के विवाह में कोई अड़चन हो, कोई कानूनी मामला हो तो ममता हाजिर। अनेक बार कोशिश की किसी के बीच में न पड़ने की किन्तु जीत हमेशा एकता और शांति की होती है क्योंकि ममता ने सदैव इसी बात का प्रयत्न किया। जब कोई उसे टोकता तो मुस्कराते हुए कहती, ''कुछ तो बात खास है तभी दुश्मन चार हैं।''

ममता को लगता आज समाज का वातावरण दिनों–दिन भयावह होता जा रहा है। कब कहां क्या हो जाये कोई कुछ नहीं कह सकता है। ऐसे समय में एकता और शांति मंत्र ही सतर्क रहना सिखाता है। यह हमें किसी के हाथ का खिलौना नहीं बनने देता जिससे समाज की शांति भंग नहीं होती । यह सद्भावना एकता और शांति बनाए रखेंगे तो ही हम अपने परिवार और समाज को सुरक्षित रख पायेंगे। ममता सदैव यही सोच कर अपना कार्य अबाध गति से करती रहती।

कभी–कभी उसे लगता 'नेकी कर सूली चढ़' क्या फायदा है ? लेकिन अपने ही विचारों को रोकती हुए सोचती क्या संसार का छोटा–बड़ा प्रत्येक व्यक्ति अकेले रहकर अपनी ढाई चावल की खिचड़ी पका सकता है ? नहीं, और न ही वह कुछ कर सकता है। अकेले व्यक्ति को तो कोई भी नुकसान कर सकता है। अपनी रक्षा के लिए तो पशु भी टोलियां बनाकर रहते हैं। यदि समाज में सभी व्यक्ति एक समान ही आस्था और विश्वास वाले हों तो एकता भंग होने की आशंका का प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन ऐसा होता नहीं। तब हमें बड़ा बनकर इस समस्या का निदान करना चाहिए और तब वह अपने ही विचारों से बाहर आकर फिर कोई समस्या का समाधान ढूंढती ।

ममता के आसपास रहने वाले लोग उससे कहते कि वह हिमालय पर जाकर रहे क्योंकि उसके विचार वर्तमान समाज के लायक नहीं, बहुत ज्यादा साधुवृत्ति वाले हैं। एक दिन रीना उससे कहती है, ''क्या साड़ी पहनी है! चूड़ी तो उसे बिल्कुल मैच नहीं करती– तुम्हारी हेयर स्टाइल तो पुराने जमाने वाली है।'' तब मैं उससे कहती ''क्या चूड़ी और महंगी साड़ी बच्चों को अधिक सक्षम बनाने में सहायक है तो उस दिन तुम्हारी बात पर विचार करूंगी। अधिक महंगी चीज खरीदना मुझे पसंद नहीं है। जब बच्चों को मैं मितव्ययता का पाठ पढाती हूं तो स्वयं उनके सामने किसका आदर्श रखूंगी। ये बातें बाकी लोग नहीं जानते, खैर.....मुझे क्या ?''

ममता बहुत आध्यात्मिक विचारों वाली थी। नियमित मंदिर जाना और आराधना करना उसकी दिनचर्या का ही एक भाग था। भाषा की शिक्षिका होने के कारण प्रायः कविता और पाठों के माध्यम से अध्यात्म का वर्णन जरूर करती। विद्यार्थी भी उसकी बात इतने ध्यान से सुनते मानों किसी ने उन्हें सम्मोहित किया है। उसे प्राचीन संत, कवि एवं लेखकों के बारे में अत्यधिक जानकारी थी। पठन उसकी रोज की आदत थी। खुद पढ़ी हुई रचनाओं को विद्यार्थी एवं सहयोगियों को वह बहुत सुंदर ढंग से समझाती। उसकी बातों में 'ब्रेन टॉनिक' जैसा प्रभाव था।

एक दिन वह मुझे बताने लगी कि आज जिधर भी दृष्टिपात करें चारों और अनैतिकता और अनाचार का पोषण हो रहा है। नैतिकता किस चिडिया का नाम है इसका अहसास किसी को नहीं है। नैतिकता और नैतिक शिक्षा का महत्व इस तथ्य से भलीं–भांति परिचित रहते हुए भी सर्वथा भुला दिया गया है। राष्ट्र निर्माण और सुरक्षा के लिए एक प्रकार के राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता रहा करती है। वह नैतिक जागृति रहने पर ही संभव हुआ करती है। आज स्कूलों में जो शिक्षा दी जा रही है उससे विद्यार्थी साक्षर तो बन रहे हैं पर शिक्षित बनने में संदेह है। उसे चांद–सितारों के बारे में तो बहुत जानकारी है पर पड़ोस में कौन रहता है इसका पता नहीं है। इसी कारण आज यह बात बड़ी तीव्रता से अनुभव की जा रही है। शिक्षा के माध्यम से नैतिक शिक्षा की व्यवस्था करना बड़ा आवश्यक है।

एक दिन ममता ने मुझे एक प्राचीन ऋषि की कथा सुनाई जिसमें ऋषि ने तपस्या करके वरदान पाया कि वह मृत व्यक्ति को जीवित कर सकेगा किंतु इसका उपयोग वह अपने जीवन में केवल एक ही बार कर सकेगा। ऋषि बहुत प्रसन्न थे। अचानक उन्होंने देखा कि टोकरी में रखे हुए फल वहां नहीं थे तब पता चला कि उनके भ्राता ने फल खाए हैं। ऋषि ने कारण पूछा तो भ्राता ने कहा, ''फल ही तो खाए हैं, क्या फर्क पड़ता है, जंगल में और भी फल लगे हैं। मैं ला देता हूं।'' लेकिन ऋषि नहीं मानें, बोले, '' चोरी तो चोरी है। किसी की वस्तु बिना पूछे लेना अपराध है।''

बात राजा के पास पहुंची। राजा ने इस बात को बहुत गंभीरता से नहीं लिया किंतु ऋषि नहीं माने तब राजा को मजबूर होकर भ्राता को मृत्युदंड देना पड़ा। इसके बाद ऋषि ने अपनी तपस्या के कारण मिले हुए वरदान का उपयोग करते हुए भाई को पुनः जीवित कर दिया।

मैं ये कहानी सुनकर दंग रह गई। क्या इतनी नैतिकता कभी हमारे समाज में हुआ करती थी। आज इतनी स्थिति खराब कैसे हो गई, यही कारण है कि हम सब कुछ होते हुए भी सुख–शांति का अनुभव नहीं करते।

ममता को जब भी समय मिलता वह अपनी कहानी बताती रहती और मैं उसके विचारों से प्रभावित होकर मन ही मन खुश होती। मुझे लगता कि आज भी ऐसे लोग हैं समाज में जिसकी वजह से दुनिया टिकी हुई है। अभी समाज में इतना अनाचार नहीं हुआ है और ममता जैसे लोग विद्यार्थियों के माध्यम से अपना सामाजिक दायित्व पूरा कर रहे हैं।

एक बार ममता ने बताया कि विद्यालय में एक कार्यक्रम चल रहा था। बहुत बड़े–बड़े लोग पधारे थे। तभी मुख्य अतिथि ने एक बच्चे के सामने माइक देते हुए पूछा, ''बेटा बड़े होकर आप क्या बनना चाहेंगे।'' अतिथि को लगा कि शायद बच्चा, डॉक्टर, इंजीनियर या व्यापारी बनना चाहेगा पर ऐसा नहीं बोला गया।

बच्चा बोला, ''सर, मैं बड़ा होकर अच्छा इंसान बनना चाहूंगा।'' यह बात काल्पनिक नहीं है। ऐसा एक कार्यक्रम के दौरान वास्तव में हुआ था। तब ममता की आंखों में आंसू आ गये। उसको अपना अध्यापन सार्थक लगा। वृक्ष का बीज भी तो बहुत छोटा होता है पर समय आने पर वह महावृक्ष बन जाता है। यही महसूस करके ममता को लगा कि यह बच्चा नैतिकता के दीप से सबका मार्ग प्रशस्त करेगा।

ममता की बातें तो कभी खत्म नहीं होंगी। उसने मैत्री, एकता, शांति की स्थापना, आध्यामिकता और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में कहां कमी रखी ? मैत्री में निराशा मिलने पर भी उसने कभी मैत्री का दामन नहीं छोड़ा। आज भी जब किसी को किसी भी समस्या से रूबरू होना पड़ता है तो सबसे पहले मदद का हाथ ममता का

उठता है। अपनी किसी भी हार को वह हार नहीं मानती बल्कि जीत का पहला कदम मानती है, उसकी चुनौती को स्वीकार करती है और अगली सुबह किसी नई चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार रहती है।

माया अंबुलकर
तेजस्विनी विद्या मंदिर हाईस्कूल
नागपुर, महाराष्ट्र

# पुत्र–मोह
## पात्र–परिचय

| | | |
|---|---|---|
| **विश्वनाथ पाण्डे** | : | **दादाजी** |
| **जगतेश** | : | **विश्वनाथ का बड़ा बेटा** |
| **परमेश** | : | **विश्वनाथ का छोटा बेटा** |
| **मयूरांगी** | : | **विश्वनाथ की बेटी** |
| **मधु** | : | **जगतेश की पत्नी** |
| **स्वर्णलता** | : | **परमेश की पत्नी** |
| **नन्दकिशोर** | : | **विश्वनाथ का बैंक सहकर्मी** |
| **रोहन, रिया, जयश्री, दक्षेश** | : | **जगतेश के दो बेटे और दो बेटियां** |

*(घर के एक कमरे में सोफा सेट व किनारे पर कुर्सी टेबल लगे हुए हैं। सोफे से ही लगा टेलीफोन रखा है। सोफे के सामने टी.वी. व डेक रखा है। दीवार के एक भाग पर दादीजी की फोटो टंगी हुई है और एक भाग पर प्राकृतिक सीनरी लगी हुई है। मयूरांगी बच्चों को डांस सिखा रही है)*

**गाना है :**

धूम मचाले, धूम मचाले, धूम।

*(गाना बज रहा है)*

**मयूरांगी** : *(निर्देश देती हुई)* रिया ऐसे करो, ऐसे.....जयश्री की तरह।
**रिया** : ऐसे बुआ।
**मयूरांगी** : हाँ – हाँ ऐसे ही ..... अच्छा रुको।
*(मयूरांगी डेक बन्द करके निर्देश देती है)*
**मयूरांगी** : (डांस करके दिखाती है) ऐसे करना है, ऐसे। अब शुरू करूं।
**रिया और जय श्री** : ठीक है बुआ।
**मयूरांगी** : रेडी 1,2,3 स्टार्ट *(गाना शुरू करती है)*
*(मयूरांगी, रिया, जयश्री डांस करती हैं और दक्षेश देखते रहते हैं)*

(तभी दादा जी का प्रवेश)

**दादाजी** : ये क्या हो रहा है मयूरांगी ?
**दक्षेश** : दादाजी, दादाजी, रिया और जयश्री ने डांस कॉम्पीटिशन में भाग लिया है, इसलिए बुआ सिखा रही थी।
**मयूरांगी** : हाँ बाबूजी, इन दानों ने स्कूल में डांस प्रतियोगिता में भाग लिया है, इसलिए मैं सिखा रही थी।

**दादाजी** : (दादाजी रिया और जयश्री की ओर देखकर) और तुम लागों ने होमवर्क कर लिया ?

*(सभी शांत खड़े रहते हैं)*

**दादाजी :** मयूरांगी तुम तो बड़ी हो, समझदार हो। तुम्हें समझ में नहीं आता कि पहले इन्हें होमवर्क कराये फिर दूसरा काम। और आज तू कॉलेज नहीं गई।
**मयूरांगी :** बाबूजी आज सेंकड सटर्डे है।
**दादाजी :** तो कॉलेज बन्द रहता है ?
**मयूरांगी :** जी बाबूजी।
**दादाजी :** तो एक काम करो, मेरी रामायण शर्मा अंकल के यहां है, उनसे कहना बाबूजी ने मंगाई है।
**मयूरांगी :** जी बाबूजी।
**दादाजी :** *(बच्चों की ओर देखकर)* और तुम लोग पढ़ने बैठो।
*(सभी बच्चे शांतिपूर्वक पढ़ने बैठ जाते हैं)*
**दादाजी :** (दादाजी सोफे पर बैठते हुए) न जाने क्या हो गया आजकल के बच्चों को, नाच–गाना और टी.वी के अलावा कुछ सूझता ही नहीं।

(बड़ी बहू मधु का प्रवेश)

**मधु :** *(मधु पानी देते हुए)* बाबूजी पानी।
**दादाजी :** रख दो बेटा।

(फोन की घंटी बजती है)

**दादाजी :** अब पता नहीं, किसका फोन है, (मधु से) जरा उठाना बेटा।
(मधु फोन उठाती है और दादाजी पानी का गिलास उठाकर पीने वाले होने हैं और मधु को फोन सुनते देखते हैं)
**मधु :** हैलो, हां जी कौन ?
**गुप्ताजी :** मैं गुप्ता जी बोल रहा हूं स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया से।
**मधु :** हां, अंकल। बाबू जी से बात करनी है ?
**गुप्ताजी :** हां बेटा। तभी तो फोन लगाया।
**मधु :** *(फोन साइड में करके)* बाबूजी आपका फोन है।
**दादाजी :** कौन है बेटा?
**मधु :** बैंक वाले, गुप्ता अंकल है बाबूजी। आपसे बात करना चाहते हैं।
**दादाजी :** *(गिलास का पानी बिना पीए गिलास को रखकर)* ला बेटा।

*(मधु अंदर चली जाती है)*

**दादाजी :** हैलो, हाँ गुप्ता जी, कहिए। ठीक से तो हैं ?
**गुप्ताजी :** हम तो ठीक है पाण्डे जी, लेकिन आपको खबर देने के लिए फोन कर लिया।
**दादाजी :** कैसी खबर गुप्ता जी ?
**गुप्ताजी :** अरे भाई, आपने हाऊसिंग लोन और एज्यूकेशन लोन उठाया था ना, उनकी चार माह की किस्त जमा
नहीं हुई है।
**दादाजी :** गुप्ताजी, मैंने आप लोगों के साथ 17 साल बैंक का काम किया है, फिर भी.....।
**गुप्ताजी :** अरे पाण्डे जी, अब पहले जैसा माहौल नहीं रहा।
**दादाजी :** क्यों ? क्या हुआ ? मेरी बात जरा मैनेजर साहब से कराना।

**गुप्ताजी** : इसी बात का तो रोना है पाण्डे जी, हमारे मैनेजर साहब चेन्ज हो गये हैं।
**दादाजी** : ठीक है गुप्ता जी। मैं अगले महीने जमा कर दूंगा।
**गुप्ताजी** : पाण्डे जी, मैनेजर साहब बड़े सख्त आये हैं, फौरन डिफाल्टरों की लिस्ट बनाकर कार्यवाही कर रहे हैं। अब हमको तो हमारी सर्विस प्यारी है।
**दादाजी** : लेकिन गुप्ता जी दोनों लोन की किस्त क्या हो गई है ?
**गुप्ताजी** : ये तो आप भी जानते हैं, पाण्डे जी।
**दादाजी** : गुप्ता जी एक बार आप दोहरा दीजिए।
**गुप्ताजी** : ये समझिये की हाउसिंग लोन की लगभग 32000 रु. और एज्युकेशन लोन की 28000 रुपये, कुल मिलाकर मात्र 60000 रु हो गई है।
**दादाजी** : ये 4 महीने की ही है ना।
**गुप्ताजी** : हाँ पाण्डेजी हाँ।
**दादाजी** : ठीक है गुप्ता जी।
**गुप्ताजी** : तो 10 तारीख तक जमा कर दीजियेगा। भूल मत जाना पाण्डे जी।
**दादाजी** : ठीक है गुप्ता जी।
**गुप्ताजी** : तो रखता हूँ फोन। नमस्कार।

*(दादाजी फोन रखकर सोफे पर बैठ जाते हैं। बच्चे जोर–जोर से पढ़ने लगते हैं)*

**गुप्ताजी** : रोहन धीरे–धीरे याद करो।
**जयश्री** : दादाजी– दादाजी, यह रोहन भैया हमें चिढ़ा रहा है।
**दक्षेश** : हाँ दादाजी, मुझे भी जीभ दिखा रहा है।
**दादाजी** : क्यों रोहन चुपचाप याद करते नहीं बनता ?
**रोहन** : दादाजी मैं कब चिढ़ा रहा हूं। मैं तो अपना याद कर रहा हूं।
**रिया** : दादाजी, आप जब फोन पर बात कर रहे थे न तब यह हम सब को चिढ़ा रहा था।
**दक्षेश** : हां दादाजी, जब आपने फोन रख दिया तो जोर–जोर से याद करन लगा।
**जयश्री** : हां दादाजी ये हमें डांस–डांस कहकर चिढ़ा रहा था।
**दादाजी** : क्यों ? रोहन तुम सबसे बड़े हो, अपनी पढ़ाई नहीं कर सकते ?
**रोहन** : दादाजी मैं अपना याद कर रहा हूं।
**दादाजी** : ठीक है, ठीक है, सब अपनी –अपनी पढ़ाई करो। आधे घण्टे में सभी से पूछूंगा।
**सभी बच्चे** : ठीक है, दादाजी।
**दक्षेश** : दादाजी मैं तो अपना होमवर्क कर रहा हूं।
**दादाजी** : ठीक है दक्षेश।

*(मयूरांगी रामायण लेकर आती है)*

**मयूरांगी** : *(रामायण दादाजी को देती हुई)* बाबूजी, ये रामायण मैं शर्मा अंकल के यहां से ले आई।
**दादाजी** : ला बेटा। ये तूने अच्छा किया (हाथ में लेकर) यह रामायण मेरे पिताजी ने मेरे पहले जन्मदिन पर ली थी और जब मैं ढाई साल का हुआ था तो मुझे– मंगल भवन अमंगल हारी.....बिहारी। कई चौपाई याद करा दी थी।
**दक्षेश** : *(दौड़कर आता है)* दादाजी–दादाजी मुझे मेरे जन्मदिन पर साइकिल चाहिए साइकिल।

**जयश्री** : दादाजी मुझे भी।
**रिया** : दादाजी मुझे कम्प्यूटर चाहिए।
**दादाजी** : ठीक है– ठीक है, जो परीक्षा में अच्छे नम्बर लायेगा, उसे उसकी पसंद की चीज दिलवायेंगे।
**रिया** : हां दादाजी, ये ठीक है
**मयूरांगी** : बाबूजी, आपके पास रुपये हैं नहीं तो फिर वादे क्यों कर लेते हैं ?
**दादाजी** : बेटा वादे रुपये से नहीं, दिल से होते हैं। तुझे याद है, जब तू छोटी थी न, तो तूने अपने जन्मदिन पर कार की जिद्द की थी।
**मयूरांगी** : नहीं बाबूजी।
**दादाजी** : तब मेरी पेमेन्ट 925 रु. थी।
**मयूरांगी** : फिर आपने क्या किया बाबू जी ?
**बाबूजी** : कुछ नहीं बेटा, मैं और तेरी मां बाजार गये और एक खिलौने वाली कार ले आये। तूने कार देखी और बड़ी खुश हो गई। तो बेटा, बच्चे तो होते ही हैं जिद्द करने के लिए।
**मयूरांगी** : लेकिन फिर भी बाबूजी, मुझे अच्छा नहीं लगता। आप ऐसे वादे मत किया कीजिए।
**दादाजी** : लेकिन मुझे अच्छा लगता है। तुझे क्या पता, दिल को कितना सुकून मिलता है ?
*(मयूरांगी अन्दर जाने लगती है)*
**दादाजी** : और मैं सोनी जी के घर से आया बेटी। *(चले जाते हैं)*
**मयूरांगी** : जी बाबूजी। *(दादाजी के जाने के बाद)*
**सभी बच्चे** : (शोर करते हैं) दादाजी गये– दादाजी गये, दादाजी गये।

## (दूसरा दृश्य)

(दादाजी और जगतेश सोफे पर बैठकर बातचीत कर रहे हैं)

**दादाजी** : बेटा मुझे मयूरांगी की शादी की चिंता सताये जा रही है।
**जगतेश** : बाबूजी, समय आने पर झट से हो जायेगी, हमें पता भी नहीं चलेगा।
**दादाजी** : लेकिन बेटा, जो रिश्ते आते हैं, सब की मांगें, लम्बी–चौड़ी होती हैं।
**जगतेश** : बाबूजी मयूरांगी की शादी में कम से कम डेढ़–दो लाख रुपया तो लग ही जायेगा।
**दादाजी** : यही सोचता हूं बेटा कि मयूरांगी की शादी मेरी आंखों के सामने हो जाये बस।
**जगतेश** : बाबूजी, वो शर्मा अंकल का बेटा भी तो है न।
**दादाजी** : हां, मैंने बात की थी। कहने लगे–पाण्डे जी, कुल कन्या तो ठीक है पर बाइक जरूर चाहिए।
**जगतेश** : बाबूजी अब, 10–20 हजार रु. की मद्द तो मैं कर ही दूंगा, लेकिन और रुपयों के लिए आपको परमेश से
बात करनी होगी।

*(तभी मधु का प्रवेश)*

**मधु** : बाबूजी, शादी, शादी, शादी। मयूरांगी की ये शादी नहीं, हमारे गले की फांसी बन गई। अरे इतना अच्छा रिश्ता
दिखाया था तो मेम साहब को लड़का पसंद नहीं आया।
**दादाजी** : कौन सा बहू ?
**मधु** : वही, मेरे दूर के मामाजी का लड़का। इकलौता है, इकलौता। खूब हलवा–पूड़ी खिलाता और राजकुमारी

बनाकर रखता।

**दादाजी** : लेकिन बहू, उसकी पढ़ाई–लिखाई तो 8वीं तक ही थी।

**मधु** : बाबूजी 200 एकड़ जमीन है। आपकी बेटी भूखी नहीं मरती।

**दादाजी** : लेकिन फिर भी बेटा, मयूरांगी ने एम.ए. किया है, तो लड़का कम से कम बी.ए. तो हो।

**मधु** : तो फिर, आ तो रहे हैं, बी.ए. एम.ए वाले, तिजौरी खोलकर देते जाओ। बिना दहेज के पढ़ा–लिखा लड़का नहीं
मिलेगा।

**दादाजी** : बहू, आज तुम्हें क्या हो गया है ? कैसी बातें कर रही हो ?

**मधु** : बाबूजी सच्चाई सबको कड़वी लगती है। बिन पैसे शादी नहीं होती। इतने रिश्ते आये, सबका स्वागत–सत्कार मैंने किया। जब मैंने अपना समझकर, मामा का लड़का दिखाया तो तुम्हारी नागिन सी बेटी ने मना कर दिया।

**दादाजी** : बहू हम अपना निर्णय तो उस पर नहीं थोप सकते न।

**मधु** : तो करने दो उसे मनमानी और सिर पर चढ़ाओ। जब कहीं मुंह काला कराएगी न, तब समझ में आयेगा सभी को।

**जगतेश** : बहू, जबरदस्ती तो हमने तुम्हारी शादी में भी नहीं की। तो फिर मयूरांगी के साथ कैसे कर सकते हैं ?

**मधु** : तो फिर करो पांच–छः लाख रु. का बन्दोबस्त। फिर क्यूं छाती फट रही है।

*(ये कहकर मधु अन्दर चली जाती है)*

**जगतेश** : (गुस्से में) मधु।

*(ये सब बातें मयूरांगी दरवाजे पर खड़े होकर सुनती है। मधु के जाने के बाद रोती हुई आती है)*

**मयूरांगी** : *(मयूरांगी बाबूजी के पास जाकर)* बाबूजी, मेरी शादी की चिन्ता छोड़िये। मैं शादी नहीं करना चाहती।

**दादाजी** : *(गले लगाते हुए)* ऐसा नहीं कहते बेटा, चुप हो जा, नहीं रोते। *(सिर पर हाथ रखकर)* तेरी शादी भी होगी
जैसे जगतेश और परमेश की हुई है।

**मयूरांगी** : बाबूजी, मैं आपकी सेवा करूंगी, शादी नहीं करना चाहती।

**दादाजी** : तेरी मां एक ही तो जिम्मेदारी मुझे छोड़कर गई है और वह भी मैं पूरा नहीं कर सका तो मुझ से अभागा पिता
नहीं होगा जो कन्या होते हुए भी कन्यादान न कर सका ?

**जगतेश** : हां मयूरांगी, तेरी शादी भी हम धूमधाम से करेंगे। तेरी भाभी का स्वभाव तो पहले से ही ऐसा है।

*(टेबिल पर रखा पानी गिलास में भरकर मयूरांगी को पिलाता है)*

**मयूरांगी** : *(मयूरांगी पानी का एक घूंट पीर कर)*
भैया– बाबूजी, आप मेरी शादी से इतने परेशान हैं तो मुझे कुंआरी रहना मंजूर है। यकीन कीजिए मैं कहीं मुंह काला नहीं कराऊँगी।

**बाबूजी** : बेटा, ऐसे शब्द नहीं कहते।

**मयूरांगी** : हां बाबूजी, मैं उम्र भर आपकी सेवा करूंगी पर शादी नहीं करूंगी।

**बाबूजी** : अब जा बेटा, तू थक ई है न, आराम कर ले। *(मयूरांगी चली जाती है)*

*(बाबूजी और जगतेश आपस में मौन बातें कर रहे हैं। तभी फोन बजता है, जगतेश उठाता है)*

**जगतेश** : हैलो, कौन ?

**गुप्ताजी** : हैलो, मैं नन्द किशोर गुप्ता बोल रहा हूं।

**जगतेश** : हां अंकल जी। कैसे हैं ?

**गुप्ताजी** : मैं ठीक हूं बेटा। जो लोन–ओन लिया था उसे चुकाना है या नहीं। आज 7 तारीख हो गई । 10 तारीख तक
जमा करना है बेटा।

**जगतेश** : लीजिए अंकल जी, बाबूजी से बात कीजिए।
*(बाबूजी को फोन देते हुए)* बाबूजी गुप्ता जी का फोन है। *(और जगतेश अखबार पढ़ने लगता है)*

**बाबूजी** : *(फोन लेकर)* गुप्ता जी नमस्कार।

**गुप्ताजी** : नमस्कार पाण्डे जी। क्या ? सोचा पाण्डे जी, आज 7 तारीख होगई, 10 तारीख तक रुपये जमा हो जायेगा
ना।

**बाबूजी** : गुप्ताजी, कोशिश कर कर रहा हूं। नहीं तो, एक महीना और खींच लीजियेगा। बड़ी मेहरबानी होगी।

**गुप्ताजी** : पाण्डे जी 4 महीने खींच लिए वो क्या कम है ? अब हम भी नौकर ठहरे भाई।

**बाबूजी** : गुप्ता जी कैसी बात कर रहे हैं ?

**गुप्ताजी** : और नहीं तो क्या कहूं पाण्डे जी, मेरे भी बीवी–बच्चे हैं।

**बाबूजी** : गुप्ताजी, मैं भी आपका सहकर्मी रहा हूं, पहले तो ऐसा व्यवहार नहीं था।

**गुप्ताजी** : ये तो वही बात हुई पाण्डेजी कि नेकी कर दरिया में डाल। 4 महीने की लोन किस्त खींच ली और आप कह
रहे हैं हमने व्यवहार ही बदल लिया, वाह! पाण्डे जी वाह! धन्यवाद आपके सुव्यवहार का , धन्यवाद, अब, आप
जानो अपनी लीला। *(गुप्ता फोन उठाकर रख देता है, बाबूजी उदास मन से सोफे पर बैठ जाते हैं)*

**जगतेश** : *(जगतेश अखबार रखकर)* क्या हुआ बाबूजी ? गुप्ता अंकल क्या कह रहे थे ?

**बाबूजी** : बेटा होम लोन और एज्यूकेशन लोन की किस्त जमा करने को कह रहे थे।

**जगतेश** : (गुस्से में) तो बाबूजी, आप परमेश से क्यूं नहीं कहते ? एज्यूकेशन लोन उसकी पढ़ाई के लिए ही लिया था
न।

**बाबूजी** : लेकिन बेटा!

**जगतेश** : क्या लेकिन बाबूजी ? वो इंजीनियर बन गया। अब तो रुपये दे सकता है न।

**बाबूजी** : बेटा, होम लोन की किस्त का क्या होगा ?

**जगतेश** : बाबूजी अब तक होम लोन और दो एज्यूकेशन लोन की किस्त तो मैंने ही जमा की है न।

**बाबूजी** : मुझे क्या पता था बेटा कि नौकरी लगने के बाद तुम अपना– अपना करोगे।

**जगतेश** : बाबूजी, एक बार परमेश से मांग कर तो देख लीजिए।

**बाबूजी** : जब तुम्हारी नौकरी लगवाई थी तो मैंने रुपये भरे थे। अब परमेश को पढ़ाया तो तुम्हें रुपये भरना चाहिए या
तुम मुझसे ही भीख मंगवाओगे ?
*(स्कूल यूनीफार्म में रिया, रोहन, जयश्री और दक्षेश स्कूल से आ जाते हैं)*

**रिया** : पापा–पापा आज टीचर ने फीस जमा करने को कहा है।
**रोहन** : पापा टीचर ने कहा है कल तक फीस जमा नहीं हुई तो परीक्षा में बैठने की परमीशन नहीं देंगे।
**जयश्री** : और हां पापा, पूरे 6 महीने की फीस जमा करने का कहा है।
**दक्षेश** : पापा मेरी टीचर ने तो कहा है– कल हॉलीडे है। तो कल हमें मेला घूमने जाना है। मेरा दोस्त आर्यन तो मेला
भी घूम आया।
**जयश्री** : दक्षेश सभी की छुट्टी नही है सिर्फ तुम्हारी है।
**जगतेश** : हां– हां ठीक है, कल टीचर से कहना 10 तारीख तक फीस जमा कर देंगे।
**सभी बच्चे** : ठीक है पापा।
**रिया** : हमें तो जोर की भूख लगी, पहले तो खाना खायेंगे।
**सभी बच्चे** : हमें भी

*(रिया के पीछे सभी बच्चे अन्दर चले जाते हैं)*

**जगतेश** : देखिए न बाबूजी, स्कूल की फीस और घर के खर्च में ही मेरी पूरी पेमैंट खर्च हो जाती है तो मैं लोन कैसे भर सकता हूं।

*(तभी मधु चाय लेकर आती है)*

**मधु** : *(मधु चाय टेबल पर रख कर)* देखिए बाबूजी, हमने तो लोन उठाया नहीं जो हम लोन भरें।
**बाबूजी** : लेकिन बेटा, एक लाख रुपया जगतेश की सर्विस के लिए मैंने ही दिये थे न।
**मधु** : बाबूजी रिटायरमेंट के साढ़े तीन लाख रु. में से एक लाख रु. हमें दे दिये तो कोई बड़ा एहसान नहीं कर दिया। हमारा भी कोई हक बनता है। कभी छोटे भैया से भी बोल कर देखो।
**दादाजी** : एक लाख रु. जगतेश की सर्विस में और एक लाख रु. जमा करके ये मकान किस्तों में लिया था। परमेश को तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी बहू।
**जगतेश** : और आपको, गांव में मन्दिर बनाने की क्या जरूरत थी बाबूजी।
**मधु** : डेढ़ लाख रु. गांव के मंदिर में दान कर दिये। बड़े हरिश्चन्द्र हो गये। अब हमें हरिश्चन्द्र मत बनाइये बाबूजी।
**जगतेश** : बाबूजी, अब हमें माफ करो, हम एक रुपया भी जमा नहीं कर पायेंगे। इस महंगाई के दौर में हमें जीने दो।
**मधु** : हम लोग किराये के मकान में रह लेंगे लेकिन टेंशन नहीं झेल पायेंगे।
**जगतेश** : हां बाबूजी, हम लोग कल ही यह घर खाली कर देंगे।
**बाबूजी** : जैसी तुम्हारी इच्छा बेटा। मेरे सीने में दर्द हो रहा है। मैं डॉक्टर को दिखा कर आता हूं। *(बाबूजी चले जाते हैं)*

## (तीसरा दृश्य)

*(जगतेश और मधु सूटकेश व अन्य सामग्री लिए हुए बच्चों सहित निकलते हैं)*

**जगतेश** : *(जगतेश बाबूजी के पैर छू कर)* बाबूजी, मैं विवश हूं, मुझे माफ कीजिये।
*(जगतेश मयूरांगी के पैर छूता है)*
**मयूरांगी** : *(रुआंसे स्वर में) भैया.....! (मधु बच्चों को लेकर निकल जाती है)*
*(मयूरांगी रोते हुए बाबूजी के गले लग जाती है)*
**मधु** : *(जगतेश से)* अब चलो जी।
**मयूरांगी** : *(रोते हुए)* बाबूजी क्या हो गया है हमारे घर को, न जाने किस की नजर लग गई है।

**बाबूजी** : मत रो मेरी बेटी, सब कुछ ठीक हो जायेगा। तेरा बाबूजी है न, चुप हो जा।
**मयूरांगी** : बाबूजी सभी बेटे ऐसे ही होते हैं।
**बाबूजी** : न जाने बेटी मैंने कौन से ऐसे संस्कार गलत दे दिये थे जो मुझे आज ये दिन देखना पड़ा।

## (चौथा दृश्य)

(बाबूजी रामायण पाठ कर रहे हैं)

**बाबूजी** :
बिनु सतसंग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोई फल सिधि सब साधन फूला।

मंगल भवन अमंगल.....बिहारी
महावीर बिन.....बखाना।

*(तभी काल बेल बजती है)*

**बाबूजी** : देखना बेटी कौन आया है।
**मयूरांगी** : देखती हूं बाबूजी। *(दौड़कर दरवाजा खोलती है)*
**मयूरांगी** : (आश्चर्य से) अरे भैया – भाभी आप।
बाबूजी भैया – भाभी आ गये।

(परमेश और स्वर्णलता का प्रवेश)

**मयूरांगी** : आओ भैया, आओ भाभी।
**परमेश और** : बाबूजी प्रणाम। (बाबूजी के पैर छूते हैं)
**बाबूजी** : आयुष्मान भव बेटा, अचानक आना हो गया। हमें कम से कम फोन तो कर दिया होता।
**परमेश** : बाबूजी, कम्पनी के काम से अचानक आना हो गया।
**स्वर्णलता** : तो बाबूजी मैंने सोचा मैं भी घूम आती हूं।
**बाबूजी** : बहुत अच्छा रहा बेटा। अरे मयूरांगी, भैया–भाभी को पानी पिलाओ।
**स्वर्णलता** : मयूरांगी तुम रुको, मैं लाती हूं।
**परमेश** : बाबूजी बड़े भैया–भाभी और बच्चे दिखाई नहीं दे रहे हैं, कहीं घूमने गये हैं क्या ?
बाबूजी : क्या बताऊं बेटा.....

*(परमेश और बाबूजी का मौन वार्तालाप बैठकर)*

*(स्वर्णलता पानी लेकर आती है)*

**स्वर्णलता** : लीजिये बाबूजी।
**बाबूजी** : *(पानी लेते हैं)* ला बेटा। *(परमेश भी पानी पीता है)*
**मयूरांगी** : मैं चाय बना कर लाती हूं। *(भाभी को देखकर)* भाभी जी, आप बैठिये, थक गई होंगी।
**बाबूजी** : और मधु ने तो बड़ा ही भला–बुरा कहा और घर छोड़ कर चली गई।
**परमेश** : बाबूजी, कर्ज लेकर तो आपने हमें उलझा ही दिया।
**स्वर्णलता** : हां बाबूजी, बिल्डिंग की नींव कच्ची हो तो एक न एक दिन लड़खड़ा कर गिर ही जाती है।
**परमेश** : ये तो बाबूजी आपको पहले ही सोचना था।
**बाबूजी** : बेटा, मेरी अक्ल पर पुत्र–मोह का पत्थर पड़ गया था। इसलिए समझ नहीं सका।

**स्वर्णलता :** बाबूजी, अब हमें मत सुनाइये। हम तो 3 घण्टे के लिए मिलने चले आये। 4 बजे कम्पनी के काम से इन्हें
दिल्ली जाना है।

**बाबूजी** : लेकिन बेटा मेरे चेक बाउंस हो गये तो मुश्किल में पड़ जायेंगे।

**परमेश** : बाबूजी, आप बैंक में रहे फिर भी।

**बाबूजी** : बेटा बैंक मैनेजर चेंज हो गया है और सहकर्मियों का व्यवहार भी ठीक नहीं है।

**परमेश** : ठीक है बाबूजी, मैं एज्यूकेशन लोन की किस्त अगले महीने पहुंचाने की कोशिश करूंगा। पक्का नहीं कह
सकता।

*(मयूरांगी चाय बनाकर लाती है। ये लो भैया गरमा–गरम चाय)*

**परमेश** : हम भोजन करेंगे भाई। मयूरांगी अपनी भाभी और बाबूजी को ही चाय पिलाओ।

*(परमेश अंदर चला जाता है)*

**बाबूजी** : बेटा तुम चाय पीकर थोड़ा आराम कर लो।

**स्वर्णलता** : जी बाबूजी।

*(स्वर्णलता अंदर चली जाती है। सूटकेस लेकर परमेश और स्वर्णलता के जाने का दृश्य। परमेश बाबूजी के पैर छूता है)*

**बाबूजी** : बेटा अब कब आओगे ?

**परमेश** : बाबूजी, समय बिल्कुल नहीं मिलता। सुबह 9 बजे से रात 9 बज जाते हैं कम्पनी के काम में।

**स्वर्णलता** : हां बाबूजी, कभी–कभी तो 10 बजे रात को आते हैं। मैं इनके टाईम से बहुत परेशान हूं।

**बाबूजी** : बेटा एज्युकेशन लोन की किस्त तो .....

**परमेश** : बाबूजी, अगले महीने 10–15 तारीख तक करने की कोशिश करूंगा। वैसे मेरा भी बड़ा लेना–देना बकाया है
बाबूजी।

*(मयूरांगी की ओर देखकर । मयूरांगी चलते हैं फिर आयेंगे)*

**मयूरांगी** : भैया आप इतने दिनों बाद आये और इतनी जल्दी चल दिये।

**परमेश** : अगली बार पूरे 10–15 दिनों का समय निकालकर आऊंगा।

**स्वर्णलता** : मयूरांगी, ये तो मेरे से भी हमेशा ऐसे ही कहते रहते हैं।

**परमेश** : अच्छा बाबूजी चलें।

**स्वर्णलता** : *(बाबूजी के पैर छू कर और फिर मयूरांगी के पैर छू कर। मयूरांगी अच्छे से रहना)*

*(परमेश और स्वर्णलता चले जाते हैं)*

## (पांचवां दृश्य)

*(बाबूजी अपनी पत्नी गायत्री की तस्वीर के सामने खड़े होकर देख रहे हैं)*

**बाबूजी** : मैंने कहां चूक कर दी गायत्री संस्कार और परवरिश में जो मेरे बेटे मुझे ही नहीं समझ सके।

*(गायत्री की आवाज पर्दे के पीछे से)*

**गायत्री** : तुम्हीं तो बेटा–बेटा करते थे, अब मुझसे क्या पूछ रहे हो ?

**बाबूजी** : *(आंसू पोंछकर)* गायत्री, तू सही कहती थी कि बेटों को इतना लाड़ मत करो कि इनकी गलती पर दिल का रोम–रोम रोये।

**गायत्री** : और तुम्हीं तो कहते थे– मैं बेटों को खूब पढ़ाऊंगा, इंजीनियर बनाऊंगा, कलेक्टर बनाऊंगा। हर फरमाइश तुम दौड़–दौड़कर पूरा करते थे।

**बाबूजी** : गायत्री, यही तो मेरी भूल है कि मैं सारी खुशी इनमें देखता था।

**गायत्री** : और जब जगतेश और परमेश हुए थे तो तुम फूले नहीं समाये थे। पूरे मोहल्ले में घर–घर जाकर मिठाई खिलाई थी।

**बाबूजी** : उस मिठाई का नाम मत लो गायत्री। अब मेरा हृदय भर गया है।

**गायत्री** : अच्छा उस मिठाई का नाम क्यूं न लूं – जब मयूरांगी हुई थी तब तुमने मुझ तक को एक टुकड़ा मिठाई का नहीं खिलाया। तुम्हारी मां नाक– भौंह सिकोड़ कर चली गई थी। मेरी मां ने सब कुछ देखा था।

**बाबूजी** : अब तुम भी मुझसे सच उगलवाना चाहती हो तो सुनो, उस वक्त मैं पुत्र–मोह में पागल हो गया था, गायत्री पागल हो गया था मैं।

**गायत्री** : तो पुत्र–मोह का परिणाम भी भुगतो।

**बाबूजी** : भुगत चुका हूं गायत्री, भुगत चुका हूं लेकिन अब मुझे समझ में आ गया है ?

**गायत्री** : क्या ? समझ में आ गया है ?

**बाबूजी** : यही कि बेटी ही असली हीरा होती है। ऐसा अनमोल हीरा जो हमेशा चकमता रहता है। दुःख में भी और सुख में भी। *(तभी मयूरांगी का प्रवेश। बाबूजी का हाथ पकड़कर कहती है)*

**मयूरांगी** : क्या हुआ बाबूजी ? किससे बात कर रहे हो ?

**बाबूजी** : *(आंसू पोंछते हुए)* किसी से नहीं बेटी, बस यूं ही।

**मयूरांगी** : मैं समझ गई बाबूजी, आप मां से बात कर रहे थे ना।

**बाबूजी** : *(सिर हिलाकर हामी भरते हैं। तभी फोन की घण्टी बजती है। मयूरांगी फोन उठाती है)*

**मयूरांगी** : हैलो–हैलो.....जी।
मैं विश्वनाथ पाठक जी की बेटी बोल रही हूं।
जी.....जी.....अच्छा.....अच्छा.....तो कब मिलेंगे .....20 तारीख को ..... ...क्या ? चेक द्वारा, कितने रुपये ? क्या ? दो लाख इकावन हजार जी.....जी..... आपका पता, दो सैकेण्ड *(पेन उठाकर कापी में लिखती हूं ). जी.....जी..... धन्यवाद.....!(मयूरांगी फोन रखती है)*

**मयूरांगी** : बाबूजी, मजा आ गया। मजा आ गया।

**बाबूजी** : पहले, बता तो, बेटी, किसका फोन था ?

**मयूरांगी** : पहले बाबूजी ये बताओ आप वैष्णो देवी गये थे ना ?

**बाबूजी** : हां गया था।

**मयूरांगी** : आपने वहां, मां वैष्णों जगत कल्याणी समिति में 100 रु. दान किया था ना।

**बाबूजी** : हां बेटी, हां। किया था।

**मयूरांगी** : तो उसकी रसीद कहां है ?

**बाबूजी** : पहले, बता तो, ये सब क्यूं पूछ रही है ?

**मयूरांगी :** बाबूजी, आपकी दान की रसीद की लॉटरी खुली है। पूरे दो लाख इकावन हजार की। बताओ न बाबूजी रसीद
कहां रखी है ?

**बाबूजी :** (ध्यान करके) वो.....हां रामायण में रखी है। ला जल्दी रामायण उठाकर ला।

*(मयूरांगी रामायण उठाकर लाती है। बाबूजी के पास आकर रामायण में देखती है)*

**मयूरांगी :** बाबूजी, इसमें नहीं है।

**बाबूजी :** अच्छे से देख जरा, पीले रंग की है।

**मयूरांगी :** नहीं है बाबूजी।

**बाबूजी :** ला मुझे दिखा। उसी में तो रखी थी।

*(मयूरांगी फिर पेज पलटती है)*

**मयूरांगी :** मिल गई बाबूजी, मिल गई। ये देखो, दिखाकर *(रसीद को चूम लेती है)*। बाबूजी के गले लग जाती है।

**बाबूजी :** वाह बेटा, वाह। वैष्णों देवी ने हमारी सुन ली।

**विनोद नायक**
ज्ञान विकास माध्य. विद्यालय,
973 जे. नंदनवन, नागपुर, महाराष्ट्र

# दोषी कौन ?

## पात्र–परिचय

**कुछ भारतीय व शत्रु के सैनिक**
**कुछ ग्रामीण**
**वैद्य**
**शत्रु–पक्ष के दो आला अफसर**
**शत्रु–पक्ष के नेता**
**सूत्रधार**

## स्थान

**प्रथम : भारतीय खेमा**
**द्वितीय : सीमा से सटा एक भारतीय गांव**
**तृतीय : शत्रु – पक्ष की छावनी**
**चतुर्थ : सूत्रधार**

## (पहला दृश्य)

*(फौजी खेमे का दृश्य। भारतीय फौजी नाच–गा रहे हैं। संगीत बज रहा है)*

*संदेसे आते हैं, हमें तड़पाते हैं*
*के चिट्ठी आती है, ये पूछे जाती है*
*के घर कब आओगे, लिखो कब आओगे*
*के तुम बिन ये घर सूना–सूना है..... ।*

**पहला** : यार, घरवालों को देख बहुत दिन हो गये हैं। उनकी बहुत याद आती है।
**फौजी** : हैं। उनकी बहुत याद आती है।
**दूसरा** : कोई बात नहीं यार, इंतजार के दिन खत्म हुए जाते हैं। अब सीमा पर अमन–चैन है। जल्द ही हमें छुट्टी मिल जायेगी।
**तीसरा** : मैं तो घर में सबके लिए कुछ न कुछ लेकर जाऊंगा।
**पहला** : *(शरारत के स्वर)* हां भई। विशेषकर नई –नवेली दुल्हन के लिए। उसे मनाना तो पड़ेगा। बेचारी को इतना इंतजार जो .....)

*(नेपथ्य में धांय.....धूं की ध्वनि गूंजती है। बात बीच में ही रह जाती है। सभी अपनी–अपनी मशीनगन संभाल लेते हैं। तभी कमांडर का प्रवेश)*

**कमांडर** : *(आदेशपूर्ण स्वर में)* बहादुर जवानों। दुश्मन ने हम पर हमला कर दिया है। हर बार की तरह इस बार भी उसने पीठ पर छुरा घोंपा है और हमें उसे इस बार भी करारा जबाब देना होगा। उसे बताना होगा कि भारत अमन अवश्य चाहता है परंतु अपनी संप्रभुता की कीमत पर नहीं। तो क्या हम उसे करारा जबाब देने के लिए तैयार हैं ?

**सभी सैनिक** : *(एक साथ)* हां! हम तैयार हैं। हम तैयार हैं *(मंच पर रोशनी बंद हो जाती है)*

## *(दूसरा दृश्य)*

*(युद्ध का दृश्य। नेपथ्य से गोलाबारी की ध्वनि गूंज रही है)*

**सूत्रधार** : भयंकर गोलीबारी के कारण दोनों ओर से अनगिनत सैनिक शहीद हुए व कितने ही युद्धभूमि में पड़े कराह रहे हैं। कोई पानी देने वाला तक नहीं है। अंधेरा होने वाला है। भारतीय सीमा में घायल पड़े शत्रु के कुछ सैनिक लंबी घास व झाड़ियों का फायदा उठाते हुए भाग जाते हैं और गिरते–पड़ते पास के गांव में पहुंच जाते हैं जहां के लोग बहुत ही सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते हैं तथा जात–पात व धर्म के भेदभाव से परे हैं। गांव पहुंचकर सैनिक बेहोश होकर गिर पड़ते हैं।

**एक ग्रामीण** : हे ईश्वर ! इनके शरीर पर तो बहुत गहरे जख्म हैं। खून भी बहुत बह रहा है। यदि जल्द ही चिकित्सा न की गई तो ये बेचारे मर जायेंगे।

**दूसरा** : पर बंधु, ये हमारे देश के तो नहीं जान पड़ते। इनकी वेशभूषा शत्रु देश के सैनिकों से मेल खाती है। ये जरूर शत्रु के सैनिक हैं । चलो, इन्हें सेना के हवाले कर दें।

**पहला** : नहीं भाई ! इस समय इनकी हालत इतनी नाजुक है कि प्राणों पर संकट हो सकता है। चलो, इस काम में मेरी मदद करो।

*(दोनों उन्हें उठाकर बैलगाड़ी में डालते हैं व वैद्य जी के पास ले जाते हैं। वैद्य जी उन्हें देखते ही उछल पड़ते हैं)*

**वैद्य** : नहीं–नहीं भाई। मैं इनका उपचार नहीं करूंगा। ये तो शत्रु– सैनिक हैं। बेकार में मैं फँस जाऊंगा।

**पहला व्यक्ति** : वैद्य जी, इस समय मित्र या शत्रु की पहचान भूलकर इंसानियत के नाते इनके प्राण बचाना हमारा धर्म है। हर धर्म ने मानवता को सर्वोपरि स्थान दिया है। अतः हमें अपने मानव होने का कर्तव्य निभाते हुए सर्वप्रथम इनके प्राण बचाने चाहिएं ताकि मृत्यु के उपरांत हम ईश्वर को अपने कर्मों का हिसाब दे सकें।

**बैद्य** : ठीक है भले मानुष। मैं अपना कर्तव्य निभाते हुए इनका उपचार आरंभ कर देता हूं।

*(मंच पर रौशनी बंद कर दी जाती है)*

**सूत्रधार** : वैद्य जी के उपचार व गांववालों के पूर्ण सहयोग से घायल सैनिक कुछ ही दिनों में पूर्णतया स्वस्थ हो जाते हैं। तब तक दोनों देशों के बीच मैदानी जंग भी बंद हो जाती है। स्वस्थ हुए सैनिक गांववालों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

**एक सैनिक** : आप भले इंसान हैं। हम दुश्मन के सिपाही हैं यह जानते हुए भी आपने न केवल हमारी जान बख्शी बल्कि हमारा इलाज भी करवाया। आप सचमुच खुदा के बंदे हैं। खुदा आपको नेकी का फल जरूर देगा।

**दूसरा** : हां, भाईजान सही फरमाते हैं। हम अपने मुल्क में जाकर बताएंगे कि हिदुस्तान के बाशिंदे कितने रहमदिल हैं। इतने पाक बंदों के मुल्क पर हम सपने में भी कभी कब्जा नहीं कर सकते । हमें जंग की राह छोड़कर अमन की राह पर चलना चाहिए।

*(उठ खड़े होते हैं)*

अच्छा भाईजान, खुदा हाफिज। *(गांववालों से भावभीनी विदाई लेते हैं तथा भारी बर्फबारी का फायदा उठाते हुए छिपते–छिपाते हुए सीमा पार कर जाते हैं)*

## (तीसरा दृश्य)

*(सूत्रधार का प्रवेश)*

**सूत्रधार :** जिस दौरान भारतीय सामान्य जन विरोधी सैनिकों के प्राणरक्षक बने हुए थे उसी दौरान सीमा पार से सटे विरोधी गांव के कुछ किसानों को झाड़ियों में दो भारतीय सिपाहियों के शव मिलते हैं उनकी पहचान करने से पता चलता है कि वे शव भारतीय सिपाहियों के हैं। किसान उन शवों के अंजाम के बारे में कल्पना करके सिहर उठते हैं। वे याद करते हैं कि पहले भी उनकी सेना ने इसी प्रकार भारतीय सिपाहियों के सिर काट दिये थे और उन्हें अंतिम गति भी नसीब नहीं होने दी थी। आपस में विचार–विमर्श करके वे गुपचुप हिंदू परंपरा के अनुसार विधिवत् उन शवों का दाह–संस्कार करवा देते हैं। दूसरी ओर स्वस्थ हुए शत्रु के सिपाही अपने खेमे में वापस पहुंचते हैं। उनके आला अफसर उन्हें देखकर सोच में पड़ जाते हैं।

*(एक सैनिक का अफसर के कक्ष में प्रवेश)*

**सैनिक :** हुजूर! हमारे गुमशुदा सिपाही हिंदुस्तान से सही सलामत लौट आये हैं। क्या उन्हें जनाब के सामने पेश किया जाये ?

**अफसर :** उन्हें थोड़ी देर में ले आओ।

*(सिपाही चला जाता है)* जनाब, अगर ये सिपाही सबकी नजरों में आ गये तो हिंदुस्तान और वहां की अवाम दुनिया की नजरों में एक बार फिर हीरो बन जाएगा।

**सूत्रधार :** किसी भी देश का सामान्य जन हिंसा नहीं चाहता क्योंकि इसमें केवल उसी को खोना पड़ता है। कोई भी धर्म हिंसा का पाठ नहीं पढ़ाता। 'मानवता सबसे बड़ा धर्म है', ऐसा हर धर्म कहता है। राम व रहीम में कोई अंतर नहीं। दोनों प्रभु नाम के मार्ग पर चले। फिर क्यों सियासत के कुछ लोग अमन चैन होने नहीं देते। क्यों सियासत सामान्य जन की तरह मानवता की मिसाल नहीं कायम करती। क्यों कुछ लोग संप्रदायवाद की भावना से ऊपर नहीं उठ पा रहे ?

दर्शकों हमारे हाथ में सब कुछ तो नहीं परंतु बहुत कुछ है। आओ, सब मिलकर सियासत के इन ठेकेदारों को बताएं कि *बस अब और नहीं*

*बस, अब और नहीं।*
*नफरत को अब ठुकराना है*
*प्यार का नया जहां बसाना है।*
*तुम चाहो या न चाहो*
*इस क्रांति को हमें लाना है।*
*हिंदू हो या मुस्लिम,*
*सिक्ख हो या इसाई,*
*अहिंसा का पाठ पढ़ाना है,*
*प्यार का नया जहां बसाना है।*

**(पर्दा गिरता है)**

**रजनी कंसल**
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सैक्टर– 24, रोहिणी
दिल्ली

# सदाचार

**भवानी प्रसाद : सरपंच**
**लक्ष्मीनारायण : नेताजी (विधायक)**
**विवेक : गांव का युवक**
**नागेन्द्र : गांव का युवक**
**बंटी : गांव का युवक**
**ग्राववासी**

*(विधान सभा चुनाव के तीन दिन ही बचे हैं। सभी पार्टियों के उम्मीदवारों या कार्यकर्ताओं से गांव–गांव जाकर प्रचार की गति तेज कर दी है। शाहगंज विधानसभा का लमहनी गांव मतदाताओं की संख्या की दृष्टि से काफी बड़ा है। हर उम्मीदवार की निगाह में यह गांव सदैव ऊपर रहता है। आज नेता जी का इस गांव का दौरा है)*

## (पहला दृश्य)

*(शाम के चार बजे हैं। गांव के सभी लोग सरपंच जी के यहां इकट्ठा हुए हैं। पीपल के पेड़ के नीचे एक छोटा सा मंच बनाया गया है जिस पर पांच कुर्सियां रखी गई हैं। सभी गांव के लोग मंच के सामने बैठे हैं। सरपंच जी अपने पांच–साथ साथियों के साथ मंच के बगल में खड़े हैं। थोड़ी दूरी से आवाज आती है 'नेता जी पधार रहे हैं'। सरपंच जी अपने साथियों को सजग करते हैं। एक लंबी गाड़ी आकर रुकती है। नेता जी अपने दो अंगरक्षकों के साथ सफेद परिधान में निकलते हैं। सरपंच जी नेता जी का जयकारा लगाते हैं। सभी उपस्थित ग्रामीण समवेत स्वर में नेता जी की जय बोलते हैं। नेता जी मंच पर आसीन होते हैं। सरपंच जी और साथियों द्वारा नेता जी का माल्यार्पण किया जाता है)*

**सरपंच जी :** *(ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए)* प्यारे ग्रामवासियो! हमारा सौभाग्य है कि नेता जी हमारे गांव पधारे हैं। इस गांव पर नेताजी की बहुत कृपा–दृष्टि है। जो भी आप विकास देख रहे हैं उन्हीं की कृपा का परिणाम है। नेता जी से मैं अनुरोध करता हूं कि अपना आशीर्वचन हम लोगों को प्रदान करें।
**नेता जी :** प्यारे भाईयो और बहनो ! आज मैं आशीर्वाद देने नहीं बल्कि लेने आया हूं। आप तो जानते ही हैं कि चुनाव अब सिर्फ तीन दिन ही दूर रह गया है। पिछले पांच वर्षों में आप के बीच आ तो नहीं सका परंतु सरपंच जी के माध्यम से आप के गांव का विकास करता रहा हूं। आप अपना बहुमूल्य वोट देकर मेरे हाथों को मजबूत करें और एक बार पुनः अपनी सेवा का अवसर दें।
**सरपंच जी :** समझ गये गांव वालो!
**समवेत स्वर :** जी सरपंच जी !
*(नेता जी सरपंच जी के कानों में कुछ फुसफुसाते हैं)*
**सरपंच जी :** आप निश्चित रहें नेता जी, जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा।
*(नेता जी की जय के साथ सभा विसर्जित हुई)*

## (दूसरा दृश्य)

*(सरपंच जी को बैठक जिसमें गांव के दस से पन्द्रह युवक सरपंच जी की कुर्सी के सामने रखे तखत पर बैठे हैं। सरपंच जी उनको कुछ समझा रहे हैं)*

**सरपंच जी** : तुम लोगों को यहां बुलाने का मकसद यह है कि कल ही चुनाव है। इस साल पिछली बार से ज्यादा मत नेता जी के पक्ष में डलवाने हैं। यह सब कैसे होगा यह तो तुम लोगों को पता ही है।
**नागेन्द्र** : इस बार कैसे होगा सरपंच जी। वोटिंग मशीन में कैसे संभव हो पायेगा ?
**सरपंच** : सब कुछ संभव होगा। तुम लोग सिर्फ तैयार रहो बस। इस बार पैसे और खाने–पीने में कोई कमी नहीं रहेगी।
**नागेन्द्र** : नियम–कानून भी अब तगड़े हो गये हैं। यह कैसे हो पायेगा सरपंच जी ?
**सरपंच जी** : देखो इस बार नेता जी के विरोध के स्वर गांव में अधिक है। सारे विरोधियों को जाकर टाइट कर देना है कि वे बूथ पर वोट डालने दिखाई नहीं पड़ेंगे। गांव के जो लोग शहर गये हुए हैं उनका वोट भी तुम लोग डालोगे। बूथ के अंदर की सेटिंग मैं देख लूंगा, उसकी चिंता तुम लोग नहीं करो। पुलिस कुछ करती है तो नेता जी तो हैं ही। इस स्कीम को पूरे विधान सभा में चलाया जायेगा। नेता जी को किसी तरह से जिताना है। समझ गये सभी लोग।
**सभी युवक** : *(सिर हिलाकर)* जी सरपंच जी।
**सरपंच जी** : तो जाओ सभी लोग इस अभियान में लग जाओ। कल चुनाव समाप्त होने के बाद होगा चुनाव जंग। *(हंसते हुए)*

## (तीसरा दृश्य)

*(चुनाव के एक दिन पूर्व शाम को सरपंच के आदमियों ने गांव में दशहत का माहौल पैदा कर दिया है। गांव के एक–दो लोगों ने, जिसने उनका विरोध किया, उनको मारा–पीटा भी गया)*
**नागेन्द्र** : *(गुस्सा कर)* तुम सरपंच जी का विरोध कर रहे हो। सुबह बूथ पर दिखाई नहीं देना।
**ग्रामवासी** : बाबू जी वोट डालना हमारा अधिकार है। आप हमको वोट डालने से मना कर रहे हैं।
**नागेन्द्र** : बहुत अधिकार की बातें करने लगा है। अपना अधिकार अपने पास रख। जैसा कह रहा हूं वैसा ही कर।
*(विवेक का प्रवेश। बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी का छात्र है। पहली बार मतदान की लालसा से आज ही गांव आया है)*
**विवेक** : क्या बात है....क्यों चाचा जी पर गरम हो रहे हो और सारे लोग इकट्ठा होकर गांव का फेरा क्यों लगा रहे हो ?
**नागेन्द्र** : अरे विवेक तुम कब आये। इन लोगों को समझाने आया हूं कि वोट सही जगह पर करें। सरपंच जी की ऐसी इच्छा है।
**विवेक** : मतदान जिसको करना है यह तो उसकी इच्छा पर है। इसमें सरपंच जी की कैसी इच्छा।
**बंटी** : क्या है कि ये समझ नहीं पाते हैं कि वोट किसे किया जाये। नेता जी इस बार भी जीत जायेंगे तो गांव का बहुत विकास होगा।
**विवेक** : गांव का विकास तो बाद में होगा। यदि तुम्हारी इन करतूतों की सूचना पुलिस को दे दी जाये तो तुम्हारा क्या होगा। इसको भी कभी सोचे हो।
**बंटी** : सरपंच जी तो हैं ना।
**विवेक** : सरपंच जी क्या करेंगे। तुम अगर पांच वोट खुद ही डाल दिये तो कौन मानेगा कि तुमने पांच वोट डाला है। तुम तो एक वोट के अधिकारी हो और हर कोई मानेगा कि तुम एक वोट डाल सकते हो बस। और

यदि फंस गये तो तुम भुगतोगे, सरपंच जी नहीं। सरपंच जी के इशारों पर चंद पैसों के खातिर प्रजातंत्र के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। ऐसा करके तुम लोग बहुत बड़ा अपराध कर रहे हो। सरपंच जी की कठपुतली नहीं, अपने दिमाग का प्रयोग करो। प्रजातंत्र के इस वटवृक्ष को स्वतंत्र और सही रूप में विकसित होने दो।

**सभी युवक** : विवेक भाई इस बात पर कभी हम लोगों का ध्यान नहीं गया। आपने तो हम लोगों की आंखें खोल दीं।

**विवेक** : तो आओ हम सब प्रतिज्ञा करते हैं कि चुनाव के संबंध में हम कभी भी अनैतिक आचरण नहीं करेंगे।

**सभी युवक** : *(समवेत स्वर में प्रतिज्ञा करते हैं)* हम सब कभी अनैतिक आचरण नहीं करेंगे।

• **अरुण कुमार वर्मा**
जवाहर नवोदय विद्यालय
सिरमौर, रीवा, मध्य प्रदेश

# जिम्मेदारी

## पात्र– परिचय

सूत्रधार, मणिरत्नम्
माँ, रामलाल
पिता, अलग–अलग रूपों में कई पात्र
पप्पू

## (पहला दृश्य)

*(ढोलकी ढफली लिए गीत गाते हुए कई लोगों का प्रवेश)*

**सभी गीत गाते हुए :** खाओ पिओ ऐश करो मित्रा.....
दिल पर किसे दा दुखायो न.....

**सभी** : *(हाथ जोड़कर)* नमस्कार।
**एक व्यक्ति** : इस आधुनिक युग की आधुनिक भीड़ में आपका स्वागत है।
**दूसरा व्यक्ति** : इस आधुनिक भीड़ में जिन्दगी को जीने वाली आवाज एक है।
**सभी** : मैं क्यों करूं.....*(दूर–दूर खड़े हो जाते हैं)*
**तीसरा व्यक्ति** : इस आधुनिक भीड़ में हर काम को करने का अंदाज एक है।
**सभी** : मैं क्यों करूं.....*(इधर–उधर खड़े हो जाते हैं)*
**चौथा व्यक्ति** : अपनी–अपनी ढफली, अपना अपना राग लिए हर इंसान मानो एक जैसा ही दिखाई देता है।
**सभी** : *(भागते हुए एक गीत गाते हैं)*
दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....
दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....।

## (दूसरा दृश्य)

*(घर का दृश्य। मां रसोईघर में मानो काम कर रही है। रोटी बेल रही है, सब्जी बना रही है)*
**पप्पू** : टिंग टांग.....*(घंटी बजाता है)*
**मां** : सुनो जी, जरा दरवाजा खोल दो.....।
**पिता जी:** *(लेटे–लेटे)* मैं क्यों खोलूं ? यह मेरा काम नहीं। हूं !पहले ऑफिस में सड़ो, फिर घर पर मरो *(मुंह फेर लेता है)*
**पप्पू** : *(पुनः घंटी बजाता है)* टिंग.....टांग।
**मां** : पिंकी जरा दरवाजा खोल दे।
**पिंकी** : मैं क्यों खोलूं ? मैं हॉलीडे होमवर्क कर रही हूं.....।
इधर स्कूल वाले डांटते रहते हैं
उधर घर वाले चिल्लाते हैं। *(मुंह फेर लेती है)*
**पप्पू** : *(बेसब्री से घंटी बजाता है)* टिंग.....टांग टिंग.....टांग।
**मां** : पप्पू, जरा दरवाजा खोल दे।
**पप्पू** : *(गुस्से से)* मैं तो बाहर खड़ा हूं। दरवाजा तोड़ दूं क्या.....?
**मां** : ओह हो। एक छोटा सा काम है पर सब एक ही बात कहते हैं।

**पिता–पिंकी :** मैं क्यों करूं.....।
**सूत्रधार एकः** घरों से निकलकर यही आवाज समाज की आवाज बन चुकी है।
**सभी** : मैं क्यों करूं.....?
**सभी** : *(गीत गाते हुए भागते हैं)*
दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....
दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....।

**(तीसरा दृश्य)**

*(ऑफिस में सब बैठे हैं)*

**मणिरत्नम् :** बॉय गॉड बड़ी गर्मी है जी।
रामलाल..... रामलाल.....।
**रामलाल** : जी साहब।
**मणिरत्नम् :** मेरे ऑफिस का एसी, फैन, टी.वी सब चला दो।
**रामलालः** हां साहिब।
**मणिरत्मन् :** आई.ए.एस. ऑफिसर हूं। सुविधाएं मिली हैं तो उपयोग तो करना चाहिए *(हंसता है)* टेलीविजन पर विज्ञापन आ
रहा है।
**टेली विज्ञापन :** छईया छईया छईया छईया.....
बिजली की बचत करो भईया भईया भईया
**टेली विज्ञापन** : बिजली पाने का सपना
बनाएं हमेशा के लिए अपना।
*(तेजी से)* अड़ बड़ बड़ बड़ बड़
जन–हित में जारी.....।
**मणिरत्नम् :** हुं। पूरा देश बिजली–पानी बरबाद कर रहा है। मैं ही क्यों बचत करूं ?
**रामलाल** : वैसे भी यह तो ऑफिस की बिजली है। क्या फर्क पड़ता है।
**मणिरत्नम् :** और मेरे अकेले बचत करने से कौन सा इंडिया पावर प्लांट बन जायेगा ? *(दोनों हंसते हैं)*
**सभी :** *(गीत गाते हुए भाग रहे हैं)*
दौड़ा.....दौड़ा भागा भागा सा.....*(सड़क का दृश्य)* सभी एक दूसरे से टकरा जाते हैं
**सभी :** पी.....पी.....पी.....(हॉर्न बजा रहे हैं)
पों.....पों.....पों.....
**एक आदमी :**बॉय गॉड बड़ी भीड़ है हर जगह।
**सभी गाते हैं :** ट्रैफिक जाम,..... ट्रैफिक जाम,..... ट्रैफिक जाम,..... ट्रैफिक जाम,
**दूसरा आदमी :** भाई–साहब, जरा गाड़ी पीछे कर लो।
**चौथा आदमी :** ओए.....*(गन निकाल लेता है)*
*(टपोरी स्टाइल में)* अपुन गाड़ी बैक गियर में नहीं चलाता। और मेरे गाड़ी पीछू करने से कौन सा अक्खा इंडिया को ट्रेफिक सेंस मिल जायेगा ?
**सभी** : पीं..... पीं..... पीं..... पों..... पों..... पों.....
**सभी** : *(गीत गाते हैं)*
दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....

दौड़ा–दौड़ा भागा भागा सा.....।

## (चौथा दृश्य)

*(बस स्टॉप का दृश्य)*

**एक लड़की** : चोर चोर चोर.....हाय। वो लड़के मेरा पर्स छीनकर ले गये।

**एक आदमी** : उनमें से छोटे कद वाले का एक दांत टूटा हुआ था।

**दूसरा आदमी** : हां हां हां मैंने भी देखा था।

**तीसरा आदमी** : और, रेड शर्ट वाले के हाथ पर टेटू छपा हुआ था।

**दूसरा आदमी** : हां हां हां मैंने भी देखा था।

**लड़की** : *(हाथ जोड़कर)* प्लीस..... कोई मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलकर एफआईआर करवा दो।

**सभी** : *(मुंह फेर लेते हैं)* मैं क्यों करूं.....?

**पहला आदमी** : और लोगों ने भी तो देखा था।

**दूसरा आदमी** : फालतू समझ रखा है क्या ?

**तीसरा आदमी** : अरे मियां हम तो कहते हैं और भी *(पान चबाते हुए)* गम हैं जमाने में.....पान नहीं खा सकते

गुसलखाने में.....*(सभी हंसते हैं)*

**चौथा आदमी** : मैं तो कहता हूं बहन जी जान बची सो लाखों पाये। घर जाओ, सब भूल जाओ।

**पांचवा आदमी** : हां हां। एफआईआर करने से कौन सा हमारा नाम गिनीज बुक में दर्ज हो जायेगा ?

**लड़की** : जी भाई साहब। आप सब ठीक ही कहते हैं और सच ही तो है अब हमारा देश जीने लायक नहीं रहा।

**सभी** : *(गीत गाते हैं)* ये मेरा इंडिया.....

हाय मेरा इंडिया.....।

**सूत्रधार एक** : पर जब ये इंडिया हमारा है तो सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का काम किसका है?

**सभी** : सरकार का ।

**एक आदमी** : सच तो यह है कि हमारी सरकार निकम्मी है।

**सभी** : *(नारे लगाते हैं) अठन्नी है न चवन्नी है*

*ये सरकार निकम्मी है।*

**एक आदमी** : हां हमारी सरकार बड़े–बड़े वायदे करके ऊंचे सपने तो दिखाती है पर उन्नति इत्तु सी भी नहीं ।

**सभी** : *(चौंक कर)* क्या ? क्या ? क्या ? उन्नति इत्तु सी भी नहीं।

**दूसरा आदमी** : यह देश, समाज इतना बड़ा है और हम सब एक–एक अकेले हैं, कमजोर हैं।

**तीसरा आदमी** : *(सर पर हाथ रखकर बैठ जाता है)* भला एक अकेला आदमी कर भी क्या सकता है ?

**सूत्रधार दो** : सोचो। अगर एक अकेला है, कमजोर है तो गांधी जी ने क्यों नहीं कहा– मैं क्यों करूं। उन्होंने, फिर ऐसा

क्यों किया, ?

*(गांधी जी के रूप में एक व्यक्ति का प्रवेश)*

**गांधी जी** : मैं सत्याग्रह करूंगा। मैं अंग्रेजों को इतना मजबूर कर दूंगा कि वो जल्द ही भारत छोड़कर चले जायेंगे।

*(गांधी जी अकेले गीत आरम्भ करते हैं)*

**गांधी जी :** वैष्णव जन तो .....तेने कहिए जो..... पीर पराई जाने रे.....

*(सभी उनके पीछे–पीछे चलते हैं और उनका अनुकरण करते हैं)*

**सभी :** वैष्णव जन तो तेने कहिए जे.....
पीर पराई जाने रे.....।

**गांधी जी :** अंग्रेजो भारत छोड़ो.....।

**सभी :** अंग्रेजो भारत छोड़ो.....।

**सूत्रधार एक :** सोचो। अगर एक अकेला है कमजोर है तो भगत सिंह ने क्यों नहीं कहा– मैं क्यों करूं। फिर उन्होंने ऐसा
क्यों कि.....*(भगत सिंह का रूप लिए दूसरे व्यक्ति का प्रवेश। साथ में सुखदेव, राजगुरु भी)*

**भगत सिंह :** मैं फांसी पर चढूंगा। आजाद भारत का सपना पूरा करूंगा, शहीद होकर अंग्रेजी सेना को करारा जवाब दूंगा।
मेरा रंग दे बसंती चोला.....

**राजगुरु, सुखदेव :** मेरा रंग दे बसंती चोला.....मां रंग दे बसंती चोला.....

**तीनों :** वन्दे मातरम्.....।

**सभी :** वन्दे मातरम्.....।

**सूत्रधार :** सोचो। जब आजादी पाने का सपना हर एक व्यक्ति ने देखा था तो देश को चलाने और सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का दायित्व भी हर एक व्यक्ति का ही होगा।

**व्यक्ति पांच :** इसका मतलब गांधी, जवाहर, भगतसिंह, अलबर्ट आंईस्टाइन, कल्पना चावला की तरह हम सब अनेक एक
हो जायें तो.....

**व्यक्ति छह :** अपने–अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएं तो.....

**सूत्रधार :** देश–समाज का कोई भी काम पूरा कर सकते हैं।

**सभी :** हम हैं अनेक, हो गये अब एक, बन गई ताकत, बन गई हिम्मत। *(एक–दूसरे के हाथ पर हाथ रखकर कहते हैं)*

**सूत्रधार :** अब हर काम के लिए एक ही आवाज होगी।

**सभी :** मैं ही करूं।

*(सभी भागते–भागते गीत गाते हैं) दौड़ो दौड़ो, भागो–भागो..... ।*

**पप्पू : टिंग–टांग** *(बेल बजाता है)*

**पापा और पिंकी :** मैं दरवाजा खोलता हूं।

**टी.वी विज्ञापन :** चल छईया..... छईया..... छईया.....।

**मणिरत्नम् :** हम आधा घंटा के लिए टी.वी, एसी. बन्द करके बिजली की बचत करता जी..... शायद किसी के घर में थोड़ी
बिजली सप्लाई हो जाए।

**व्यक्ति :** पीं....पीं....पीं.... पों.....पों....पों।

**व्यक्ति दो :** इससे पहले कि ट्रैफिक जाम हो जाये मैं अपनी गाड़ी पीछे ले लेता हूं।

**लड़की :** चोर.....चोर.....चोर।

**व्यक्ति तीसरा :** इससे पहले कि वो बदमाश कोई नई वारदात करें, हम तुम्हारे साथ पुलिस स्टेशन चलते हैं
भाई और भी गम हैं जमाने में, जिंदगी का मजा ही कुछ और है दूसरों के काम आने में।

**सभी :** वाह वाह! क्या बात कही है।

**आदमी एक :** यहां तो सब काम आसानी से और जल्दी–जल्दी हो गये।

**सभी :** *(खुश होकर गीत गाते हैं)* ये मेरा इंडिया.....आई लव माई इंडिया।

**सूत्रधार दो :** तो टेंशन किस बात की है भाई ? गाओ मौज मनाओ, अपने–अपने हिस्से की सामाजिक जिम्मेदारी निभाओ।

**सभी :** *(गीत गाते हैं नाचते हैं। नाचते–नाचते अपने दुपट्टों से तिरंगा बनाते हैं)*

खाओ पीओ ऐश करो मित्रा
दिल पर किसे दा दुखायो न
चार दिनां दी ए जिंदगी.....
काम तो कदे जी चुरायो न.....।

**सभी :** श्रमेव जयते।

**(पर्दा गिरता है)**

मीनू शर्मा
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
अशोक विहार, फेज 4, दिल्ली

# मजहब

## पात्र – परिचय

| | |
|---|---|
| हीना | अध्यापक |
| रानी | हीना के दादाजी |
| राधा | हीना के अब्बू |
| मौवली | राम |
| प्रधानाचार्य | मोहन |

## (पहला दृश्य)

*(विद्यालय का प्रांगण, सभी विद्यार्थी अर्द्धविश्रान्ति में भोजन कर रहे हैं, तभी एक अध्यात्क विद्यार्थियों के बीच में आये)*

**अध्यापक** : *(सभी विद्यार्थियों से)* सावधान.....। मेरी सूचना की ओर ध्यान करेंगे। आप सबको वैसे पता है कि हमारा देश त्यौहारों का देश है। यहां हर दिन त्यौहार मनाये जाते हैं, उनमें से कुछ पूरे देश में मनाये जाते हैं तो कुछ क्षेत्रीय त्यौहार हैं जो सीमित क्षेत्र तक मनाये जाते हैं। उनमें से तो कुछ राष्ट्रीय त्यौहार होते हैं जिसके उपलक्ष में राजकीय अवकाश होता है। ऐसा ही एक त्यौहार है जो अभी आने वाला है। वो कौन सा त्यौहार है ? कोई बतायेगा ?

**रानी** : गुरु जी मैं बताऊं वो कौन सा त्यौहार है ?

**अध्यापक** : हां रानी बताओ, वो कौन सा त्यौहार है ?

**रानी** : अभी रंगों का त्यौहार होली आने वाली है।

**अध्यापक** : हां। *(सभी विद्यार्थी खुशी से झूम कर तालियां बजाते हैं)*
सुनों.....सुनों *(सभी विद्यार्थियों को शान्त करते हुए)* कल जो हमने एक आप सभी को सूचना दी थी वो कौन सी थी ?

**हीना** : हां, आपने कहा था कि थोड़ा रंग व गुलाल साथ में लाना है और गुरुजी हम सभी रंग व गुलाल साथ लेकर भी आये हैं।

**अध्यापक** : हां, रंग व गुलाल साथ में लाना था। इनका भी उपयोग करेंगे लेकिन सावधानी से।

**रानी** : जी गुरु जी *(सभी विद्यार्थी तालियां बजाते हैं)*

**अध्यापक** : हम सभी अन्तिम कालांश में होली खेलेंगे। होली खेलते समय कुछ बातें ध्यान में रखना,जैसे किसी विद्यार्थी की आंखों में रंग या गुलाल नहीं पड़े और किसी पर जबरदस्ती करके रंग व गुलाल न डालेंगे। जिसको रंग व गुलाल से एलर्जी है वो एक तरफ बैठकर यह कार्यक्रम देखेंगे और शेष विद्यार्थी होली खेलेंगे। इन सभी बातों का ध्यान रखेंगे। *(तभी अगले कालांश की घण्टी बजती है। सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी कक्षा की ओर चले जाते हैं और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पर्दा गिरता है)*

## (दूसरा दृश्य)

**अध्यापक** : *(विद्यार्थियों से)* सावधान.....सावधान... (सभी शान्त होते हैं) अभी हम सभी सावधानी से होली खेलेंगे। आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं। आपके जीवन में ये खुशियों के रंग खिलते रहें।

**रानी** : गुरु जी, आप को होली की हार्दिक शुभकामनाएं। *(सभी विद्यार्थी हंसते हैं)*
**अध्यापक** : चलो सभी होली खेलो। *(विद्यार्थी होली खेलना शुरू करते हैं)*
**हीना** : रानी.....रानी.....*(हीना दौड़ के रानी के पास जाती है )* रानी होली मुबारक हो।
**रानी** : आपको भी होली की हार्दिक शुभकामनाएं। *(दोनों एक–दूसरे के गुलाल लगाते हैं और हंसते–झूमते गले मिलते हैं)*
**हीना** : कितना प्यारा हमारा देश है। देखो हमें खुश रहने के लिए कितने त्यौहार बनायें हैं भगवान ने।
**रानी** : हां, हमारे देश में हर दिन, हर महीने, हर ऋतु के अनुसार त्यौहार आते हैं और हम उन्हें खुशी से मस्ती से प्रेम
बांटते हुए मनाते हैं।
**हीना** : लगता है खुदा यही चाहता है कि हम ताउम्र खुश रहें, आबाद रहें, हमारे चेहरों की रौनक बनी रहे। हमारे ऊपर किसी प्रकार से गम का साया नहीं हो।
**रानी** : हां और तो और प्रत्येक त्यौहार के पीछे कुछ न कुछ वैज्ञानिक कारण भी होता है जो हमारी दिनचर्या को स्वास्थ्य को, समाज को सही दिशा देने का भी काम करता है।
**हीना** : हां ये बात तो है।
**रानी** : देखो, होली के दिन तुम अपने अब्बा जान व अम्मी जान रेशमा, सुहाना, जायफा व अपने भाईजान शोयब, यूसूफ अकरम, सलिम और वो छोटे वाला रज्जाक, इन सबको लेकर हमारे घर जरूर आना।
**हीना** : हां, पर ..... *(उदास होकर)*
**रानी** : पर .....क्या ?
**हीना** : हमारे मौलवी जी हमें यह सब करने से मना करते हैं। पता नहीं उनको यह सब करने में क्या मिलता है ?
**रानी** : जाने दो उनकी बातों को। ये तो ऐसे ही करते रहते हैं, तुम अपने पूरे परिवार के साथ होली के दिन हमारे घर आमंत्रित हो।
**हीना** : ठीक है पूरी कोशिश करूंगी।
**रानी** : और साथ में भाभी जान व रेशमा को जरूर लाना, वो कितनी क्युट सी है। एकदम नन्हीं परी सी है। देखो शमां को जरूर लाना वरना तुम्हें वापस घर भेजूंगी और रेशमा को साथ लाओगी तभी तुम्हारी हमारे घर में एन्ट्री होगी। *(दोनों हंसती हैं)*
**हीना** : जरूर, *(दोनों बातें कर रही होती हैं कि राधा दौड़ती हुई हीना से टकराती है)* अरे मेरी राधा (खुसी से)
**रानी** : हीना राधा को पकड़ो, आज इसे रंग ही देते हैं। (दोनों मिलके राधा को रंगते हैं ) तेरा कान्हा तेरे रंग लगाये या न लगाये पर तेरी ये सखी–सहेलियां आज तेरे गालों को रंगीन बनाके ही छोड़ेंगे।
**राधा** : *(मजाकिया अन्दाज में)* अरे छोड़ो छोड़ो मेरा तो कान्हा ब्रज में बैठा है, वो गोपियों संग होली खेल रहा होगा। *(रानी को पकड़ के रंग लगाती हुई)* पर तेरा राजा आयेगा तक तक मैं भी तेरे गालों पर रंग लगा देती हूं।
*(तीनों आपस में रंग लगा रहे हैं। इधर होली के कुछ गीत गाते विद्यार्थी नाच रहे हैं। मौसम आनन्दमय पर अनुशासन के साथ है। पर्दा धीरे–धीरे गिरता है)*

## (तीसरा दृश्य)

*(हीना के अब्बु की पान की दुकान, जहां पर हीना के अब्बु व मौलवी आपस में बातचीत कर रहे हैं)*

**मौलवी** : *(इधर–उधर देखकर आवाज को नीचे करते हुए)* मिय्यां, अल्लाह कसम, देखो उनसे हमारी बातचीत होती रही है। अभी पिछले थार के फेरे में अपना आदमी जाकर आया है। वह बता रहा है कि वहां की स्थिति यहां से ज्यादा अच्छी है।

**हीना के अब्बु** : क्या वहां अच्छा है ? अभी–अभी समाचार में दिख रहा था कि वहां आत्घाती हमला हुआ वह भी स्कूल में।

**मौलवी** : मिय्या वो तो जिहाद की तैयारी कर रहे थे। जो हमारे साथ नहीं है उनको यह भुगतना ही है।

**हीना के अब्बु** : इसका मतलब यह नहीं है कि जो चाहे जब चाहे, कुछ भी करते रहो। वहां हर रोज सैकड़ों लोगों की हत्या होती रहती है। पर यहां एकदम अमन, शांति है।

**मौलवी** : *(इधर–उधर देखकर)* मिय्यां, अल्लाह कसम यही तो हम सब चाहते हैं कि हमारी सन्तानें हमारे नक्शे कदम पर चलें। आखिर ये देश.....।

**हीना के अब्बु** : क्या आखिर ? इस देश ने हमें सब कुछ दिया है। यहां की मिट्टी से जन्मों–जन्म का रिश्ता भी है। हमारी कई पीढ़ियों ने अपना गुजर–बसर यहां किया है।

**मौलवी** – मिय्यां, अल्लाह कसम, फिर भी ये देश अपना नहीं है। यहां की अवाम ने हमारी कौम के साथ अन्याय ही किया है।

**हीना के अब्बु** : ऐसी कोई बात नहीं है। ये देश हमारा नहीं होते हुए भी इन्होंने हमको यहां बसने दिया। और तो और यहां के संविधान ने हमें अल्पसंख्यक घोषित किया, हमारे लिये सारे रोजगार के साधन उपलब्ध कराये।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, हाथी के दांत दिखाने के लिए अलग होते हैं और खाने के अलग होते हैं। ऐसा ही हमारे साथ हो रहा है। हमें ये लोग सिर्फ वोट बैंक के वास्ते खुश करने के लिए ऐसा–वैसा व्यवहार करते हैं।*(आवाज को नीचे करते हुए)* ये कौम सदियों से हमारे खिलाफ थी और हमारे साथ कभी भी अच्छा व्यवहार नहीं किया।

**हीना के अब्बु** : नहीं.....मौलवी जी नहीं.....। अच्छा व्यवहार तो मुगलों ने यवनों नहीं किया। अनेक सुलतानों ने हिन्दुस्तान की सरजमीं को लूटा, यहां खून–खराबा किया। फिर भी गांधीजी जैसे लोगों ने भारत–पाक विभाजन के बाद भी हम लोगों को विस्थापित होने से रोका। हमें यहां रहने की छूट दी। मेरी दुकान भी हनुमान जी के मन्दिर के कारण चलती है। हमारा पेट तो ये लोग व उनकी आस्था पालती है।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, मेरी बातें तुम्हारी समझ में नहीं आ रही है।*(इधर–उधर देखकर)* मिय्यां अपनी कौम के भविष्य के बारे में सोचो। हमें अपनी कौम के भविष्य के बारे में चिन्ता करनी चाहिए। हमारा प्रभुत्व कैसे बढ़े। हमारी जनसंख्या को भी बढ़ाना है ताकि हम शक्तिशाली व एकजुट हों।

**हीना के अब्बु** : ये क्या गलत बता रहे हो ? जनसंख्या बढ़ाने से बेरोजगारी व भुखमरी बढ़ती है, शक्ति नहीं।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, ये लो किताब *(किताब देते हुये)* कलमा–वलमा पढ़ना और बच्चों को भी पढ़ाना। अपने बच्चों को मदरसे में पढ़ने भेजो। हां और एक बात, घर के सभी मर्दाना लोग टोपी जरूर पहनें, इससे हम सब एक शक्ति लगें।

**हीना के अब्बु** : माना की सभी को अपने धर्म के प्रति प्रेम का भाव, आदर का भाव हो पर इसके लिए ये दिखावा करना भी जरूरी नहीं है। धर्म को सिर पर नहीं अपने दिल में रखना चाहिए।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, फिर भी हमें अपनी कौम के लिए सबसे अलग–थलग रहना चाहिए। नवाजी बनना चाहिए।

**हीना के अब्बु** : अलगाव के परिणाम हमने कश्मीरी अवाम के देखे हैं। वहां के वाशिन्दों का जीना दूभर हो गया है। आये दिन झगड़ा–फसाद, गोलाबारी, पता नहीं वे लोग कैसे अपना जीवन यापन करते हैं।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, वह तो जिहाद है।
**हीना के अब्बु** : जिहाद–विहाद कुछ नहीं होता *(बात को टालकर)* मौलवी जी चलो घर चल कर चाय–पानी करते हैं। *(पड़ोसी दुकानदार से)* राम मोह जी, मैं जरा सा घर होकर आ रहा हूं। थोड़ा ध्यान रखना।
**राम मोहन** : जी, जरूर। मैं ध्यान रखता हूं।

*(दोनों दुकान से चल पड़ते हैं। पर्दा गिरता है)*

## (चौथा दृश्य)

*(हीना का घर, जहां पर हीना के अब्बु व मौलवी आपस में बातचीत कर रहे हैं। हीना का प्रवेश, रंग में रंगी हीना पहचान में भी नहीं आ रही है। अपने हाथों से रंग झटकती हुई हीना आती है)*

**हीना** : अब्बु प्रणाम।
**हीना के अब्बु** : खूब जियो। क्या बात है विद्यालय से जल्दी आ गयी हो।
**मौलवी** : *(आश्चर्य से)* मिय्यां, अल्लाह कसम ये.....प्रणाम व्रणाम ? और ये रंग ?
**हीना** : अब्बु, विद्यालय में आज होली मनायी गयी थी तो छुट्टी भी जल्दी हुई थी।
**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, तुम लोग मेरी बातों पर ध्यान ही नहीं दे रहो हो। ये प्रणाम शब्द व होली खेलना, क्या लगा रखा है ?
**हीना** : मौलवी जी प्रणाम। इसमें बुरा ही क्या है। हम तो विद्यालय में हमेशा अपने गुरुजनों को प्रणाम करते हैं, आज तो हमने खूब आनन्द के साथ होली का त्यौहार अपनी सखियों के साथ मनाया। देखो ये रंग, ये गुलाल।
**मौलवी** : ये होली, दीपावली हमारे उर्स, त्यौहार नहीं हैं।
**हीना** : मौलवी जी, ये हमारा–तुम्हारा क्या होता है? हमें विद्यालय में ऐसा कुछ भी नहीं पढ़ाया जाता है।
**मौलवी** : अल्लाह कसम, बड़ी जुबान लड़ाती है ये लड़की। *(गुस्से से)* हमने कह दिया तो कह दिया। ये त्यौहार हमारे नहीं हैं अगर मनाना ही है तो रोजे रखो, रमजान का महीना, मुहर्रम, ताजिया ये मनाओ।
**हीना के अब्बु** : ये तो हम मनाते ही हैं। अगर इस के साथ–साथ होली पर रंग लगा दिया तो कौन सा गुनाह है।
**हीना** : और अगर दीपावली पर थोड़े दीपक लगा दिये तो कौन –सा गुनाह हो गया मौलवी जी ?
**मौलवी** : मिय्यां, ये क्या कर डाला आपने, हीना कौन से स्कूल में तालीम ले रही है ?
**हीना के अब्बु** : पास में जो स्वामी जी का विद्यालय है वहां पढ़ती है। हीना हर वर्ष विद्यालय में प्रथम भी आती है।
**हीना** : वो तो है, *(गर्व से)* अब्बु देखना मैं इस बार भी प्रथम आने वाली हूं।
**हीना के अब्बु** : बहुत अच्छा।,
**हीना** : अब्बु मैं ये तो बताना भूल ही गई। रानी ने हमारे पूरे परिवार को होली पर आमंत्रित किया है और हम सब दावत पर आयेंगे, ये मैंने वादा भी कर दिया है। अब्बु हम पक्का चलेंगे ?
**हीना के अब्बु** : हां, पक्का चलेंगे। रानी के पिताजी भी मुझे आज दुकान पर मिले थे। उन्होंने भी आने को कहा है।
**हीना** : ये हुई ना बात। मैं अम्मी को खुशखबरी देती हूं। *(हीना चली जाती है)*
**मौलवी** : मिय्यां, ये सब क्या लगा रखा है.....? *(आश्चर्य से हड़बड़ाहट में)* मैं तो चलता हूं, अच्छा प्रणाम *(चौंक कर)* खुदा हाफिज।
**हीना के अब्बु** : खुदा हाफिज मौलवी जी।
*(मौलवी थोड़ा संकोच करते हुए इधर–उधर झांकते हुए चले जाते हैं। तालियों की आवाज आती है दृश्य समाप्त)*

## (पांचवां दृश्य)

*(मस्जिद के बाहर हीना के दादाजी नमाज के बाद अपने घर की तरफ रवाना होते ही हैं कि मौलवी उनसे मिलता है)*

**मौलवी** : सलाम वालेकुम।

**हीना के दादा** : वालेकुम सलाम।

**मौलवी** : मिय्यां कैसी है तबियत ?

**हीना के दादा** : ठीक है, खुदा चला रहा है ये गाड़ी चल रही है। *(बात को काटकर)* वो काम कैसा चल रहा है ?

**मौलवी** : नहीं मिय्यां, अल्लाह कसम, वो तो ठीक चल रहा है पर.....।

**हीना के दादा** : पर.....क्या ?

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, पर आपके घर पर अच्छा नहीं हो रहा।

**हीना के दादा** : क्या हुआ ? किसी ने कुछ बदतमीजी की है क्या ?

**मौलवी** : नहीं मिय्यां, ऐसा–वैसा कुछ नहीं हुआ। आपकी पोती कौन से स्कूल में तालीम लेने जाती है यह ध्यान रखो।

**हीना के दादा** : वो पास के स्कूल में जाती है। मैंने तो शुरू में ही कहा था पर हीना का बाप मानता ही नहीं । वो कह रहा है ये स्कूल ठीक है घर के पास है।

**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, कल तो गजब हो गया जब मैं आपके घर था तब हीना स्कूल से घर आई तो देखा वो रंग में रंगी हुई थी। पता नहीं वह बता रही थी कि उसके स्कूल में होली का कार्यक्रम था। और ये भी बता रही थी कि वो अपने परिवार के साथ होली पर किसी रानी के घर दावत पर जाने वाले हैं। मिय्यां आप बताओ ये रंग गुलाल, उनके वहां खाना पीना .....?

**हीना के दादा** : *(आश्चर्य से)* क्या बात कर रहे हो ? हीना और होली, ये हो ही नहीं सकता। मुझे विश्वास नहीं होता है। दावनत की बात तो छोड़ो उनको मैं कहीं भी नहीं जाने दूंगा।

**मौलवी**–मिय्यां अल्लाह कसम, अब विश्वास तो करना ही होगा क्योंकि आपने छूट जो दे रखी है। मिय्यां, बच्ची बड़ी हो रही है। इस उम्र में रंग–वंग लगाना कहीं महंगा न पड़ जाये। उसे अब बुर्के में रहने दो ठीक रहेगा।

**हीना के दादा** : *(गुस्से से)* अभी उन सब की खैर लेता हूं।

**मौलवी** : मिय्या, अल्लाह कसम, खैर–वैर छोड़ो, आप जल्दी से हीना का दाखिला मदरसे में करवा दो।

**हीना के दादा** : पर अब तो एक वर्ष का ही काम है। बाद में तो वैसे भी कॉलेज जाने वाली है।

**मौलवी** : मिय्यां, एक वर्ष में क्या–क्या हो जाता है। आप जानते ही हो हमारा समय बहुत खराब चल रहा है।

**हीना के दादा** : ठीक है, तो मैं उसका मदरसे में दाखिला करवाता हूं।

**मौलवी** : मिय्यां, चलता हूं, खुदा हाफिज।

**हीना के दादा** : खुदा हाफिज।

*(दोनों अपने–अपने रास्ते चल पड़े तालियों की आवाज दर्शकों की तरफ से आती है)*

## (छठा दृश्य)

*(हीना का घर, हीना आंगन में बैठी पढ़ रही है। हीना के अब्बु कुर्सी पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। हीना के दादा का प्रवेश)*

**हीना के दादा** : हीना क्या हो रहा है ?

**हीना** : दादू में अपना गृह कार्य कर रही हूं।

**हीना के अब्बु** : क्या हुआ मस्जिद हो आये।

**हीना के दादा** : हां, और मौलवी जी भी मिले थे।
**हीना के अब्बु** : तो ठीक हुआ।
**हीना के दादा** : क्या ठीक ? मौलवी जी बता रहे थे कि हीना कल स्कूल से होली वगैरा खेल के आई थी।
**हीना के अब्बु** : हां, इसमें क्या हुआ ? स्कूल में कार्यक्रम था, तो बच्ची है, खेल आई।
**हीना के दादा** : *(हीना से )* हीना ये नहीं चलेगा।
**हीना** : दादू, इसमें क्या गलत है।
**हीना के अब्बु** : हां।
**हीना के दादा** : देखो, से सब हमारे धर्म के खिलाफ है *(गुस्से से) तो अब बस।*
**हीना के अब्बु** : अब्बु आप नाराज क्यों हो रहे हो। आखिर हीना बच्ची ही है।
**हीना के दादा** : हीना आगे से मदरसे में ही पढ़ने जाया करेगी।
**हीना** : दादू आप क्या कर रहे हो ? *(दुख के साथ)*
**हीना के अब्बु** : अब्बु, एक वर्ष की ही बात है फिर हीना कॉलेज में आ जायेगी।
**हीना के दादा** : मुझे कुछ नहीं पता। मैंने जो कह दिया तो कह दिया। *(हीना से)* आगे से तुम्हारा घर से ज्यादा बाहर जाना बन्द। तुम्हें घर पर रह कर ही पढ़ना होगा। किसी सहेली के वहां जाना भी बंद। हम होली पर भी किसी के वहां दावत पर नहीं जायेंगे।
**हीना** : दादू.....!
**हीना के अब्बु** : आप उस मौलवी जी के कहने में आ रहे हो।
**हीना के दादा** : मैं किसी के कहने में नहीं आ रहा हूं। मुझे सब पता है क्या करना है और क्या नहीं करना। अब मैं बूचड़खाने जा रहा हूं पता नहीं ट्रक आज भी आया या नहीं है।*(हीना के दादा चले जाते हैं)*
**हीना** : पर.....।
**हीना के अब्बु** : हीना बेटी तुम चिन्ता नहीं करो। सब ठीक हो जायेगा।
**हीना** : पर अब्बु, दादू ने क्या कहा सुना आपने।
**हीना के अब्बु** : उनकी बातों को तुम भूल जाओ। तुम्हारी शेष एक वर्ष की पढ़ाई वहीं होगी। मैं दुकान जाता हूं। ग्राहक आये होंगे।
**हीना** : पर.....। मैंने क्या किया जो.....।

## (सातवां दृश्य)

*(हीना का विद्यालय। हीना उदास सी है। हीना और रानी आपस में बातचीत कर रही हैं। प्रधानाचार्य उनके पास आती है)*
**हीना** : बड़ी दीदी जी प्रणाम।
**प्रधानाचार्या** : क्या बात है तुम दोनों कुछ चिंतित सी लग रही हो।
**रानी** : हां, दीदीजी, बात ही कुछ ऐसी है कि हीना उदास व दुखी हो गई।
**प्रधानाचार्या** : क्या हुआ हीना ?
**हीना** : मेरे दादाजी मौलवीजी के कहने पर अब मेरा दाखिला मदरसे में करने की बात कर रहे हैं।
**प्रधानाचार्या** : क्यों ? ऐसा क्यों करना चाहते हैं ?
**हीना** : मौलवी जी दिन भर दादाजी के सामने धर्म, जिहाद की बातें करते रहते हैं।
**प्रधानाचार्या** : कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए भोले–भाले लोगों को अपने रास्ते से भटकाते हैं। धर्म के नाम पर बांटते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ऐसा ही तुम्हारे दादाजी के साथ हो रहा होगा।

**रानी** : दादाजी, हीना की स्कूली पढ़ाई तो अब सिर्फ एक वर्ष की है फिर तो वैसे भी हम कॉलेज चले जायेंगे।
**प्रधानाचार्या** : तुम लोग चिन्ता नहीं करो। मैं सब ठीक कर दूंगी।
**हीना** : पर .....दादाजी नहीं माने तो ?
**प्रधानाचार्या** : सब मान लेंगे। उनको समझाना मेरा काम है।
**रानी** : अगर मान जाते हैं तो बहुत अच्छा होगा।
**प्रधानाचार्या** : तुम अभी कक्षा में जाओ और मन लगा कर पढ़ाई करो, और हां, मंगलवार को विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता है। बुधवार से तुम्हारे होली के अवकाश शुरू हो रहे हैं।
**हीना** : विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता, क्या बात है ?
**रानी** : इस प्रतियोगिता का कोई विषय भी है या नहीं है ?
**प्रधानाचार्या** : हां, इस प्रतियोगिता का विषय है हमारे देवी–देवता, आदर्श महापुरुष व वीरांगनाएं हैं।
**हीना** : मैं घर जाकर आज की इस प्रतियोगिता की तैयारी करती हूं।
**रानी** : हां, प्रतियोगिता में सबसे हटकर वेशभूषा बनाऊंगी और देखना हमारा स्थान जरूर लगेगा।
**प्रधानाचार्या** : बहुत अच्छा, तुम दोनों से मुझे यह ही उम्मीद थी। अब कक्षा में जाओ कहीं देर न हो जाये।
**रानी व हीना** : अच्छा दीदी जी, हम जाते हैं। *(दोनों कक्षा की तरफ जाते हैं)*
**प्रधानाचार्या** : *(प्रधानाचार्या दर्शकों से)* क्या हो गया इंसान को ? वो अपना धर्म बेच रहा है या उसका आदर कर रहा है। समझ में ही नहीं आता। लोग मिलजुल कर रहना चाहते हैं पर कुछ धर्म के ठेकेदार धर्म थोप रहे हैं। लोगों को बहका रहे हैं, उनको प्रगति के रास्ते से भटकाने का काम करते हैं। इस समय मुझे उस गीत के बोल याद आ रहे हैं ''धरती बांटी, अम्बर बांटा, मत बांटो इंसान को।

## (आठवां दृश्य)

*(हीना का विद्यालय प्रधानाचार्या का कक्ष, जहां प्रधानाचार्या कुछ लिखने का काम कर रही हैं। हीना के दादाजी का प्रवेश)*
**हीना के दादाजी** : नमस्कार मोहतरमा।
**प्रधानाचार्या** : *(हीना के दादाजी की तरफ देखती हुई)* नमस्कार, नमस्कार। आइये।
**हीना के दादाजी** : हां, *(कुर्सी पर बैठते हुए)*
**प्रधानाचार्या** : क्या बात है जो आप आज सुबह–सुबह आये ?
**हीना के दादा जी** : बस कुछ नहीं, थोड़ा.....।
**प्रधानाचार्या** : हां, बताओ क्या काम है।
**हीना के दादाजी** : हीना की पढ़ाई के विषय में।
**प्रधानाचार्या** : हीना की पढ़ाई तो अच्छी चल रही है। वैसे भी आपको पता ही है हीना प्रति वर्ष कक्षा ही नहीं, वह तो विद्यालय में भी प्रथम आती है।
**हीना के दादा जी** : हां वो तो ठीक है पर .....।
**प्रधानाचार्या** : क्या पर.....? खुल के बताओ।
**हीना के दादाजी** : मैंने तय किया है कि हीना अब मदरसे में पढ़ेगी।
**प्रधानाचार्या** : क्यों ?
**हीना के दादाजी** : बस ऐसे ही।
**प्रधानाचार्या** : बस ऐसे ही क्यों, इस विद्यालय में ऐसा क्या हो गया जो आप हीना का दाखिला मदरसे में करना चाहते हैं वैसे एक वर्ष की तो बात है। फिर तो वो कॉलेज जाया करेगी।

**प्रधानाचार्या** : बड़ी हो गई तो उस में हीना का क्या गुनाह ? और बच्चे बड़े होने के लिए होते हैं तो उल्टा हमें खुश होना चाहिए कि अब वो हमारा सहारा बन गये। घर के छोटे–मोटे काम में वो हाथ बंटाने लग गये हैं।
**हीना के दादा जी** : समाज?
**प्रधानाचार्या** : क्या समाज? समाज को इससे लाभ ही है। समाज को अगर उसकी बहू–बेटी पढ़ी–लिखी होती है तो क्या गलत है ? बहू–बेटी पढ़ी–लिखी होगी तो परिवार जागरूक होगा। परिवार जागरूक होगा तो समाज भी जागरूक होगा।
**हीना के दादा जी** : वो बात नहीं है ?
**प्रधानाचार्या** : तो फिर क्या बात है खुलकर बताओ।
**हीना के दादा जी** : बस हीना को मदरसे में दाखिला देना है तो देना है।*(हड़बड़ाकर)*
**प्रधानाचार्या** : देखिए, आप को समझना चाहिए कि हीना अगर यहां से मदरसे में जायेगी तो उसको वहां तालमेल बनाने में समय लगेगा और परीक्षाएं भी आने वाली हैं। इस दौरान उसकी पढ़ाई खराब होगी। इतने वर्ष यहां पढ़ा ही लिया तो अन्तिम वर्ष उसको शान्ति से पढ़ने दो। फिर तो कॉलेज ही जाना है।
**हीना के दादाजी** : पर.....।
**प्रधानाचार्या** :पर–वर कुछ नहीं। मेरा कहना मानो यही सही रहेगा। एक बात और, कल विद्यालय में विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता है और इसमें हीना भाग ले रही है, आप उसकी मदद करना ।
**हीना के दादाजी** : ठीक है। नमस्कार, मैं अब चलता हूं। *(हीना के दादाजी चले जाते हैं, पर्दा गिरता है।*

## (नौंवा दृश्य)

*(हीना का घर, जहां मौलवी, हीना के दादाजी बैठे आपस में बातचीत करते हैं)*
**हीना के दादाजी** : आपको एक बार वहां जाना चाहिए।
**मौलवी** : हां मिय्या, में जाने वाला ही हूं। *(बात को काटकर)* पर अल्लाह कसम, आपकी हीना के स्कूल वाला क्या हुआ ? मैंने तो मदरसे में बात भी कर ली है।
**हीना के दादा जी** : प्रधानाचार्या मोहतरमा बता रही थी कि एक साल का ही काम है। तो ठीक है।
**मौलवी** : मिय्यां अल्लाह कसम, ये अच्छा नहीं किया आपने।
**हीना के दादाजी** : चलो एक साल की बात है। जाने दो इस विषय को। वैसे हीना भी खुश है।
**मौलवी** : पर अल्लाह कसम, हीना अभी कहां है ?
**हीना के दादाजी** : विद्यालय है। आज शायद विद्यालय में विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता है तो बाप–बेटी दोनों वहां गये हैं।
**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, ये क्या कह रहे हो।
*(हीना व उसके अब्बु का प्रवेश। हीना का वेश मां दुर्गा के रूप में ,हाथ में नकली तलवार, कटारी लिये हुए है)*
**हीना** : दादू देखो (पुरस्कार दिखाती हुई) मैं विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर पर प्रथम रही।
**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, इस लड़की ने ये क्या रूप बना रखा है।
**हीना के अब्बु** : मौलवी जी, मां दुर्गा का रूप है, और आप को पता है, कार्यक्रम में स्वामी जी ने हीना की भूरि–भूरि प्रशंसा भी की। सभी लोग कर रहे थे की हीना इस स्कूल की आन–बान और शान है।
**हीना** : हां वो तो मैं हूं ही आखिर पौती किसकी हूं। *(अपने दादाजी के गले लगती हुई)*
**मौलवी** : मिय्यां, अल्लाह कसम, लड़की को आप कुछ ज्यादा ही छूट दे रहे हैं। मैं तो चलता हूं। *(मौलवी चला जाता है)*
**हीना के दादा जी** : बहुत अच्छा किया। तुम्हारी स्कूल की पढ़ाई स्वामी जी के स्कूल से होगी। जाओ तुम मेहनत करो और अच्छे नम्बर लाओ।

**हीना के अब्बु :** हम सभी तुम्हारी सहेली के घर पर होली की दावत पर चलेंगे।
**हीना के दादा जी :** हां, जरूर।
**हीना :** ये.....*(खुशी से झूम कर)* यह हुई न बात।

**(पर्दा गिरता है)**

**रामेश्वर सिंह राजपुरोहित 'कनोडिया'**
आदर्श विद्या मंदिर, उ. मा. विद्यालय
लंगेरा, बाड़मेर, राजस्थान

# सांझ की धूप

## पात्र–परिचय

**डॉक्टर : सरदार जगजीत सिंह**
**प्राध्यापक : श्री रामगोपाल गुप्ता**
**इंजीनियर : श्री मोहनलाल शर्मा**
**बैंक मैनेजर : मिस्टर डेविस डेनियल**
**पुलिस अधीक्षक : श्री बहादुर सिंह**

**सभी मित्र सेवानिवृत्त, आयु 60 से ऊपर, पिछले दस सालों से एक साथ**

## (पहला दृश्य)

*(पार्क में खिले हुए रंग–बिरगे फूल, पक्षियों की चहचहाहट, भीनी–भीनी महक। पांचों मित्र सुबह की सैर करते हुए)*

**गुप्ता जी :** क्या नजारा है! लगता है ईश्वर ने सारा अमृत प्रकृति में उड़ेल दिया हो।

**सरदार जी :** बिलकुल ठीक। यहां सैर और कसरत करके तो हम नई ऊर्जा व ताकत से भर उठते हैं।

**शर्मा जी :** ईश्वर भी क्या कलाकर है ! सब कुछ तराशा हुआ, बेहद खूबसूरत

**डेनियल साहब :** सचमुच जब तक बैंक में रहा बस सारा समय बैंक के काम में ही लगा रहा। अब मजा आ रहा है जीने का।

**सिंह साहब :** पुलिस की नौकरी भी, क्या यार ! जब देखो भागते रहो। अब तो दुनिया अलग ही रंग में नजर आ रही है।

*(घूमने व कसरत के बाद सभी बैठते हैं)*

**गुप्ता जी :** सुबह–शाम तो सबके साथ पार्क में घूमकर, अखबार तथा किताब आदि पढ़कर बीत जाता है मगर यार ! दिन तो काटे नहीं कटता। दोपहर बड़ी मुश्किल होती है। *(सभी समर्थन करते हैं)*

**सभी एक साथ :** अरे भाई! रिटायर्ड हो गये। अब बुढ़ापे में तो ये झेलना ही पड़ेगा।

**गुप्ता जी :** खाली नहीं बैठा जाता। दिन जालिम हो जाता है। आओ, कुछ ऐसा करें ताकि जीने का मजा आ जाये।

**शर्मा जी :** गुप्ता जी ! क्या सारी जिंदगी पैसों के पीछे हाथ धोकर पड़े रहोगे ? अब तो आराम करो।

**सिंह साहब :** अरे यार शर्मा ! बात तो गुप्ता जी ठीक कह रहे हैं। दिन भर सोया भी नहीं जाता।

**सरदार जी :** मुझे तो प्राइवेट प्रैक्टिस शुरू कर देनी चाहिए।

**डेनियल साहब :** हम सबको अच्छी पेंशन मिल रही है। अब क्या धन ही कमाते रहेंगे ? गॉड से प्रे करेंगे, सब सुखी रहें।

**गुप्ता जी :** मैं भी तो यही कह रहा हूं। अच्छी पेंशन है, हमारे बच्चे अपने पैरों पर खड़े हैं, अपने काम के हिसाब से सब अलग–अलग जगह बस गये। अभी तक सांसारिक भगदौड़ में जी रहे थे। अब थोड़ा मन के लिए भी जी लें और मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची प्रार्थना व सेवा है।

**सिंह साहब :** तो यार ! आओ खाएं, पीएं और मौज करें।

**सरदार जी :** और अस्पताल में बिस्तर लगवा लें। अरे यार! संयम नहीं रखेंगे तो बेमौत मारे जाएंगे।

**गुप्ता जी :** मेरे कहने का अर्थ है, अब हमारी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी हो गई हैं। अगर हम इसी में डूबे रहे तो कभी भी ये नमक तेल का खेल पूरा ही नहीं होगा ?

*(सभी ध्यान से सुनते हैं)*

**गुप्ता जी :** मैं चाहता हूं कि क्यों न हम पेंशन का अपनी जरूरत जितना पैसा अपने पास रखकर बाकी जमा करें।

**सिंह साहब :** तो क्या यार! हम फेंक देते हैं ?

**गुप्ता जी :** मेरे कहने का मतलब है, हम सब बचे हुए पैसे एक साथ जमा कर समाज के अंधेरों में भटकते लोगों को रौशनी देने में लगाएं।

**सिंह साहब :** *(फिर मजाक में)* इतने पैसों से तो इतनी टॉर्च आ जायेगी कि मौहल्ले के रौशन घर भी जगमगा उठेंगे।

**डेनियल साहब :** सिंह साहब ! कभी तो सीरियस भी हो जाया करो, यार। हां, गुप्ता जी, कहो। क्या कहना चाहते हो ?

**गुप्ता जी :** मेरे कहने का अर्थ है कि हर और अज्ञानता का अंधेरा है। अशिक्षा, गरीबी, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, धार्मिक कट्टरता और न जाने कैसे–कैसे अंधरे। उम्र के इस पड़ाव में हम कुछ ऐसा करें, जिससे हमें जीवन का आनंद मिले और दूसरों का जीवन।

**शर्मा जी :** बात तो आपकी बिलकुल ठीक है। आपने कुछ सोचा है क्या ? ये कैसे संभव होगा ?

**सरदार जी :** एन.जी.ओ. बनाकर।

**सिंह साहब :** चलो, किसी संस्था से जुड़ जाते हैं।

**डेनियल साहब :** क्यों न, अपनी अलग संस्था बनाएं और उसे अपने अनुसार सर्वश्रेष्ठ बनाएं।

## (दूसरा दृश्य)

*(धूप चढ़ने लगती है। सभी शाम को नए विचार के साथ पुनः मिलने के वादे के साथ अपने–अपने घर चले जाते हैं। सांय छह बजे का समय, सभी पार्क में बालाश्रम, अनाथालय, नारी निकेतन, आपदा सेवा केन्द्र, प्रौढ शिक्षा केन्द्र आदि पर विचार करते हैं)*

**गुप्ता जी :** मेरे अनुसार हमें पी.जी. (पेइंग गेस्ट) बनाना चाहिए। हमारे शहर में खेल, चिकित्सा, शैक्षिक तीन–तीन विश्व विद्यालय हैं। दूर–दूर से छात्र पढ़ने आते हैं। हम भी पांचों अलग–अलग क्षेत्र से जुड़े हैं। अपने युवाओं की जिज्ञासा और भटकाव दोनों संभाल सकते हैं। हम इससे एक पंथ कई काज सिद्ध कर सकते हैं।

**शर्मा जी :** वो कैसे ?

**गुप्ता जी :** देखो, हमें अपने काम से राजनैतिक शक्ति, सम्मान या धनलाभ तो चाहिए नहीं। हमारा प्रयास तो आत्मिक संतोष के लिए है। हम पी.जी की फीस मात्र उसकी सुविधाओं पर होने वाले खर्च जितनी ही रखेंगे।

**सरदार जी :** इस पी.जी. में भोजन, रख–रखाव, संस्कार ज्ञान, आदि व्यवस्था में अपनी–अपनी श्रीमती जी को भी साथ ले सकते हैं।

**गुप्ता जी :** हां, वास्तव में पी.जी. की अंदरूनी व्यवस्था हमारी नारी शक्ति ही देखेगी। इन सबका अनुभव ही इसे निखारेगा। हम तो अपने पास रहने वाले बच्चों से उनके क्षेत्र की समस्याओं को जानकर अपनी शक्ति और समझ के अनुसार हल करने की कोशिश करेंगे।

**शर्मा जी :** वाह ! इससे तो हमें सबसे जुड़ने व समझने का मौका मिलेगा।

**गुप्ता जी :** ठीक। एक और बात ! आजकल विदेशी संस्कृति के कारण हमारे युवा अपनी संस्कृति, नैतिकता, मर्यादा, संस्कारों आदि से दूर हो रहे हैं, खानपान दूषित हो रहा है। हमारे स्वभाव से संयम दूर होता जा रहा

है। हमारे डॉ. साहब युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए धीरे–धीरे संयम, अनुशासन और सही खानपान के फायदे समझाकर संयमित जीवन की आदत डालेंगे।

**डेनियल साहब** : तुम ठीक कहते हो। शरीर स्वस्थ हो तो मन भी मजबूत रहता है और मैं बच्चों को अच्छी उच्च शिक्षा के लिए बैंक व सरकार की लोन सुविधा के बारे में बताकर सहायता करूंगा।

**गुप्ता जी** : मैं और शर्मा जी उनकी पढ़ाई में सहायता करेंगे तथा विदेशों की ओर होते बुद्धि पलायन को रोकेंगे। उनकी शक्ति, ज्ञान व जोश को देशहित में लगाने का प्रयास करेंगे।

**सिंह साहब** : सुरक्षा व कानून संबंधी नियमों को समझाकर उन्हें असामाजिक तत्वों के हाथों में पड़ने से बचाऊंगा तथा उनके जोश को होश का पथ दिखाऊंगा।

## (तीसरा दृश्य)

*(सभी पक्षों पर विचार के बाद 'सर्वोदय आवास केन्द्र' के नाम से पी.जी खोलते हैं। शीघ्र ही अनेक विद्यार्थी वहां आकर रहने लगे। सभी मिलकर सपनों के अनुसार स्वस्थ, अनुशासित, संयमित, देशप्रेमी विद्वान और विदुषियां तैयार करने लगे जो दूर–दूर तक 'सर्वोदय' का नाम रोशन करने लगे। एक शाम सभी एक साथ)*

**सरदार जी** : देखो, कितना अच्छा लग रहा है। हमारे बच्चे तो काम के कारण दूर जाकर बस गये मगर'सर्वोदय ने हमें कितने सारे बेटे–बेटियां दे दीं। हमें जीवन में इनसे प्यार, मान, रौनक सब मिल गये।

**शर्मा जी** : सचमुच, जीने का लक्ष्य और आनंद मिल रहा है। इन बच्चों के कारण सारा विश्व, रंग–बिरंगी लोक–संस्कृति, उत्सव हमारे आसपास जिंदा हो उठे हैं।

**सिंह साहब** : दूर–दराज के अनजाने क्षेत्र भी अब घर के आंगन से लगते हैं। इन बच्चों से वहां की जरूरतों व समस्याओं को जाना तथा उन्हें हल करने से उस क्षेत्र को अच्छे से समझने का अवसर, मान, प्यार व सच्ची शांति मिली।

**डेनियल साहब** : बैंक में रहते हुए तो सीट का काम किया पर अब जैसा संतोष नहीं था। आज देश के भविष्य– निर्माण का कार्य संतुष्टि देता है।

**गुप्ता जी** : ठीक कहते हो, डेनियल साहब! कल तक का शिक्षादान उदर तृप्त करता था, आज का ज्ञानदान तो रोम–रोम तृप्त कर रहा है। युवा राष्ट्र रूपी शरीर का पेट है। जैसे पेट स्वस्थ तो संपूर्ण शरीर स्वस्थ और मन मजबूत होता है, वैसे ही उन्नत उदार विचारधारा न स्वच्छ दृष्टि वाले, अनुशासित, संयमी नवयुवक राष्ट्र की सच्ची शक्ति होते हैं। ऐसी ही युवा शक्ति का निर्माण हम सर्वोदय में कर रहे हैं।

*(सर्वोदय के स्थापना दिवस का उत्सव, सभी नए–पुराने छात्र)*

**पुराना छात्र** : आज मैं 'सर्वोदय आवास केन्द्र' के पांचों संस्थापकों तथा माताओं का हृदय से आभारी हूं तथा नमन करता हूं। हमारे घरों से दूर यह एक ऐसा घर है जहां हमें ममता, प्यार, संस्कार और मार्गदर्शन सब मिले। यहां हमें सच्चा मानव व देशवासी बनने का सुअवसर मिला। इन्होंने ही सिखाया कि सेवा तथा अपरिग्रह का आनंद सबसे ऊंचा होता है। हमारी माताओं ने सात्विक व संयमी जीवन के सुख को समझाकर सुरक्षित जीवन की चाबी सौंप दी। इनके पसीने व समर्पण से संचित सर्वोदय वो बरगद का पेड़ है जिसकी जड़ें देश–देशांतर तक फैली हैं। इसने हमें कर्तव्य अधिकार संतुलन का ज्ञान व अन्तर्दृष्टि दी तथा हमारा जीवन पथ आलोकित किया। आज सर्वोदय केवल छत नहीं बल्कि प्ररेणा–पुंज है। यहां हमने संयम के महत्व को समझा। मानव जीवन में संयम नदी के तट के समान होता है। जिस प्रकार नदी तटों में बंधकर सौंदर्य व जीवनदान देती है उसी प्रकार संयमित जीवन संतुष्ट, मर्यादित, प्रतिष्ठित एवं गुणग्राही होता है। जब नदी के तट–बंधन टूटते हैं तो वह दूषित कर सौंदर्य व पवित्रता खो देती है, तबाही लाती है, विनाशक बन जाती है,

उसी प्रकार संयम छूटने पर जीवन कंलकित, कमजोर, दिशाहीन और समाज–प्रदूषक बन जाता है। निःसंदेह संयम जीवन का श्रेष्ठतम गुण है। हमने यहां, जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के अलग–अलग रंग को एकता व संयम के गुलदस्ते में अनूठे रंगों से सजते देखा है। हम सदा इसी संयममयी एकत्व भाव के साथ जीवन–पथ पर बढ़ेंगे और 'सर्वोदय' के संस्कारों के सपनों को साकार करेंगे।

*(सभी छात्र एक साथ सर्वोदय संस्थापकों को नमन करते हैं)*

**(पर्दा गिरता है)**

डॉ. भामा अग्रवाल
भिवानी पब्लिक स्कूल
सैक्टर–14, भिवानी हरियाणा

# घरौंदा

## पात्र–परिचय

**सुगंधा – बहू**
**रमा – सुगंधा की सहेली**
**सहेलियां – सुगंधा की अन्य सहेलियां**
**मां – शोभा (सुगंधा की मां)**
**श्री वर्मा – सुगंधा के पिता**
**राजेश – सुगंधा का पति**
**श्री चतुर्वेदी – राजेश के पिता**

## (पहला दृश्य)

*(फाटक से आवाज देती हुई रमा और घर के बैठक में बैठी, पुस्तक पढ़ती हुई सुगंधा)*

**रमा :** सुगंधा, अरे ! यार कॉलेज नहीं जाना है क्या।
**सुगंधा :** *(आवाज देते हुए, रमा से बातें करते हुए)* हां यार रमा मैं तुम्हारा ही तो इंतजार कर रही थी। मां, मां..... .....मैं
कॉलेज जा रही हूं।
**सहेलियां :** *(आपस में बातें करते हुए एक सहेली बोल पड़ी)* मुझे तो कल एक लड़का देखने आया था और पापा कह रहे थे उसका गाड़ियों का बहुत बड़ा शो–रूम है और घर भी बहुत शानदार है।
**सुगंधा :** सही में, फिर तो तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए।
**सहेलियां :** हां, हां, बिल्कुल। सुगंधा बिल्कुल सही कह रही है।
**सुगंधा :** मैं भी चाहती हूं कि मेरी शादी हो बशर्त यही कि लड़का हृष्ट पुष्ट हो, सुंदर हो, अच्छा हो, कमाने वाला हो और बिल्कुल रानी की तरह पूरे, परिवार पर राज करूंगी।
**सहेलियां :** हां, हां,! तुझे तो कोई राजकुमार ही लेने आएगा।

## (दूसरा दृश्य)

*(घर की बैठक, मेहमानों का आगमन)*

**वर्मा जी :** नमस्ते ! आइए, आइए । आपका स्वागत है। तशरीफ रखिये। घर ढूंढने में आपको परेशानी तो नहीं हुई न।
**चतुर्वेदी जी :** जी नहीं। घर का पता तो बिल्कुल आसान था।
**वर्मा जी :** इनसे मिलिये, ये मेरी धर्म पत्नी शोभा।
**शोभा :** नमस्ते, आपका स्वागत है।

**चतुर्वेदी जी** : नमस्ते, ये मेरी धर्म पत्नी सुमति और ये मेरा बेटा राजेश जो कि सॉफ्टवेअर इंजीनियर है। आपकी बेटी को बुलाइये न।
**वर्मा जी** : जी हां ! सुगंधा आओ बेटी, आओ। *(सबके चरण स्पर्श करते हुए)* बेटी ये श्री चतुर्वेदी जी है। ये उनकी पत्नी और इनका बेटा राजेश।

*(चाय नाश्ता करते हुए)*

**चतुर्वेदी जी** : बेटा राजेश, सुगंधा से बातें करो।
**राजेश** : *(दोनों आपस में बातें करते हुए)* तुम्हारा क्या शुरू है ?
**सुगंधा** : अभी मैंने एम.बी.ए.की परीक्षा दी है। और आप क्या करते हो ?
**राजेश** : 'सैम' कम्पनी जो कि इंटरनेशनल कम्पनी है, उसमें सॉफ्टवेअर इंजीनियर हूं। पिछले दो सालों से मैं लॉस एंजेलिस में ही था। पिता जी के कहने पर भारत लौटा हूं। हमें अपने देश के प्रति प्रेमभाव रखना चाहिए।
**सुगंधा** : आपके विचार तो बड़े ही नेक हैं। अब क्या भारत में ही रहने का इरादा है। उसके प्रति अपने कर्तव्य को निभाने से भी ज्यादा अपने परिवार के प्रति कर्तव्य है, जिम्मेदारियां हैं, समझौता है।
**मां** : हां, बेटी तुम बिल्कुल सही कह रही हो।
**सुगंधा** : मां, परिवार वाले चाहते हैं कि मैं परिवार के अन्य सदस्यों से पहले जागूं, हमेशा मुझे फिल्मी बहू की तरह समझते हैं जो कि परिवार के सभी लोगों की समय दर समय सेवा करती रहूं।
**मां** : बेटी, ऐसी अपेक्षाएं स्वाभाविक हैं। यह तो विवाह के बाद हर लड़की का कर्तव्य बनता है। बेटी तुम खुश रहोगी जब तुम सदा दूसरों की सेवा करोगी, परिवार के प्रति अपनत्व की भावना मन में जागृत करोगी। तभी तो तुम सबके मन में अपने लिए प्यार की भावना जगा पाओगी।
**सुगंधा** : मां, आज तो तुमने सही में मेरी आंखें खोल दीं। मुझे आज पता चला तुम्हारी दूसरों के प्रति सहानुभूति समय दर समय अपनी इच्छाओं को त्यागना व दूसरों के प्रति जीना, इन्हीं भावनाओं के कारण मां, तुमने अपने परिवार के सदस्यों को बांधे रखा, कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी।
**मां** : हां, बेटी तुम्हें मम्मी–पापा द्वारा दिए हुए संस्कारों व नैतिक मूल्यों को समझना होगा। अपने जीवन में उतारना होगा व अपने परिवार को सुखी परिवार बनाना होगा। सभी की अपेक्षाएं पूर्ण करनी होंगी।
**सुगंधा** : हां मां सही में जैसे–जैसे समय बीतेगा मैं भी अपने परिवार से प्यार करूंगी। परिवार के सभी सदस्यों को अपना समझूंगी और वही त्याग और समझौते की भावनाओं को अपनाऊंगी।
**राजेश** : सोचा तो यही है कि यहां रहकर माता–पिता की सेवा भी होगी और अपने देश के लिए कार्य भी करूंगा।

## (तीसरा दृश्य)

*(दोनों परिवारों के बीच बातचीत होने के बाद रिश्ता तय होता है। धूमधाम से विवाह सम्पन्न होता है। विवाह के एक महीने पश्चात् मोबाइल पर मां और सुगंधा की बातें)*

**मां** : बैटी कैसी हो ?
**सुगंधा** : बिल्कुल ठीक, पर मां।
**मां** : क्या हुआ ? बेटी।
**सुगंधा** : मां प्रत्येक लड़की की तरह मैं भी अपने विवाह को लेकर बड़ी उत्सुक थी। यही लगता था कि विवाह के पश्चात् अपने राजकुमार जैसे पति के साथ रहना और उससे बहुत सारी बातें करना तथा घूमना– फिरना आदि । इससे ज्यादा मैंने कुछ नहीं सोचा था।

**मां :** *(चिंतित)* तो क्या हुआ बेटी, कुछ कहा–सुनी हो गई है क्या ?
**सुगंधा :** नहीं, मां मैं आपसे मिलना चाहती हूं, मैं हर बात फोन पर नहीं बता सकती।
*(कुछ दिनों पश्चात् सुगंधा मां के घर पति के साथ। मां और सुगंधा की बातचीत रसोई घर में और पति राजेश बैठक में पिताजी के साथ)*
**मां :** कैसे आना हुआ बेटी।
**सुगंधा :** मां, विवाह होने के पश्चात् आज मुझे यह अहसास हो रहा है कि विवाह अर्थात् केवल खुशियां ही खुशियां नहीं बल्कि अपने पति के साथ रहते हुए....।
**राजेश :** क्यों सुगंधा घर नहीं चलना।
**सुगंधा :** हां, जी मैं अभी आयी।
**मां–पिता** *(आशीर्वाद देते हुए)* बेटा ऐसे ही आते रहा करो अच्छा लगता है।
**राजेश :** मां और तुम्हारी तो बहुत बातें चल रही थीं।
**सुगंधा :** हां आज सही मायने में मां ने परिवार का अर्थ समझाया।

*(कुछ दिनों बाद फोन पर )*

**मां :** बेटी कैसी हो ? लगता है मां को भूल ही गई हो।
**सुगंधा :** नहीं मां मैं अपने परिवार में इतनी ज्यादा घुलमिल गई हूं कि कुछ पता ही नहीं चलता और उनका मेरे प्रति प्यार व दुलार तो शब्दों में बयान नहीं कर सकती।

**मां :** *बेटी तुम्हें कुछ पंक्तियां सुनाती हूं–*
*बेटियां घर का संगीत है।*
*जब वे बिना रुके बोलती हैं*
*तो सब कहते हैं चुप रहो।*
*जब वे शांत रहती हैं*
*तो मां कहती है तबियत ठीक है न,*
*पापा कहते हैं आज घर में खामोशी क्यों है ?*
*भाई कहता है नाराज हो क्या ?*
*और जब उसका विवाह होता हैं तो सब कहते हैं*
*''घर की रौनक ही चली गई।''*

बेटी वह रौनक इस घर से दूसरे के घर रौनक बढ़ाना
**सुगंधा :** मां.....। (रोते हुए....)
**मां :** अपना खयाल रखना।

**(पर्दा गिरता है)**

ज्योति संजय बालापूरे
द स्वामी नारायण स्कूल,
245, पूर्व वर्धमान नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

# वाल्मीकि

रत्नाकर : डाकू
पत्नी : रत्नाकर की पत्नी
लड़का : रत्नाकर का बेटा
लड़की : रत्नाकर की बेटी
पिता : रत्नाकर का पिता
माता : रत्नाकर की मां
महिला : राहगीर नं.1
महिला : राहगीर नं.2
पुरुष : राहगीर नं.3
पुरुष : राहगीर नं.4
महिला : राहगीर नं.5
महिला : राहगीर नं.6
बच्चा : महिला राहगीर का बेटा
सप्तऋषि : 1
सप्तऋषि : 2
सप्तऋषि : 3
सप्तऋषि : 4
सप्तऋषि : 5
सप्तऋषि : 6
सप्तऋषि : 7

## (पहला दृश्य)

*(रत्नाकर अति खूंखार डाकू है। दस्युवृत्ति ही उसकी आजीविका का साधन है। वह जंगल के रास्ते से आने जाने वाले राहगीरों से लूटपाट करता है। राहगीरों को मार देता है। पूरे जंगली इलाके में रत्नाकर डाकू का भयंकर आतंक है)*

**दोहा–** अति भयंकर विपिन में, रत्नाकर दस्यु एक।
परिजन उदर भरण हित, मारे पथिक अनेक।

**रत्नाकर :** आ.....हा.....हा.....हा.....हूं...हा.....हा.....हा।
*(अट्टहास करता हुआ)* इस जंगल में जो भी आता है, वह रत्नाकर को भेंट चढ़ाकर जाता है, या फिर स्वयं उसकी भेंट चढ़ जाता है।
*(कुछ राहगीर इस रास्ते निकलना चाहते हैं। वे आपस में रत्नाकर के आतंक की चर्चा करते हैं)*

**महिला राहगीर 1:** इस रास्ते पर जंगल में रत्नाकर नाम का खूंखार डाकू रहता है। हमें इस रास्ते से नहीं चलना चाहिए।
**महिला राहगीर 2:** हां भैया वह हमें मार देगा।
**पुरुष राहगीर 3 :** बात तो बिल्कुल ठीक है, हमें इस रास्ते से नहीं चलना चाहिए।

**पुरुष राहगीर 4:** लेकिन कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। चलना तो इसी रास्ते पर पड़ेगा।
**पुरुष राहगीर 3 :** मैं तो शादी के लिए गहने बनवाकर लाया हूं। वह मेरे गहने छीन लेगा, तो मेरा घर ही बरबाद हो जायेगा।
**महिला राहगीर 5 :** मेरे पास भी बहुत से गहने हैं, मेहंगे कपड़े हैं। हम तो पूरी तरह बरबाद हो जायेंगे भैया।
**महिला राहगीर 6 :** मेरे साथ तो छोटा बच्चा भी है। अब क्या करें। कोई उपाय तो बताओ।
**पुरुष राहगीर 4 :** चलो सब एक साथ मिलकर चलते हैं। आओ.....*(सभी राहगीर जंगल के बीच पहुंच जाते हैं। रत्नाकर का अट्टहास सुनाई पड़ता है)*
**रत्नाकर :** आ.....हा.....हा.....हूं.....हा.....हा.....हा.....हा.....
**महिला राहगीर 1 :** देखो ! उसकी आवाजें आ रही हैं।
**महिला राहगीर 2:** अब क्या होगा ! कैसे बचेंगे।
*(रत्नाकर जंगल से निकलकर राहगीरों के सामने आ जाता हैं। उन्हें डराता है, धमकाता है)*
**रत्नाकर :** आ.....हा....हा.....हूं.....हा.....हा.....हा । इस जंगल से जो भी जाता है, रत्नाकर को भेंट चढ़ाकर जाता है। या फिर स्वयं उसकी भेंट चढ़ जाता है।
**राहगीर 4 :** हमें मत लूटो भैया ! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।
**रत्नाकर :** यह रत्नाकर का इलाका है। लाओ।
**महिला राहगीर 6 :** दया करो भैया ! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।
**रत्नाकर :** कुछ भी हो, तुम गहने मुझे दे दो वरना रत्नाकर का परसा सिर पर चल जायेगा।
*(रत्नाकर राहगीरों से छीना–झपटी करता है, उन्हें मारता है, राहगीर डरते हुए अपने गहने उतार कर रत्नाकर को दे देते हैं। एक राहगीर भागने की कोशिश करता है। रत्नाकर उसे मार देता है। उसके रुपये–गहने छीन लेता है )*

## (दूसरा दृश्य)

*(रत्नाकर की दिनचर्या हिंसा, मारकाट, लूटपाट से युक्त है। उसकी आजीविका इसी से चलती है। एक दिन सप्तऋषि उस रास्ते से गुजरते हैं। उन्हें रत्नाकर के दस्यु साम्राज्य का पता है फिर भी वे इसी रास्ते पर जाते हैं )*

**दोहा –** त्राहि–त्राहि चहुं ओर हुई छाया अति आतंक
आपने दस्यु राज रत्नाकर फिरै निशंक।
**दोहा –** आए हिंसा युत विपिन में, सप्त ऋषि निजकाज।
साक्षात् यमराज सम, जहां रत्नाकर राज।

**सप्तऋषि 1 :** देखो ! इस पथ पर रत्नाकर नामक कुख्यात दस्यु है। वह पथिकों को लूट लेता है।
**सप्तऋषि 2 :** हां ! वह हमें भी लूट सकता है।
**सप्तऋषि 3 :** यह तो ठीक है लेकिन वह हमारा लूटेगा क्या ?
**सप्तऋषि 4 :** लूटेगा नहीं तो मार तो सकता है।
**सप्तऋषि 5 :** इस अरण्य में उसका भयंकर आतंक है।
**सप्तऋषि 6 :** हां, हमें सावधानीपूर्वक चलना चाहिए।
**सप्तऋषि 7 :** तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। इस पथ पर चलने का हमारा विशेष प्रयोजन है।
**सप्तऋषि 1–6 :** *(एक साथ कहते)* प्रयोजन ! कैसा प्रयोजन!
**सप्तऋषि 7 :** समय आने पर सब पता चल जायेगा। इस समय तुम सब मेरा अनुकरण करो ! मैं सब प्रकार की स्थिति से अवगत हूं।
*(सप्तऋषि भजन की धुन के साथ आगे अरण्य–पथ पर बढ़ते हैं)*
**भजन–** भज मन नारायण ! नारायण ! नारायण!
*(तभी रत्नाकर का अट्टहास सुनाई पड़ता है)*
**रत्नाकर :** हा.....हा.....हा .....हूं.....हा.....हा.....हा।
**सप्तऋषि 1 :** देखो! उस दस्यु की आवाजें आ रही हैं। शायद वह इस तरफ ही आ रहा है।
*(रत्नाकर अट्टहास करता हुआ सामने आ जाता है और अपने हथियार से सप्तऋषियों को डराता हुआ कहता है)*
**रत्नाकर :** हे साधुओ ! तुम अपने डण्ड और कमंडल मुझे दे दो। यहां रत्नाकर का साम्राज्य है।
**सप्तऋषि 7 :** तुम इन डण्ड–कमंडलों का क्या करोगे दस्युराज ? तुम हमसे लूट–खसौट क्यों करना चाहते हो ?
**रत्नाकर :** तुम चाहे ऋषि हो ! मुनि हो, या साधु हो! इससे मुझे कोई मतलब नहीं। इस रास्ते पर जो भी आता है, रत्नाकर को भेट चढ़ाकर जाता है या फिर स्वयं उसकी भेंट चढ़ जाता है।
**सप्तऋषि 7 :** यह उचित नहीं है दस्युराज रत्नाकर! अच्छा यह बताओ तुम यह पाप क्यों कर रहे हो ?
**रत्नाकर :** क्या ! पाप ! कौन सा पाप ! यह पाप क्या होता है ? मैं पाप–वाप कुछ नहीं जानता। मेरे परिवार के गुजर बसर का साधन यही है। इसी लूटपाट से मेरे परिवार का पेट भरता है।
**सप्तऋषि 7 :** देखो भाई! इस तरह निरीह प्राणियों को सताना और राहगीरों को मारना पाप है। पापी व्यक्ति को नरक भोगना पड़ता है।
**रत्नाकर :** लेकिन मेरे परिवार के पालन–पोषण का साधन भी तो यही है।
**सप्तऋषि 7 :** तुम्हारे परिवार में कौन–कौन हैं ?
**रत्नाकर :** मेरे बूढ़े बीमार माता–पिता, पत्नी और बच्चे सब हैं।
**सप्तऋषि 7 :** तो तुम कल उनसे पूछकर आना कि वे सब केवल तुम्हारी कमाई में ही भागीदार हैं या तुम्हारे पापों में भी हिस्सेदार हैं।
**रत्नाकर :** हूं! तो तुम मुझे बेवकूफ बनाकर भागना चाहते हो।
**सप्तऋषि 7 :** नहीं। हम तुम्हारा कल्याण चाहते हैं रत्नाकर ! हम कल भी तुम्हें इसी स्थान पर मिलेंगे।
**रत्नाकर :** ठीक है। मैं कल यह बात जरूर पूछकर आऊंगा।
**दोहा –** सप्तऋषि की बात सुन, रत्नाकर हुआ उदास।
उस दिन खाली हाथ वह, पहुंचा परिजन पास।

## (तीसरा दृश्य)

*(रत्नाकर उस दिन खाली हाथ घर पहुंचा। जब पत्नी ने खाली हाथ देखा, रत्नाकर के चेहरे पर उदासी देखी तो पत्नी ने पूछा)*

**पत्नी** : यह क्या ! आज खाली हाथ कैसे लौटऊं आए। आज कुछ भी लेकर क्यों नहीं आये। आज कुछ भी लेकर क्यों नहीं आये ? अब मैं बच्चों को क्या खिलाऊंगी ?

**रत्नाकर** : तुम सब पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।

**पत्नी** : कौन से प्रश्न ? कैसे प्रश्न ?

**रत्नाकर** : यह बताओ ! मैं पाप करके, परिवार के लिए जो कुछ लाता हूं। लोगों को लूटता हूं। उनको मारता हूं। तुम उस पाप में भी भागीदार हो या केवल खाने में ही भागीदार हो।

**पत्नी** : पाप तो जो करता है, उसे ही भोगना पड़ता है। हम तो केवल आपकी कमाई में ही भागीदार हैं।

**रत्नाकर** : *(पिता के पास जाकर)* पिताजी ! यह बताओ कि आप मेरी कामाई में ही भागीदार हो या फिर मेरे पापों में भी भागीदार हो।

**पिता** : पाप तो अपराधी को ही भोगना पड़ता है बेटा ! यह संसार तो करम प्रधान है।

**रत्नाकर** : *(मां के पास जाकर)* अच्छा मां! तुम बताओ।

**मां** : पाप का फल तो पापी को ही भोगना पडै है बेटा। राजा भी सजा उसी को देवे है जो अपराधी होवे है। पूरे घरवालों को सजा नहीं मिलती है बेटा।

**रत्नाकर** : तो पाप का फल केवल मुझे ही भोगना है।

*(बच्चों के पास जाकर)*

**रत्नाकर** : बेटा, यह बताओ। तुम मेरी लाई हुई चीजें खाकर ही मजे करते हो या मेरे पापों के बारे में जानते हो।

**बेटा** : चीजें खाने में बहुत मजा आता है पिताजी ! पापों के बारे में हम कुछ नहीं जानते।

**बेटी** : पापों को घर मत लाओ पिताजी! हमारे लिए तो केवल चीजें लाओ, चीजें। बताओ, बताओ ! आज क्या लाए हो हमारे लिए ?

**रत्नाकर** : *(स्वयं से)* हूं, तो यह सब स्वारथ का संसार है।

*(रत्नाकर के मन में विरक्ति की भावना आ जाती है। वह उसी वक्त घर से निकल पड़ता है। उसके मन में संसार के प्रति अनेक विचार आते हैं)*

**भजन** : साधो ! स्वारथ का संसार।
जब लगि पैसा रहे गांठ में, तब लगि ताको यार।।
खाने में सब भाग बटावै, भाग न बांटे कोय।
आप–आप कह बाप बनावै, पाप न बांटे कोय।।
यह संसार सकल जग झूठा, कर्मन का आधार।
साधो स्वारथ का संसार। साधो.....

## (चौथा दृश्य)

*(रत्नाकर उदासी की अवस्था में जंगल पहुंचता है। वहां पुनः सप्तऋषि मिलते हैं। उससे प्रश्न पूछते हैं)*

**सप्तऋषि 7** : बताओ रत्नाकर ! क्या कहा तुम्हारे परिवारजनों ने।

**रत्नाकर** : वे सब तो केवल मेरी कमाई में ही भागीदारी हैं ऋषिवर, मेरे पापों का फल तो मुझे ही भोगना पडेगा।

**सप्तऋषि 7** : तो फिर यह पाप कर्म कर रहे हो ? भाई। राम नाम लो और संसार सागर से पार हो जाओ।

*(रत्नाकर को राम–राम कहना भी नहीं आता। वह 'राम–राम' को मरा–मरा कहता है)*

**रत्नाकर** : क्या! मरा–मरा ?

**सप्तऋषि** : नहीं रत्नाकर। राम–राम, राम–राम, राम–राम।

**रत्नाकर** : मरा–मरा मरा–मरा। मुझे तो भगवान का नाम लेना भी नहीं आता ऋषिजन !

**सप्तऋषि 7** : कोई बात नहीं रत्नाकर ! प्रयास करके देखो। राम का नाम हर देश, हर काल में मंगल करने वाला है।

**चौपाई** : ''भाय कुभाय अनख आलसहुं।
नाप जपत मंगल दिसि दसहुं।।
नाम लेना आए, या न आए। तुम जिस तरह से भी राम का नाम लोगे, तुम्हारा कल्याण ही होगा। राम का नाम दशों दिशाओं में मंगल करने वाला है।

**रत्नाकर** : मैं आज से भगवान के नाम की अटल साधना करूंगा, ऋषिवर।

*(सप्तऋषि रत्नाकर को आशीर्वाद देते हैं। वह उसी स्थान पर समाधि लगाकर बैठ जाता है। राम–राम के स्थान पर 'मरा–मरा का जाप करने लगता है)*

## (पंचवां दृश्य)

*(कुछ वर्षों बाद सप्तऋषि मंडली उसी रास्ते से गुजरती है। उन्हें राम–राम की ध्वनि सुनाई देती है। वे आश्चर्यपूर्वक वार्तालाप करते हैं)*

**दोहा** – आए वर्षों बाद पुनि, सप्तऋषि निज काम।
जहां रत्नाकर जप रहा, अटल राम का ना।।

**सप्तऋषि 7** : ऋषिजनों। यह वही रत्नाकर डाकू है जो अभी तक समाधि लगाकर राम राम की अटल साधना कर रहा है।

**सप्तऋषि 6** : अरे! इसके शरीर पर तो वाल्मीकि, चीटियों और कीड़े–मकौड़ों ने घर बना लिया है।

**सप्तऋषि 5** : बड़ा आश्चर्य है ! यह तो अब तक अटल–साधना कर रहा है।

*(सभी ऋषि उसके शरीर से धूल, कीड़े, वाल्मीकि (दीमक) चीटियों को हटाते हैं। रत्नाकर की समाधि भंग होती है। वह उठकर ऋषिवर के चरण स्पर्श करता है)*

**रत्नाकर** : आपकी कृपा से मुझे ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ है, ऋषिवर।

**सप्तऋषि 7** : तुम अब 'ब्रह्म–ऋषि' हो गये हो रत्नाकर। जग में तुम्हारे जैसी तपस्या कोई नहीं कर सकता। देखो तुम्हारे शरीर पर वाल्मीकि (दीमक) ने घर बना लिया है। आज से तुम रत्नाकर नहीं 'वाल्मीकि' के नाम से जाने जाओगे।

**रत्नाकर** : जैसी आपकी इच्छा ऋषिवर।

**सप्तऋषि 7** : और हां सुनो ! त्रेतायुग में भगवान विष्णु इस मृत्युलोक में राम के रूप में अवतार लेंगे। उनके चरित्र को काव्य बद्ध करने की जिम्मेदारी तुम्हें निभानी है।

**रत्नाकर** : जो आज्ञा गुरुवर !

**सप्तऋषि 7** : 'आदि कवि–वाल्मीकि' अब तुम आदि कवि के रूप में जाने जाओगे।

**शेषऋषि** : *(एक साथ)* आपका प्रयोजन अब समझ में आया ऋषि श्रेष्ठ।

**रत्नाकर** : *(चरण स्पर्श करते हुए) मुझे आशीर्वाद दीजिए गुरुवर, मैं अपने लक्ष्य को पूर्ण कर सकूं।*

**सप्तऋषि :**पूर्णकाम भव ! *(सभी एक साथ)*
**चौपाई–** उलटा नाम जपत जग जाना।
वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।।

**योगेश शर्मा**
विद्याश्रम पब्लिक स्कूल, नया नोहरा
बारां रोड, कोटा, राजस्थान

## हम साथ हैं तुम्हारे

**पात्र – परिचय**

**दादा जी – बाबूजी**

**दादी जी – अम्मा**

**बेटा – (बिट्टू)**

**बहू – मीना**

**बच्चे – अरुण व सोनम**

**नवविवाहिता जोड़ा**

**पति**

**पत्नी : (रीना)**

**हामिद : धर्मशाला में खाना बनाने वाला**

**सूत्रधार :** नमस्कार ! मैं उत्तराखण्ड– हां वही उत्तराखण्ड जो देव भूमि के नाम से भी प्रसिद्ध है। हां वहीं उत्तराखण्ड जिसे प्रकृति के कहर ने खण्ड–खण्ड कर दिया पर प्रकृति का इतना कहर देखने पर भी मैं उस दुखद घड़ी में अपना संयम कायम रख सका क्योंकि हमारी बुनियाद बहुत मजबूत है जो हमारी सभ्यता, हमारे नैतिक मूल्यों पर टिकी है जो चट्टान की तरह अटल है और यही शक्ति मुझे फिर से जीवन बहाल करने की प्रेरणा देती है।

### (पहला दृश्य)

*(धर्मशाला का एक कमरा)*

**नवविवाहिता जोड़ा :**

**पति :** देखो कितना सुहाना मौसम है और तुम्हारा साथ पाकर तो मैं धन्य हो गया।

**पत्नी :** मेरा तो जीवन ही सफल हो गया आपका साथ पाकर !

**पति :** हम भोलेनाथ की इस पावन भूमि पर यह वादा करते हैं कि हम कभी भी एक–दूसरे का साथ नहीं छोड़ेंगे।

**पति :** हमारा साथ कभी नहीं छूटेगा। वैसे भी कल हम केदारनाथ के दर्शन कर वापिस मुंबई की ओर रवाना हो जाएंगे और अपने नए जीवन की शुरूआत करेंगे।

*(धर्मशाला का दूसरा कमरा)*

**दादाजी :** अरे ओ बिट्टू की अम्मा, हमारे श्रवण कुमार ने तो हमारी इच्छा केदारनाथ के दर्शन की पूरी कर दी है। कल हम केदारनाथ के दर्शन कर लेंगे और हमारा जीवन सफल हो जायेगा।

**दादीजी :** हां ये तो है। चलो सो भी जाओ, भोर में भोलेबाबा के दर्शन को जाना है।

### (दूसरा दृश्य)

*(16 जून 2013 भोर का समय दादाजी–दादीजी दर्शन कर चुके थे और अभी केदारनाथ के प्रांगण में ही थे)*

**बेटा :** पिताजी, आपको भोलेबाबा के दर्शन ठीक से हो गये।

**दादीजी :** हां बेटा, मेरा जो जीवन ही सफल हो गया।
**बेटा :** सुनो मीना, कल से लगातार बारिश हो रही है और रास्ता भी ठीक नहीं है। ऐसा करते हैं कि आज यहीं रुक जाते हैं। इस मौसम में मां–बाबू जी को ले जाना मुश्किल होगा।
**पत्नी(मीना) :** जी आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं।
**बच्चे :** क्या मां आज हम यही रुकेंगे ? वाह ! कितनी सुन्दर जगह है। दिल्ली में तो कितनी गर्मी थी, यहां कितना अच्छा मौसम है। काश ! हम कुछ दिन यहां रुक पाते।

## (तीसरा दृश्य)

*(बच्चे प्रांगण में खेल रहे थे और वहीं वे नवविवाहिता जोड़े से मिलते हैं)*
**बच्चा *(लड़की)* :** आप अंकल कहां से आये हैं ?
**नवविवाहिता जोड़ा (पति) :** मुंबई से।
**दादी जी :** बच्चों कहां हो, इधर–उधर मत जाना।
**नवविवाहिता जोड़ा (पत्नी) :** मांजी, मेरा नाम रीना है, बच्चे मेरे पास हैं।
**दादी जी :** खुश रहो बेटी– दर्शन करने आई हो ?
**रीना :** जी मां जी ।
**दादी जी :** ये अच्छा किया तूने जो अपनी नई जिन्दगी की शुरुआत भोलेबाबा के दर्शन से की।
**सूत्रधार :** *(बच्चे खेलते हुए एक और व्यक्ति जिसका नाम हामिद है, उससे मिलते हैं जो उत्तराखण्ड की धर्मशाला में खाना बनाने का काम करता है)*
**बच्चा :** अंकल अंकल, आप यहां खाना बनाते हैं ?
**हामिद :** हां बेटा मैं धर्मशाला में खाना बनाता हूं।
**दादीजी :** बच्चों किससे बात कर रहे हो ?
**बच्चा :** अम्मा हामिद अंकल से। ये धर्मशाला जहां हम ठहरे हैं, वहां खाना बनाते हैं।
**दादी जी :** क्या नाम लिया तूने ?
**बच्ची :** हामिद।
**दादी जी :** चल दूर रह उससे। सबसे बात नहीं किया करते। राम–राम हमारा तो धर्म ही भ्रष्ट हो जाता। अच्छा हुआ कल हम में से किसी ने भी कल धर्मशाला में खाना नहीं खाया। बच्चों की जिद के कारण हम होटल में खाना खाने चले गये थे नहीं तो हमारा तो धर्म ही भ्रष्ट हो जाता।
**दादीजी :** क्या बुड़बुड़ा रही हो बिट्टू की अम्मा। अरे ये क्या कह रही हो। ये धर्म–वर्म नहीं होता। इनसानियत ही सबसे बड़ा धर्म होता है– ये हिन्दू–मुसलमान तो हम इंसानों ने बनाये हैं। ईश्वर ने तो सभी को इनसान बनाया है। कम से कम ईश्वर के दरबार में तो ऐसी बात मत कर।
**सूत्रधार :** तभी अचानक तेज भयंकर गर्जना हुई और प्रकृति का कहर टूटा। पानी का सैलाब उन सभी को बहा ले गया। बेटा, जो बाबूजी का हाथ पकड़े था, बाबूजी को बचाने में सफल हो गया)

**बेटा :** बाबूजी! हाथ मत छोड़ना, हाथ मत छोड़ना बाबूजी। *(उधर बहू–अम्मा का हाथ पकड़े उन्हें संभाल रही थी)*
**बहू मीना :** अम्मा संभलो, संभलो अम्मा– लो हाथ पकड़ो अम्मा।
**दादी जी :** अरी, मुझे छोड़ बच्चों को देख।

**मीना (बहू)** : अम्मा, मैंने इनसे वादा किया था कि मैं आपका पूरा खयाल रखूंगी। बस आप मेरा हाथ पकड़ो अम्मा–पानी का बहाव बहुत तेज है–अम्मा हाथ दो–हाथ दो अम्मा।
**बच्चा (लड़का)** : मम्मी, पापा बचाओ.....बचाओ।
**नवविवाहित जोड़ा (रीना)** : ठीक है। *(बच्चे का हाथ पकड़ इसे बचाने में सफल हो जाती है)*

## (पांचवां दृश्य)

**सूत्रधार** : जब सैलाब थमा तो उस समय का दृश्य दिल दहला देने वाला था। ना जाने कितने लोगों के शव वहां क्षत– विक्षत् हालत में पड़े थे। चारों ओर मुसीबत की मार व बरबादी का मलबा बिखरा पड़ा था और जिन लोगों से अभी–अभी मेरा–हां उत्तराखण्ड का परिचय हुआ था, जो मेरे प्रांगण में हंस–खेल रहे थे, मैं उनके बारे में बहुत चिंतित था–उनका हाल जानने के लिए बेचैन था। तभी मैंने देखा–

**बेटा** बाबूजी को लेकर और मीना (बहू) अम्मा को बचाने में सफल हो गये थे और बाबूजी अम्मा बेटा और बहू बच्चों को तलाश कर रहे थे और चिन्ता में बार–बार आवाज लगा रहे थे।
अरुण अरुण सोनम सोनम कहां हो ?
तभी अरुण (बच्चा) मम्मी –मम्मी मैं यहां हूं।
*(मम्मी भाग कर बच्चे अरुण के पास जाती है)*
**अरुण** : मम्मी–मम्मी, मुझे उन आंटी ने जो मुंबई से आई थीं, जिनकी नई–नई शादी हुई थी, उन्होंने मेरा हाथ पकड़े रखा और मुझे पानी में बहने नहीं दिया। उन्होंने मुझे बचाया, उन्होंने मुझे बचाया। भगवान का लाख–लाख शुक्र है। मेरा बेटा ठीक है मां (मीना) : वो कहां है बेटा–वो आंटी कहां है।
**मां (मीना)** : वो कहां है बेटा– वो आंटी कहां है।
**सूत्रधार** : तभी मीना– नवविवाहिता जोड़े (पति) से टकराती हैं उन्हें काफी चोट लगी है– देखकर उन्हें पूछती है कि वे कैसे हैं।
**नवविहाहिता जोड़ा *(पति )*** : पानी का बहाव बहुत तेज था। मैं चट्टान पकड़े था, इसलिए बच गया पर मेरी पत्नी वह पानी में बह गई। पता नहीं किस हाल में होगी।
**मीना (बहू)** : भाई साहब, आप फिक्र न करें हम सब मिलकर उन्हें ढूंढते हैं।
**सूत्रधार** : और फिर सभी एक दूसरे को ढूढते हैं और फिर मीना अम्मा बाबूजी और बेटा एक–दूसरे से मिल जाते हैं। अरुण और नव विवाहिता जोड़ा (पति) भी एक–दूसरे से मिल जाते हैं। सभी को बहुत चोट लगी थी पर फिर भी वे अपनों की तलाश कर रहे थे।
**मीना *(पति से)*** : अजी सोनम का कहीं पता नहीं चल रहा।
**अम्मा–बाबूजी** : बेटा, सोनम –सोनम नहीं मिल रही। बेटा उसे देखो– सोनम को देखा।
**सोनम** : मम्मी–मम्मी, मैं यहां हूं। मैं ठीक हूं मम्मी।
**मीना (मां)** : सोनम मेरी बच्ची सोनम–हे भगवान तेरा लाख–लाख शुक्र है, मेरी बच्ची मिल गई।
**दादी जी** : बहू, सोनम मिल गई है। भोलेनाथ तूने हमारे परिवार को मिला दिया। शुक्र है भगवान आप का शुक्र है। आ बेटी आ, मेरे गले लग जा। आ अपनी दादी के गले लग जा।
**सोनम** : अम्मा, पता है मुझे पानी में बहने से किसने बचाया ?
**दादी जी** : किसने बेटी, भगवान ने!
**सोनम** : हामिद अंकल ने।
**दादीजी** : क्या कह रही है तू उस हामिद ने।

**सोनम :** हां अम्मा, उन्होंने मुझे पकड़े रखा और पानी में नहीं बहने दिया। उन अंकल को बहुत चोट लगी है। वो वहां बैठे हैं। वो यहां नहीं आ पा रहे। वो कहते हैं वो हमसे अलग हैं।

क्या वो हमसे अलग हैं–दादी वो हमसे अलग हैं क्या बताओ न दादी– हां तो अलग हैं हमसे तभी तो आप कह रहीं थी ना कि हमें उनके हाथ का खाना नहीं खाना चाहिए था। बताओ ना दादी वो हमसे कैसे अलग हैं ? दादी कैसे–कैसे दादी कैसे अलग हैं।

**दादी जी :** नहीं बेटी, वो हमसे बिल्कुल भी अलग नहीं हैं बिल्कुल भी नहीं। वो हमारी तरह इंसान हैं इंसान। मैंने आज ये ईश्वर के दरबार में ये बात समझ ली है कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। आ, हामिद आ मेरे पास आजा, गले लग जा। मुझे माफ कर दे।

**हामिद :** अम्मा–अम्मा, ये क्या कह रही हो अम्मा !

**दादी जी :** आ बेटा, मेरे गले लग जा, आज भोलेनाथ के दरबार में मुझे दो–दो बेटे मिल गये। मैं तो गदगद् हो गई।

**सूत्रधार** : तभी बेटे अरुण को नवविवाहिता जोंड़ा दिखाई देती है, जिसे बहुत चोट लगी है।

**अरुण :** आंटी आंटी पापा देखो आंटी पापा उन्होंने मुझे बचाया था– आंटी आंटी पर ये कुछ बोल क्यों नहीं रही पापा देखो पापा देखो।

**अरुण के पापा (बेटा) :** अरे इन्हें तो बहुत चोट लगी है। इधर आइए भाई साहब देखे इन्हें।

**नवविवाहिता जोड़ा (पति) :** उठो रीना–उठो–रीना बोलो रीना बोलो।

**नवविवाहिता जोड़ा (रीना) (पत्नी) :** मैं ठीक हूं पर आप मेरी चिन्ता छोड़ दो, अपना खयाल करें। मुझे लगता है मैं नहीं बचूंगी। आप अपने को देखो, अभी आपकी जिन्दगी शुरू ही हुई है। मेरी चिन्ता छोड़ दें। मेरा बायां हाथ और पांव पूरी तरह क्षत– विक्षत् हो चुके हैं। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें, अपने को बचाएं। सैलाब फिर से कभी भी आ सकता है। आप अपनी जान बचाएं।

**नवविवाहिता जोड़ा(पति) :** ये क्या कह रही हो रीना, हमने तो जीवन भर साथ निभाने की कसम खाई थी। एक–दूसरे के साथ अग्नि के सात फेरे लिए थे। ये क्या कर रही हो तुम !

**नवविवाहिता जोड़ा ( पत्नी रीना) :** नहीं आप मेरी चिन्ता छोड़ो। आप निकल जाओ यहां से, मैं आप पर बोझ नहीं बनना चाहती।

**नवविवाहिता जोड़ा(पति) :** अगर ये सब मेरे साथ हुआ होता तो क्या तुम मुझे बोझ समझ कर छोड़ देती।

**नवविवाहिता जोड़ा ( पत्नी रीना) :** ये क्या अशुभ बातें बोल रहे हो। मैं आपका साथ इस जन्म में तो क्या अपने अगले सातों जन्मों में भी आपका साथ छोड़ने के बारे में भी नहीं सोच सकती।

**नवविवाहिता जोड़ा(पति) :** तो फिर मुझसे साथ छोड़ने को क्यों कह रही हों। ये दोगलापन क्यों? अलग–अलग नियम हैं लड़कों और लड़कियों के लिए, पति और पत्नी के लिए। मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोडूंगा, मरते दम तक नहीं। हम नई पीढ़ी के युवा वर्ग को नई–विचार नई सोच लानी है। मैं तुम्हारा साथ नहीं छोडूंगा।

**सूत्रधार : (उत्तराखण्ड)** तो देखा आपने, कौन कहता है कि नई पीढ़ी पथ–भ्रष्ट हो गई है। इनकी सोच स्वार्थी है पर जो मैंने देखा मुझे तो इस नई पीढ़ी पर गर्व महसूस हुआ। मेरा मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया कि अगर नई पीढ़ी की सोच ऐसी है तो मैं इस सोच को सलाम करता हूं जहां नर–नारी को समान दर्जा दिया जाता है। एक–दूसरे को इज्जत व प्यार की दृष्टि से देखा जाता है।

तो देखा आपने इस मुश्किल की घड़ी में अपनों ने तो अपनों का साथ निभाया ही परन्तु जिन्हें हम पराया समझते रहे उन्होंने भी बुरे समय में अपनों से ज्यादा मदद की। मैंने तो कहीं भी राज्यवाद, साम्प्रदायिकता, धर्म , जाति, नफरत–द्वेष नहीं देखा। देखा तो केवल अपनापन। अजनबी लोग, जो मुश्किल से चंद ही घंटों से

एक–दूसरे को जानते थे, एक–दूसरे के साथ इस तरह जुड़ गये जैसे बरसों का साथ हो और उन्हें जोड़ने का बन्धन कौन सा था– मानवता का, इंसानियत का।

चंद मुठ्ठी भर लोग हमारे देश में राज्यवाद, साम्प्रदायिकता, धर्म–जाति के नाम पर जहर फैलाते हैं, हमें अलग करने की कोशिश करते है! वे ये भूल जाते हैं कि हमारी बुनियाद हमारी नींव इतनी कच्ची नहीं है कि जो ढह जाए। हमारी संस्कृति हमारी सभ्यता, हमारे रीति रिवाज ने हमें इस मुश्किल की घड़ी में टूटने नहीं दिया। देखना कितनी मजबूत है हमारी नींव। इस मजबूत नींव के कारण ही तो इतनी बरबादी देखने के बाद भी मैं खड़ा हो पा रहा हूं।

पर इस सैलाब में सभी लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे। बहुत से लोगों ने अपनो का साथ खो दिया । लाखों घर उजड़ गये। दर्द से बिलबिलाते और सब कुछ लुट जाने के सदमे में डूबे हुए मासूम लोगों को हमारी जरूरत है। हमारी छोटी पहल वहां जीवन को बहाल कर सकी है। आइए, हम सब मिलकर उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करें तो प्रस्तुत है श्रद्धांजलि।

आज दुख की घड़ी है साथियों
छलक रहे हैं आंखों से आंसू।

टूटा कहर कुदरत का तुम पर
पर मत घबराना मेरे साथियों।

आज दुख की घड़ी है साथियों
छलक रहे हैं आंखों से आंसू।

छूटे हैं आज अपने सारे
बहुत दूर चले गये हैं वो सारे।
आज दुख की घड़ी है साथियों
छलक रहे हैं आंखों से आंसू।

हम सब हैं साथ तुम्हारे
दुख–सुख के साथी हैं हम
क्योंकि भारतवासी हैं हम

आज दुख की घड़ी है साथियों
छलक रहे हैं आंखों से आंसू।

आओ मिलकर हाथ बढ़ायें
मिलकर नया उत्तराखण्ड बसायें।

**(पर्दा गिरता है)**

**मंजू बख्शी**
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, दिल्ली

## नरक का द्वार

### पात्र–परिचय

शैलेन्द्र : एक ड्राइवर एवं परिवार का मुखिया
पूजा : शैलेन्द्र की पत्नी
अक्षय : शैलेन्द्र का पुत्र
नूपुर : शैलेन्द्र की पुत्री
अम्माजी : शैलेन्द्र की मां
राहुल : अक्षय का मित्र
रोहित : अक्षय का मित्र

*(शैलेन्द्र का घर : इंसान जो बोता है उसे वही काटना पड़ता है। शैलेन्द्र एक बस चालक था। एक वाहन चालक को दिन और रात में सजग रहकर वाहन चलाना होता है। इस बात की दुहाई देकर वह शराब और मांस का सेवन खुलेआम करता है। शैलेन्द्र भी उन्हीं में से एक था। एक दिन शराब की बोतल लेकर वह घर आता है और दरवाजा खटखटाता है)*

**पूजा** : *(रसोई में रोटी सेंकते हुए आवाज लगाती है)* नूपुर देखना बेटा दरवाजे पर कौन है! शायद तुम्हारे पिताजी आ गये।

**नूपुर** : माँ! मैं पढ़ रही हूं। आप ही दरवाजा खोल दो ना। *(नूपुर को पढ़ाई का बहुत शौक था। कक्षा में हमेशा अव्वल*
*आती थी पर मां उसे हमेशा घर के कामों में लगा देती थी)*

**पूजा** : कैसी लड़की है ? दिन भर किताबों में डूबी रहती है। सारा काम मुझे ही करना पड़ता है। *(पूजा बड़बड़ाते हुए*
*दरवाजा खोलती है)* अरे ! आप आ गये।

**शैलेन्द्र** : क्यों ? नहीं आता क्या ?

*(झल्लाते हुए बोलता है। शैलेन्द्र लड़खडाते हुए कमरे के अन्दर आता है। जूते एक तरफ फेंक देता है और पलंग पर लेट जाता है। पूजा पीछे–पीछे कमरे में आती है। डरते–डरते पूछती है)*

**पूजा** : अक्षय के बापू खाना तैयार है, लगा दूं।

*(उत्तर का इंतजार किए बगैर वह रसोई में चली जाती है। खाना थाली में सजाकर ले आती है)* अक्षय के बापू
खाना खा लो ठंडा हो जायेगा। *(शैलेन्द्र उठकर खाने की मेज पर आकर बैठ जाता है। खाना देखते ही बिदक जाता है)*

**शैलेन्द्र** : ये खाना है ! तुम कुछ अच्छा नहीं बना सकती ?

**पूजा** : *(सहमते हुए बोलती है)* आज खा लो। कल आपकी पसन्द से खाना बना दूंगी।

**शैलेन्द्र** : कल। कल क्यों ? आज क्यों नहीं ? *(गुस्से से थाली फेंक देता है)* नहीं खाना मुझे घास–फूस। जानवर समझ
रखा है क्या ? जा–जाकर मेरे लिए मुर्गा बनाकर ला।

*(नूपुर से रहा नहीं जाता तो उठकर आती है। खाना थाली में उठाने लगती है)*

**नूपुर** : पिताजी, आप खाकर तो देखते ! मां ने आज खाना बहुत स्वादिष्ट बनाया है। आपको पता है मास्टरजी कहते हैं हमें खाना फेंकना नहीं चाहिए। इससे मां अन्नपूर्णा का अपमान होता है।
**शैलेन्द्र** : *(गुस्से से)* अब तू मुझे सीख देगी कि मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं ?
**पूजा** : *(बेटी को चुप कराते हुए)* नूपुर जा थाली रसोई में रख दे। पिताजी से बहस मत कर।
**शैलेन्द्र** : हां–हां ! समझ ले। इसे तूने ही सिर चढ़ा रखा है।
**नूपुर** : पिताजी, मां को मत डांटो। यह तो मुझे मास्टर जी ने बताया था। *(नूपुर डरते हुए आगे समझाती है)* पिताजी मांस और मदिरा तो नरक के द्वार हैं जो हमारी खुशियों को निगल जाते हैं। मांस खाने से हमारा पाचन तंत्र बिगड़ जाता है और शराब ! शराब पहले आदमी पीता है फिर धीरे–धीरे शराब उसे पी जाती है।
**शैलेन्द्र** : अच्छा ? क्या तू मेरी अम्मा है जो मुझे समझाने चली है *(पूजा से)* मेरे सामने से ले जा इसे। सारा नशा उतार दिया इसने। और हां, एक गिलास ला दे अरे हां, मेरे लिए मुर्गा बना कर जल्दी ले आ। *(शैलेन्द्र फिर से बोतल खोल लेता है, पूजा नूपुर को खींचती हुई रसोई में ले जाती है)*
**पूजा** : *(चुप कराते हुए)* जा देख अक्षय कहां है। अक्षय से बोल बाजार से मुर्गा ले आये। नहीं तो आज घर में महाभारत
तय है।
**नूपुर** : मां आपने ही तो भइया को बाजार भेजा था। प्रसाद लाने के लिए, याद नहीं आपको।
**पूजा** : *(उसे कुछ याद आते ही)* अरे हां ! मैं तो भूल ही गई थी। *(पूजा कमरे में जाती है और पति से कहती है)* सुनो जी, आज तो एकादश है। आज अम्मा जी का व्रत है। मुर्गा कल बना दूंगी।
**शैलेन्द्र** : *(गुस्से से)* एकादशी अम्मा की है। मेरी या तेरी नहीं। जा जाकर मुर्गा पका कर ला। बहाने बनाना बंद कर दे।
*(शैलेन्द्र को तो जैसे धुन सवार थी)*
**पूजा** : *(रसोई में आकर नूपुर से कहती है)* जा बेटा, अक्षय को फोन करके बोल दे आते हुए मुर्गा लेता आये।
**नूपुर** : ठीक है मां। *(नूपुर अक्षय को फोन करने लगती है तभी....)*
**अम्मा जी** : *(पूजा के कमरे से आवाज लगाती है)* बहू अक्षय प्रसाद लेकर आया या नहीं ?
*(तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज होती है। नूपुर दौडकर दरवाजा खोलती है)*
**नूपुर** : अरे भइया। आप आ गये ? *(किन्तु दरवाजा खोलने के बाद उसकी आंखों के सामने जो दृश्य था उसे देखकर नूपुर के होश उड़ जाते है। रोहित और राहुल ने अक्षय को सहरा दे रखा था। अक्षय सीधा खड़ा भी नहीं हो पा रहा था।)*
**पूजा** : क्या हुआ नूपुर। *(रसोई से आवाज लगाती है)*
**नूपुर** : (जैसे किसी ने उसे झकझोर दिया हो) मां देखो भइया को क्या हुआ।
**पूजा** : *(दौड़ती हुई आती है)* अरे यह क्या!
*(उसकी आंखों को विश्वास नहीं होता)* रोहित कहीं किसी ने इसे शराब तो नहीं पिला दी। अरे बताओ तो इसे क्या हुआ ?
**रोहित** : अरे चाची जी, हमने बहुत मना किया पर अक्षय नहीं माना। बोला मेरे पिताजी पीते हैं मैं क्यों नहीं पी सकता।
**राहुल** : हां चाची जी, इसने तो पूरी बोतल पी ली।
**पूजा** : *(अपना सिर पकड़ लेती है। उसे इसी का डर था। जब जवान बेटे के सामने बाप रोज शराब पीता हो, गाली गलौज करता हो तो बेटे पर इसका क्या असर होगा राहुल, रोहित इसे अन्दर ले आओ। कहकर पूजा*

*अन्दर आ जाती है राहुल–रोहित सहारा देकर अक्षय को अन्दर लाकर पलंग पर लिटा देते हैं। अक्षय को तो होश ही नहीं था)*

**पूजा** : *(पति से शिकायत करते हुए)* कितनी बार कहा आप बच्चों के सामने शराब न पीओ। देखा आज वही हुआ जिसका डर था।

**शैलेन्द्र** : *(गुस्से में बोतल छोड़कर उठ जाता है)* जुबान लड़ाती है ? *(हंसता है)* अरे आज तो खुशी का दिन है । आज मेरा बेटा जवान हो गया है। अब हम दोनों साथ बैठकर दावत करेंगे।

**नूपुर** : पिताजी, यह आप क्या बोल रहे हैं ? आपको तो भइया पर गुस्सा करना चाहिए, उसे समझाना चाहिए।

**शैलेन्द्र** : तू चुप कर । मां–बेटी जब देखो भाषण देती रहती हैं।

**नूपुर** : पिताजी आप गलत कर रहे हैं।

**शैलेन्द्र** : *(गुस्से से पागल हो जाता है)* चुपकर नहीं तो अच्छा नहीं होगा।

**पूजा** : *(नूपुर को शैलेन्द्र के सामने से हटाते हुए शैलेन्द्र से कहती है)* सही तो कह रही है बेटी। आपने यदि बच्चों के सामने शराब नहीं पी होती तो आज यह नहीं होता।

**शैलेन्द्र** : मैं गलत हूं। तू क्या कहना चाहती है। *(गुस्से से बोलता है)*

**पूजा** : मैं तो बस यही कह रही थी कि शराब छोड़ दो नहीं तो बेटा हाथ से निकल जायेगा। हम जो बोते हैं, हमें वही काटना पड़ता है।

**शैलेन्द्र** : *(शैलेन्द्र का गुस्सा बांध तोड़ देता है)* अब तू भी जुबान चलाने लगी ? *(गुस्से से पास में रखा डण्डा उठा लेता है और पूजा को पीटना शुरू कर देता है। नूपुर मां को बचाने की कोशिश करती है लेकिन शैलेन्द्र के गुस्से ने तो जैसे अनर्थ करने की ठान ली थी। पूजा लहूलुहान हो जाती है। तभी चीख–पुकार सुनकर अम्माजी भागती हुई आती है और एक जोरदार तमाचा शैलेन्द्र के गाल पर मारती है और हाथ से डण्डा छीन लेती है)*

**अम्माजी** : नालायक, क्या मार डालेगा इसे ? तेरी तो मति मारी गई है। इस शराब ने तो बेड़ा–गरक कर दिया है। जब तूने पहली बार पी थी मुझे उसी समय रोकना चाहिए था तो आज यह नौबत न आई होती।

**शैलेन्द्र** : अम्मा, आप यह क्या कह रही हैं ?

**अम्माजी** : मैं सही कह रही हूं। तेरे बापू ने अपनी शराब की लत के कारण मेरी और अपनी जिन्दगी बर्बाद कर दी। तड़प–तड़प कर जान निकली थी उनकी। तूने भी अपने बाप से यही सीखा। देख क्या हालत कर दी तूने अपनी पत्नी की। देख तेरा बेटा भी तेरे नक्शे–कदम पर चल पड़ा है। बेटा नूपुर सही कर रही है। यह शराब तो नरक का द्वार है जो एक बार खुल जाता है तो जिन्दिगियां बर्बाद हो जाती हैं।

**शैलेन्द्र** : *(जैसे अम्मा ने गहरे नशे के अंधेरे से उजाले की किरण दिखा दी हो)* अम्मा, तुम ठीक कर रही हो मैं तो नशे में जानवर बन गया। *(शैलेन्द्र पूजा को उठाता है। पूजा के बहते खून को कपड़े से पोंछता है। नूपुर मरहम–पट्टी ले आती है। शैलेन्द्र मरहम लगाता है उन घावों पर जो उसने पूजा के शरीर पर लगाये, उन घावों पर भी जो उसने पूजा के मन पर लगाये)* पूजा, मुझे माफ कर दो। मैं वादा करता हूं अब आगे से मैं शराब को हाथ तक नहीं लगाऊंगा। अब मैं अपने बच्चों को इस नरक में नहीं जाने दूंगा। *(अम्मा से)* अम्मा, मैं आपसे भी वादा करता हूं कि अब ऐसा नहीं होगा। अब मैं शराब क्या मांस भी नहीं खाऊंगा *(तभी अक्षय अपनी आंखें खोल पर उठ बैठता है)*

**अक्षय** : वाह ! क्या बात है। पिताजी, अब हमारा घर भी स्वर्ग जैसा सुन्दर होगा। *(नूपुर से)* नूपुर तुमने क्या खूब सुझाव दिया! पर इन सब में मां को चोट लग गई।

**पूजा** : कोई बात नहीं बच्चों। इस खुशी के बदले में तो मैं अपनी जान भी दे सकती थी। *(तीनों हंस पड़ते हैं)*

**शैलेन्द्र :** अच्छा तो यह सब नाटक तुम्हारा रचा हुआ था। *(अक्षय और नूपुर के कान पकड़ता है)* शैतान ! तुम्हारे नाटक ने तो हमारी जिंदगी बदल दी। *(कहते हैं जब जागो तभी सवेरा होता है। शैलेन्द्र के बच्चों ने और अम्माजी के झन्नाटेदार थप्पड़ ने उसकी आंखें खोल दी थीं। उसका व्यवहार बदल गया। अब वह अपने परिवार के प्यार के नशे में डूब गया। उसका घर सुख का सागर बन गया)*

**(पर्दा गिरता है)**

कृष्णा बनर्जी
टैगोर विद्या निकेतन,
अम्बाबाड़ी, जयपुर, राजस्थान

## इंसानियत

### पात्र–परिचय

राहुल
यश
मां
पापा
उत्सव
प्रिंसिपल

### (पहला दृश्य)

*(पर्दा खुलने पर जन्मदिवस समारोह का दृश्य दिखाई देता है)*
**सभी :** हैप्पी बर्थडे टू यू ! हैप्पी बर्थडे टू यू ! हैप्पी बर्थडे डियर राहुल, हैप्पी बर्थडे टू यू !
*(सभी तालियां बजाते हैं। राहुल अपनी मम्मी–पापा को केक खिलाता है और अपने मित्र को भी.....)*
**राहुल :** यश.....
**यश :** हैप्पी बर्थडे राहुल!
**राहुल :** थैंक यू।
**यश :** राहुल तुम्हारा बर्थडे कितनी अच्छी तरह से मनाया जाता है।
**राहुल :** क्यों तुम अपना बर्थडे नहीं सेलिब्रेट करते ?
**यश :** नहीं ! मेरा बर्थडे कौन सेलिब्रेट करेगा ? पापा नहीं है.....मम्मी चार घरों का काम करती है, शाम को अगरबत्तियां बनाने का काम करती है.....तो मेरा बर्थडे कौन सेलिब्रेट करेगा ?
**राहुल :** अगर तुम्हारा बर्थडे कोई नहीं सेलिब्रेट करेगा तो तुम्हारा बर्थडे मैं सेलिब्रेट करूंगा।
**यश :** सच!
**राहुल :** यस

### (दूसरा दृश्य)

(यश का घर)
**यश :** मां मुझे बहुत भूख लगी है।
**मां :** अभी खाना लगाती हूं।
**यश :** मां राहुल भी मेरे साथ खाना खायेगा।
**मम्मी :** राहुल ? पर बेटा हमारे यहां राहुल खाना खायेगा ? हम गरीब.....
**राहुल :** हां, मां मुझे भी खाना दो.....जोरों की भूख लगी है।
**दोनों :** खाना.....खाना.....खाना।

*(दृश्य बदलता है राहुल का घर)*

**मम्मी :** अरे वाह! पढ़ाई।
**राहुल :** मम्मी एक्जाम्स सर पर है ना.....

**यश** : देखना मां इस बार मैं और राहुल अच्छे प्रतिशत से उत्तीर्ण होंगे।
**मम्मी** : आल द बेस्ट।
**दोंनो** : थैंकयू।

*(दृश्य बदलता है)*

**यश** : ऐ..... मुझे 90% मिले!
**राहुल** : ऐ.....मुझे 92 पर्सेंट!
**यश** : वाह! राहुल मुझसे 2% ज्यादा ! वेरी गुड !
**राहुल** : कोई बात नहीं नेक्सट टाइम तुम्हें 92% मिलेंगे और मुझे 90%*(दोनों हंसते हैं)*

## (तीसरा दृश्य)

*(राहुल का घर। मम्मी–पापा बैठे हैं। राहुल स्कूल से आता है)*

**पापा** : राहुल बेटा स्कूल से आ गये।
**राहुल** :.....
**पापा** : क्या हुआ बेटा ?
**मम्मी** : राहुल बोलो बेटा क्या हुआ।
**राहुल** : मम्मी वो यश.....
**पापा** : क्या हुआ यश को....बोलो बेटा.....क्या हुआ ?
**राहुल** : पापा यश ट्रेन के नीचे आकर.....
*(चिल्लाकर रोने लगता है। मम्मी–पापा सदमे से बैठ जाते हैं। अंधेरा होता है)*

## (चौथा दृश्य)

*(राहुल का घर, राहुल के पापा आते हैं)*

**मम्मी** : वो...*(तभी राहुल आता है)*
**राहुल** : हल्लो पापा..... हां मम्मी !
**पापा** : राहुल इतनी देर तक कहां थे ?
**राहुल** : पापा वो हमारे स्कूल में ड्रामा प्रैक्टिस चल रही है ना ?
**पापा** : ड्रामा प्रैक्टीस् !
**राहुल** : हां.....मैंने सर से कहा मुझे जल्दी छोड़िये....पर सर मानते ही नहीं.....वह *(टालता है)* मम्मी मुझे भूख लगी है। प्लीज खाना दो ना।
**मम्मी** : राहुल.....*(राहुल चला जाता है)*
**पापा** : आदिती, पिछले कुछ दिनों से राहुल में मुझे कुछ फर्क नजर आ रहा है। उसके फ्रेंडस से पूछना होगा। कौन है उसका बेस्ट फ्रेन्ड ?
**मम्मी** : उत्सव.....

## (तीसरा दृश्य)

*(उत्सव और राहुल के पापा दिखाई देते हैं)*

**उत्सव** : हैलो अंकल !

**पापा** : उत्सव, मुझे बताओ राहुल आजकल लेट क्यों होता है ?

**उत्सव** : मुझे नहीं पता अंकल।

**पापा** : उत्सव, सीधे–सीधे बताओ वरना तुम्हारे मम्मी–पापा से तुम्हारी शिकायत करूंगा।

**उत्सव** : पर उसे मत कहना अंकल कि मैंने आपको बताया!

**पापा** : ठीक है, बोलो।

**उत्सव** : उत्सव बताता है, *(ये सेम म्युजिक पर होता है। आवाज सुनाई नहीं देती है)*

**उत्सव** : स्कूल के बगल में झोपड़ पट्टी है ना, वहां जाता है वो आजकल। मैं चलता हूं अंकल, पर उसे मत बताइयेगा प्लीज।

**मम्मी** : क्या ? क्या कहा उत्सव ने ?

**पापा** : वो आजकल स्कूल से लगकर जो झोपड़पट्टी है वहां पे जाता है। आदिती हमें उसके स्कूल में जाना होगा। प्रिंसिपल साहब को मिलना होगा।

*(दृश्य बदलता है। स्कूल का दृश्य)*

**प्रिंसीपल** : आइये.....बैठिये।

**पापा** : वह राहुल आजकल घर देर से आता है।

**मम्मी** : पर उसने कहा था, मैं ड्रामा में.....

**प्रिंसीपल** : यहां की हर एक्टीविटी के बारे में मुझे पता होता है। देखिये उस पर ध्यान दीजिये वरना एक होनहार बच्चा हाथ से निकल जोयगा।

*(दृश्य बदलता है)*

**पापा** : आदिती, अब क्या करें इस बच्चे का ! रुको उसका कमरा भी चेक करना होगा। *(कुछ पैसे लेकर लौटते हैं)*

**पापा** : आदिती ये क्या है ? इतने सारे पैसे राहुल के पास कहां से आए ?

**मम्मी** : मुझे नहीं पता.....

**पापा** : आने दो, आने दो उसे....आज मैं उसे नहीं छोडूंगा। *(राहुल आता है)*

**राहुल** : हैलो पापा..... हाय.....मम्मी।

**पापा** : अरे वाह! राहुल आ गये।

**राहुल** : हां पापा।

**पापा** : कैसे चल रही है तुम्हारी ड्रामा प्रैक्टिस् ?

**राहुल** : बहुत अच्छी पापा।

**पापा** : आदिती जरा खाना लगाना तो बेटा भूखा होगा !

**राहुल** : हां पापा...बहुत भूख लगी है।

*(पापा राहुल को चांटा मारते हैं। राहुल गिर जाता है)*

**पापा** : भूख लगी है हां ? भूख लगी है ? झूठ बोलते हो....झूठ बोलते हो ! ये पैसे कहां से आये तुम्हारे पास ? बोलो बताओ राहुल! *(मारते हैं)*

**राहुल** : *(रोते हुए)* पापा पहले मेरी बात तो सुनो.....मैंने कोई बुरा काम नहीं किया ! उस दिन मैं स्कूल जा रहा था...मैं लेट हो गया था। इसलिए मैं चलती ट्रेन के पीछे भागा ! यश ट्रेन में ही था। मुझे चलती ट्रेन पकड़ने के लिए मना कर रहा था!

पर मैंने उसकी नहीं सुनी ! और ट्रेन पकड़ने के लिए दौड़ा। यश ने मुझे हाथ दिया, पर जब उसने मुझे ट्रेन में खींचा तब बैलेंस बिगड़ जाने की वजह से वह ट्रेन से गिर गया। यश मेरी वजय से मरा पापा.....यश, मेरी वजह से मर गया। उसकी मम्मी का वो इकलौता सहारा था। इसलिए मैं रोज स्कूल छूटने से बाद उसके घर जाता हूं और उसकी मम्मी को अगरबत्ती बनाने के काम में मदद करता हूं। यश ने मेरे लिए....अपनी जान दे दी पापा। क्या इन्सानियत के नाते मैं इतना भी नहीं कर सकता ?

*(राहुल रोता है। पापा–मम्मी उसे उठाकर गले लगाते हैं)*

**पापा** : आई एम प्राउड ऑफ यू माई बॉय,
आई एम प्राउड ऑफ यू.....

**(पर्दा गिरता है)**

**प्रमोद शेलर**
चिल्ड्रन्स अकादमी
बी.एल मुरारका मार्ग, बचानी नगर,
मलाड (पूर्व) मुम्बई, महाराष्ट्र